CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तीसरा संस्करण रु० ७-५०

संसार की लिपियां

अ प्रा ची न
वा १५२
ची
न लि पि यां

417.
रा स II
3881

उनका जन्म और विकास

पंडित ईश्वर चन्द्र राही

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

STATE MUSEUM, LUCKNOW
LIBRARY
Acc. No. 3881
Book No. 417.
रा स II

168;

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

3881

राज्य संग्रहालय पुस्तकालय, लखनऊ
प्राप्ति संख्या 3881
प्राप्ति तिथि 29.12.69
State Museum, Library, Lko.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

राज्य संग्रहालय पुस्तकालय, लखनऊ
क्रमांक 3881
प्राप्ति ति. 29.12.69
State Museum, Library, Lko.

संसार की लिपियाँ

उनका
जन्म और विकास

१५२
लिपियाँ

पं० ईश्वर चन्द्र 'राही' —

पहला संस्करण—अंग्रेजी भाषा—नवम्बर १९६३ .... १००० प्रतियाँ
दूसरा संस्करण—अंग्रेजी भाषा—अक्टूबर १९६५ .... १००० ,,
तीसरा संस्करण—हिन्दी भाषा—नवम्बर १९६६ .... १००० ,,

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सर्वाधिकार सुरक्षित

मुद्रक :
१—नामी लिथो प्रेस, लखनऊ।
२—विरक्त प्रिंटिंग प्रेस, अयोध्या।

प्रकाशक :
श्री लालजी भाई सत्य स्नेही
सत्यार,
अयोध्या (भारत)।

State Museum Library Lucknow
417.
स स[illegible]
3881

रु० ७—५०

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पत्र (Plates) व विषय सूची

पहली संख्या पंक्ति पत्रों (Plates) की संख्या है। लिपियों के नामों के बाईं ओर के अंक पत्रों में दिये गये खानों (Columns) के हैं। लिपियों के नामों के दाईं ओर दिये गये अंक पृष्ठ संख्या है जिस पर उस लिपि का पूर्ण विवरण दिया गया है।

पत्र सं०	विवरण
पहला.	भ्रूण लिपि (१४ प्रकार की)-१।
दूसरा.	मेसोपोटामिया की ६००० वर्ष पुरानी चित्रात्मक लिपियां--५।
तीसरा.	चित्रों से कीलाक्षर शब्दों की उत्पत्ति--६।
चौथा.	पर्शियन कीलाक्षरों की वर्णमाला--७।
पांचवां.	युगारिटिक ,, ,, ,, --७।
छठवां.	बेबीलॉनियन व पर्शियन कीलाक्षर--८।
सातवां.	मिश्र के संकेतात्मक शब्द व अंक--८।
आठवां.	१. होरोग्लिफ्स--८, २. हिरेटिक--८, ३. डिमॉटिक--८, ४. कॉप्टिक -६. ५. अरबी--६।
नवां.	मिश्र की चित्रात्मक वर्णमाला--८।
दसवां.	१. हिरेटिक--८, २. कॉप्टिक--६, ३. खरोष्ठी--१२।
११ वां.	१. अशोक के पूर्व की ब्राह्मी--१४, २. ब्राह्मी व सिन्धु-घाटी के अक्षरों की तुलना--१४।
१२ ,,	सेमेटिक लिपियों से ब्राह्मी का सम्बन्ध--१५।
१३ ,,	१. गुप्त--१५, २. कुटिल--१५. ३. शारदा--१६, ४. टाकरी--१६।
१४ ,,	१. ब्राह्मी--१३ २. देव नागरी--१६, ३. देव ना०--१६, ४. देव ना०--१६।
१५ ,,	१. ब्राह्मी--१३, २. बंगला--१६।
१६ ,,	१. पश्चिमी--१७, २. मध्य प्रदेशी--१७, ३. कलिंग--१७, ४. उड़िया--१८।
१७ ,,	तेलुगू का विकास।

१८ वां १. ब्राह्मी-१३, २. कनड़ी-१७।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

१९ ,, १. ,, -१३, २. ग्रन्थ-१७।

२० ,, १. ,, -१३, २. तामिल-१८।

२१ ,, १. कैथी-१८, २. मैथिल-१८, ३. गुजराती-१८, ४. मौड़ी-१८।

२२ ,, १. मलयालम-१९, २. तुलू-१९, ३. गुरमुखी-१९।

२३ ,, १. सिन्धी १९, २. वनियाका-१९ ३. उर्दू-१९।

२४ ,, १. पशुपति मुद्रा (Seal)-२२, २. जोखा की मुद्रा-२२,
३. मोहनजोदड़ो की मुद्रा-२३।

२५ ,, सिन्धु-घाटी-लिपि वर्णमाला (जी० आर० हन्टर द्वारा) २३।

२६ ,, १. ,, ,, ,, व ईस्टर-द्वीप लिपि की तुलना-२३,
२. ,, ,, ,, के कुछ अक्षर (वालवल्कर द्वारा)-२५,
३. ,, ,, ,, ,, ,, ,, (प्राण नाथ द्वारा)-२५।

२७ ,, १. तान्त्रिक चिन्ह-२३, २. सि० घा० लि० (स्वामी शंकरानन्द द्वारा)-२३।

२८ ,, सिन्धु-घाटी-लिपि की वर्णमाला (सुधासुकुमार रे द्वारा)-२४।

२९ ,, ,, ,, ,, ,, ,, (डा० फतेहसिंह द्वारा)-२५।

३० ,, ,, ,, ,, के अक्षरों का जोड़ ,, ,,

३१ ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,,

३२ ,, ऊपर चीनी त्रिपुण्ड-२७, मध्य चीन व मिश्र के चित्रात्मक व घसीट शब्दों की तुलना-२७, नीचे इंगलिशमैन-२८।

३३ ,, १. चीनी लिपि में पशुओं के नाम-२८, २. प्राचीन चिन्हों द्वारा वर्तमान चीनी लिपि का विकास-२८। (ऊपर की पंक्ति में वस्तुओं के नाम हैं, बाईं ओर के कालम में ऊपर से नीचे काल, आदिकाल से वर्तमान तक, दिया गया है तथा उन्हीं वस्तुओं की लिपि का विकास दिया गया है)

३४ ,, १. कैशू (चीन की)-२८, २. कताकाना (जापान की)-२९।

३५ ,, १. चीनी शब्द-२७, २. चीनी लिपि द्वारा कताकाना व हीरा गाना के अक्षरों की उत्पत्ति-२९।

३६ ,, १. जापानी नये पुराने शब्द उच्चारण व अर्थ सहित-२९,
२. चीनी व जापानी (स्ट्रोक्स = Strokes द्वारा)-३०,
३. मांचू अक्षर-३०।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

३७-३८ वां १. मिश्र के हीरोग्लिफ्स-- २. सिनायटिक चित्र, ३. फोनिशियन-३०,
४. युनानी-३६, ५. एट्रस्कन-३७, ६. रोमन--३६।

३६ वां हिटायट की चित्रात्मक वर्णमाला-३१।

४० ,, १. अरमायक--३४, २. प्राचीन हेब्रू-३२, ३. वर्तमान हेब्रू--३२। सीधी ओर तिब्बत--मंगोलिया के अंक दिये हैं।

४१ ,, विविध लिपिओं के कुछ अक्षर। ऊपर से नीचे : हेब्रू-३२, चैल्डियन-३२, इथीयोपिन-३३, नबातियान-३५, अरबी-३५ गोथिक-३६, जॉर्जियन-३६।

४२ ,, १. मोबाइट--३३ २. सैबियन--३३, ३. सिडॉनियन--३४, ४. सामारिटन-३२।

४३ ,, १. सीरियन-३३, २. इथीयोपिक-३३, ३. जेन्ड-३४।

४४ ,, अरबी का विकास--३५।

४५ ,, १. माइसीनियन--३६ २. क्रीत की लिपि--३६, ३. सायप्रस की वर्णमाला--३६।

४६ ,, १. बार्डिक--३७, २. रूनिक-३७, ३. रूना (प्राचीन जर्मन)--३८, ४. हंगेरियन--३६। नीचे युनानी (ग्रीक) व रोमन।

४७ ,, १. केल्टिक-३७, २. ईस्टर द्वीप--४५।

४८ ,, १. ग्लैगोलिथिक ३८, २. सीरिलिक-३८, ३. रूस की लिपि--४०, ४. सर्वियन-४०।

४९ ,, १. जॉर्जियन--३६, २. आरमेनियन-३६, ३. क्रीत की लिपि-३६।

५० ,, १. मगोल-४०, २. तिब्बत की लिपि-४०।

५१ ,, १. बर्मा की लिपि-४१ २. थाई-४१, ३. कम्बोज--४०।

५२ ,, १. जावा की पुरानी--४१, २. जावा की नवीन-४२, ३. सुमात्रा की लिपि--४२। नीचे फोनेशियन-३०।

५३ ,, १. बाली--४२, २. बगमेसी--४२, ३. सिन्हाली-४२।

५४ ,, ऐजटेक लिपि--४३।

५५ ,, १. एस्कीमो वर्णमाला-४३, २. बर्मा, थाई, कम्बोज के अंक।

५६ ,, १. मो-सो--४१, २. मिन्हासा ४२, ३. एनसिब्दी--४४। नीचे-सिनाई की लिपि--६।

५७ ,, १. माईयन हिरोग्लिफ्स-४३, २. क्री-४३, ३. चिरोकी-४३। नीचे माईयन अंक दिये हैं।

५८ वां १. बामुन--४४, २. वाइ--४४, ३. सोमाली--४४।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

५६ ,, अंग्रेज़ी हिन्दी क़ल–४५।

६० ,, आशु लिपि के कुछ अक्षर--४६. नीचे खत्ते कूफी- ३५।

६१ ,, १. पिक्टो--४६, २. वाहन--चालक लिपि--४६,

३. तेलुगू तामिल मलयालम के अंक।

६२ ,, भारती (स्वामी सत्य भक्त द्वारा)--४६।

६३ ,, १. भारती (श्री लाल द्वारा)--४६, २. सुगम नागरी--४६।

६४ ,, भारती प्राचीन व प्रचलित अंक--४७।

शुद्धि पत्र

पृष्ठ	पंक्ति संख्या	विवरण
१४	ऊपर से आठवीं	१५ की बजाय १४।
३३	नीचे से ग्यारहवीं	ई० पू० की ६ वीं शताब्दी।
३४	ऊपर से आठवीं	Artaxerxes होना चाहिये।
३४	नीचे से छठवीं	ई० पू० की ८ वीं शताब्दी।
३५	नीचे से पहली	२०० की बजाय २००० वर्ष।

लेखक का जीवनोद्देश्य

अज्ञानता को घटाना
एकता को बढ़ाना

मानव कल्याणार्थ सामाजिक पंचशील के पांच सूत्र लेखक ने संकलित किये हैं।

१. प्रेम मेरा ईश्वर है।
२. मानवता मेरा धर्म है।
३. मानव सेवा मेरी ईशोपासना है।
४. मनुष्य मेरी जाति है।
५. विश्व मेरा देश है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

भूमिका

यह पुस्तक इस बात का परिचय देगी कि संसार में जहाँ जहाँ सभ्यता का जन्म हुआ वहाँ वहाँ लिपि का जन्म किस प्रकार हुआ। कुछ भाषा-विज्ञान वेत्ताओं को छोड़ कर सभी शिक्षित व अशिक्षित उस ज्ञान से अनभिज्ञ हैं कि संसार की लिपियों का जन्म किस प्रकार हुआ। इस विषय पर अधिकतर पुस्तकें इतनी मूल्य की हैं और इतनी तेकनीकी हैं कि साधारण शिक्षित मनुष्य न उनको खरीद सकता है और न उनको समझ सकता है। इस के अतिरिक्त इस विषय को भाषा-विज्ञान के विद्यार्थियों के लिये ही एक विशेष विषय समझा जाता है।

मैंने इस पुस्तक में संसार की लगभग १५० प्राचीन व अर्वाचीन लिपियां दी हैं तथा उनके जन्म व विकास के श्रोत भी दिये हैं ताकि शिक्षित वर्ग, जो समाज के हर क्षेत्र के संचालन की बागडोर अपने हाथ में लिये है और जिसकी गलत धारणाओं और मान्यताओं के कारण सारे समाज व देश को बड़ी हानि पहुँच सकती है और पहुंच रही है, अपनी कट्टर व निराधार धारणाओं को, जो उसके मस्तिष्क में गहरी जड़ पकड़ गई हैं, इस ज्ञान से मिटा सके। मुझे पूर्ण आशा है कि यह पुस्तक सब के ज्ञान में वृद्धि करेगी, अज्ञान के अंधेरे को दूर करेगी और विश्व की मानव जाति में एकत्व की भावना उत्पन्न करेगी। कट्टर राष्ट्रवादियों का यह विचार कि अमुक लिपि या भाषा हमारी है, निर्मूल है, क्यों कि संसार की कोई भी चीज, जिसका मनुष्य उपभोग कर रहा है, किसी एक जाति या देश की नहीं है अपितु मानव जाति के संघर्ष के फल स्वरूप, चाहे वह संसार के किसी कोने में भी हुआ हो, हम तक पहुंची है। इस कारण 'हमारी' शब्द का प्रयोग न किया जाकर 'मानव' शब्द का प्रयोग किया जाय, जैसे अमुक चीज़ हमारी नहीं सारे मानव-जाति की है। ऐसी भावना कट्टर-राष्ट्रीयता कम करके अंतर्राष्ट्रीयता बढ़ायेगी जिसमें मानव की भावी सन्तान की सुख शान्ति निहित है।

मैं डा० मोहम्मद अब्दुल वहीद, निदेशक, पुरातन विभाग, हैद्राबाद, आन्ध्र सरकार (Director of Archaeology, Govt. of Andhra Pradesh, Hyderabad) का हार्दिक आभारी हूं, जिन्होंने मेरे पहले और दूसरे संस्करणों

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

के लेखन व प्रकाशन में तथा पुस्तक के सम्पादन कार्य में अत्यधिक सस्नेह सहयोग दिया। दूसरे मैं डा० फतेह सिंह, निदेशक, राजस्थान प्राचीन विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर (Director, Rajasthan Oriental Research Institute, Jodhpur), का बहुत आभारी हूं जिन्होंने सिन्धु-घाटी-लिपियों के अध्ययन में बड़ा सस्नेह सहयोग दिया।

इसके अतिरिक्त मैं प्रो० वी० एस० वाकन्कर, पुरातन विभाग, विक्रम विश्व विद्यालय, उज्जैन का और केन्द्रीय स्टेट लायब्रेरी हैद्राबाद तथा नेशनल म्यूजियम लायब्रेरी नई देहली के लायब्रेरियनों का तथा सारे गूढ़ाक्षर-रहस्योद्घाटन-कर्ताओं का व पुरातन-विज्ञान-वेत्ताओं का आभारी हूं जिनकी कृतियों के आधार पर (उनके नाम और कृतियाँ इस पुस्तक के अन्त में Bibliography में दिये हैं) मैं यह पुस्तक पूरी कर सका। अन्त में मैं नामी लिथो प्रेस, लखनऊ, विरक्त प्रिंटिंग प्रेस, अयोध्या तथा उन सब लोगों का आभारी हूँ, जिन्होंने इस पुस्तक के लेखन, मुद्रण व प्रकाशन में सहयोग दिया है।

अयोध्या (उ० प्र०)
१ दिसम्बर १९६९

ईश्वर चन्द्र 'राही'

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

परिचय

पुरातन इतिहासकारों के अनुसार मनुष्य इस संसार में लगभग दस लाख वर्ष पहले आया। सम्भवतः उसका पहला वैज्ञानिक आविष्कार गोल पहिया था और वर्तमान चन्द्रलोक में जाने वाला आन्तरिक्ष यान।

किसी को भी कोई अमुक तिथि, कि कब भाषा या लिपि का जन्म हुआ, ज्ञात नहीं। भाषा या लिपि की उत्पत्ति व विकास सम्भवतः प्राकृतिक शक्तियों की ध्वनियों से, पशु व पक्षियों की ध्वनियों से, वन-पशुओं के भय से, जीवन के संघर्ष से, जातियों के झगड़ों से और भिन्न-भिन्न मनुष्यों के भिन्न-भिन्न विश्वासों तथा रहन सहन के तरीकों से हुई होगी। भाषा का जन्म परिचित ध्वनियों के अनुकरण से और लिपि का जन्म परिचित वस्तुओं की नकल से हुआ। लिपि की उत्पत्ति के निम्नलिखित चार सूत्राधार माने जाते हैं :—

१—चित्रात्मक व मूर्ति-पूजनात्मक लिपि
(Pictographic or Iconographic Writing):

२—संकेतात्मक (चित्रों द्वारा विचारों को व्यक्त करना) लिपि
(Ideographic Writing):

३—ध्वनि-आत्मक (चित्रों द्वारा ध्वनि को उत्पन्न करना) लिपिः
(Phonetic Writing):

४—वर्णात्मक (वर्णों व चिन्हों द्वारा विचारों को उत्पन्न करना) लिपि
(Symbolic or Alphabetic Writing):

भ्रूण लिपि : आदिकाल में भिन्न-भिन्न देशों में भिन्न-भिन्न प्रकार के चित्र गुफाओं आदि में बनाये गये, जो न तो विचार वाहक थे और न ऐतिहासिक थे अपितु केवल रीति वाहक थे जिनको भ्रूण लिपि (Embryo Writing) कहते हैं। यह इस प्रकार हैं :—(पत्र पहला)

१—रंगीन पत्थर जो दक्षिण फ्रांस से मिले।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

२—पुरानी चित्र कारी जो स्पेन से मिली और जिसको दस हजार वर्ष पुराना † माना गया है।

३—पत्थर पर की खुदान जो पोर्चुगाल से मिली।

४—पत्थर पर की खुदान जो इटली से मिली।

५—रेखा गणितात्मक चिन्ह जो फिलिस्तीन से मिले।

६—रेखा गणितात्मक चिन्ह जो क्रीत (यूनान के दक्षिण में है) से मिले।

७—हाथी दांत पर खुदे कुछ चिन्ह जो अंकों को सूचित करते हैं और जो मिश्र से मिले।

८—रेखा गणितात्मक चिन्ह जो बर्तनों पर मिश्र में मिले।

९—चट्टानों पर बने रंगीन चित्र जो उत्तरी अफ्रीका से मिले।

१०—कुछ चिन्ह जो अमेरिका में कैलीफोर्निया से मिले।

११—कुछ चिन्ह जो अमेरिका में एरीजोना से मिले।

१२—कुछ चिन्ह जो अमेरिका में बहामा से मिले।

१३—कुछ चिन्ह जो दक्षिण अमेरिका में ब्राजील से मिले।

१४—कुछ चिन्ह जो आस्ट्रेलिया से मिले।

चित्रात्मक लिपि में वस्तुओं के चित्रों द्वारा ही विचारों को व्यक्त करते थे परन्तु संकेतात्मक लिपि में वस्तुओं के चित्र केवल वस्तुयें न रह कर संकेत हो गये। जैसे सूर्य का चित्रात्मक लिपि में सूर्य का ही अर्थ निकाला जाता था परन्तु

---

† जब कभी किसी देश में पुरातन विभाग (Archaeological Department.), वहाँ के आदि काल की संस्कृति की खोज में, खुदाई करता है और उस खुदाई से जो वस्तुयें, जैसे मूर्तियाँ या मिट्टी के बर्तन आदि, निकलती हैं तो उनके पुराने पन को जानने के लिये वैज्ञानिकों ने एक माप दण्ड निर्धारित किया है जिसको कार्बन टेस्टर, C. 14 या अब हाल में निकला C. 16 कहते हैं। मिट्टी के अन्दर कोई वस्तु रह जाने से, उस पर कार्बन गैस की परतें जमने लगती हैं और उन्हीं परतों द्वारा उस वस्तु का पुराना पन जाना जाता है कि यह वस्तु कितने वर्ष पुरानी हो चुकी है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

संकेतात्मक लिपि में सूर्य के चित्र से दिन, गर्मी व प्रकाश का संकेत निकाला जाने लगा ; अमेरिका के रेड इंडियनों का तम्बाकू पीने के पाइप का चित्र केवल पाइप ही रहा परन्तु संकेतात्मक लिपि में उसका चित्र शान्ति-द्योतक माना गया।

इस के पश्चात चित्रों और ध्वनि में एक सम्बन्ध निर्धारित किया गया। जैसे आजकल बच्चों को 'ब' से बकरी पढ़ाते हैं तो उस समय उसको उल्टा करने से बकरी शब्द से 'ब' की उत्पत्ति कर ली गई। उसके पश्चात् बहुत से देशों में वर्ण-माला (अक्षर-माला) उत्पन्न हो गई। परन्तु उस में बहुत से परिवर्तन निरन्तर होते रहे क्यों कि प्राचीन काल में मुद्रणालय न थे, विचारों को लाने लेजाने के साधन न थे और देशों की संस्कृतियाँ एक न थीं। फोनिशिया में दैनिक जीवन की वस्तुयें बैल, घर, ऊंट और द्वार (Ox, Beth- House, Camel and Door) अलेफ, बेथ, गिमेल और दलेथ बन गये जो युनानियों ने परिवर्तित करके ऐल्फा, बीटा, गामा और डेल्टा बना दिये।

प्राचीन काल में लिपि को बहुत मान्यता दी जाती थी, उस समय के निवासी साक्षर न थे और उनको यह ज्ञात न होता था कि अमुक लिपि की उत्पत्ति किस प्रकार हुई, उन्होंने, भिन्न-भिन्न देशों में, जहाँ भी लिपि का जन्म हुआ, भिन्न-भिन्न देवता या संत ही लिपि के जन्मदाता ठहराये, जो इस प्रकार मान्य थे :—

देश	देवता या सन्त	लिपि
मेसोपोतामिया	नेबू	क्यूनीफार्म
मिश्र	थॉठ	हीरोग्लिफस
फोनिशिया	कैडमस	सेमिटिक
चीन	वेन चाँग	चित्रात्मक लिपि
युनान	हर्मिस	युनानी
सिनाइ	जेहोवा	हेब्रू
भारत	ब्रह्मा	ब्राह्मी
रोम	मर्करी	लैटिन

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ईरान	अहुरा-मज्द	ज़ेन्ड
अरब	अल्लाह	अरबी
'आर्मेनिया	संत मिश्राप	आर्मेनियन
आयरलैन्ड	ओगमा	ओगम
रूस	संत सिरील	सीरिल
जॉर्जिया	संत मिश्राप	खुतसुरी

जो भी हो लिपि साहित्य, सभ्यता व ज्ञान का वाहन बनी । प्राचीन और खोई हुई लिपियों का ज्ञान हमको प्राचीन-लेख-विज्ञान (Epigraphy) द्वारा २०० वर्ष पूर्व हुआ । इस विज्ञान द्वारा प्राचीन लेखों को पढ़ने का प्रयत्न (decipherment) किया गया । पुरातन विभाग की खुदाइयों और खोजों ने हमारे विश्व के प्राचीन ज्ञान में एक बहुत बड़ी उथल पुथल उत्पन्न कर दी है, हमारी आँखों की वर्षों पुरानी पट्टियाँ खोल दी हैं ।

इस पुस्तक में प्राचीन लिपियों के साथ देवनागरी के अक्षरों का प्रयोग इस कारण किया गया है कि उस प्राचीन लिपि के अक्षरों की ध्वनि ज्ञात हो सके (देव नागरी को हिन्दी कहा जाता है जिसको नेहरू जी कहते हैं कि ठीक नहीं, क्यों कि हिन्दी के शब्दार्थ हैं हिन्द का निवासी) । किसी लिपि की उत्पत्ति के विषय में भाषा-विज्ञान-वेत्ताओं के विचारों में कभी एकता पायी जाती है और कभी विभिन्नता, कभी अश्वासन व प्रमाण के साथ और कभी विचारों की उड़ान द्वारा अनुमान के साथ और कभी प्रमाण व अनुमान दोनों के साथ, कारण, ठोस प्रमाण की अनुपस्थिति में ऐसा हो जाना स्वाभाविक है ।

बाज़-बाज़ देशों की बोलियों में ऐसी विचित्र ध्वनियाँ हैं जिनका उच्चारण न तो एक भारती, बिना गहरे अभ्यास के, कर ही सकता है और न ही देवनागरी में उन ध्वनियों को लिपि बद्ध कर सकता है । ऐसी बोलियों के अक्षरों की सही ध्वनियों को देवनागरी लिपि के अक्षरों में देना कठिन ही नहीं अपितु नामुमकिन है, फिर भी मैंने अधिक से अधिक प्रयत्न किया है कि उन अक्षरों की ध्वनियाँ पाठक समझ लें । ऐसे अवसरों पर त्रुटि रहना कोई त्रुटि नहीं है ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मेसोपोटामिया की लिपियाँ

यह देश ७०० मील लम्बा दजला-फरात (दो नदियाँ) का देश है, जिसको आज ईराक़ कहते हैं। इसकी सभ्यता बहुत प्राचीन मानी जाती है। इसी देश की चर्चा बाइबिल और क़ुरआन में मिलती है कि हज़रत नूह (नोहा) ने खुदा की आज्ञा से प्रलयकारी बाढ़ के समय एक बड़ी नाव बना कर और उसमें सारे संसार के पशु-पक्षियों के जोड़े रख कर इस दुनिया को दोबारा बसाया। इसी देश की एक खालेदीन (Chaldean) जाति में हज़रत इब्राहीम ने, जो ईसाइयों, यहूदियों और मुसलमानों के बड़े पैग़म्बर माने जाते हैं, उर नगर, जिसको पुरातन विभाग (Archaeological Deptt.) ने १६ वीं, शताब्दी में खोज लिया, में जन्म लिया था

चित्रात्मक लिपि: इसी देश में संसार की सबसे प्राचीन चित्रात्मक लिपियाँ मिली हैं, जिनका समय लगभग ६००० वर्ष पुराना माना जाता है। **पत्र दूसरा–१** में चित्रात्मक लिपि ऊपर से नीचे इस प्रकार पढ़ी जायेगी : १–हमारे नीना, २–शिरपोला (एक प्राचीन नगर था जिसको लैगाश भी कहते थे) के राजा, ३–निन्हिल शिन के पुत्र, ४–घिरसन की गद्दी, ५–जिन्होंने बनाई। **पत्र दूसरा–२** की लिपि को बायें से सीधे की ओर पढ़िये : १–एनलिल, २–लुगल कुर्रा, ३–एन साग कुशन्ना, ४-एन किंगी, ५–लुगल, अर्थात एनलिल (बड़ा देवता) को, जो पृथ्वी का राजा है, एनशागकुशन्ना, जो किंगी का राजा है (नमस्कार करता है)। यह Langdon और Smith ने पढ़ी हैं।

सब से पहले इस देश में नगर देश थे और सुमेर जातियाँ रहा करती थीं। यह लोग भी लगभग ६००० वर्ष पूर्व बाहर से आये (कहाँ से आये विद्वान् एक मत नहीं हैं) और यहां के मूल निवासियों से सैकड़ों वर्ष तक लड़ते रहे फिर घुल मिल गये। लगभग ४८०० वर्ष पूर्व पश्चिम की सेमिटिक जाति के अकाद राजाओं ने (यह लोग अशुर देवता के नाम का देश एसीरिया के निवासी होने के पश्चात् एसीरियन भी कहलाये जिनकी राजधानी उत्तरी मेसोपोटामिया में निनेवः नगर बनी) आक्रमण करके सुमेर जाति के साथ एक और संस्कृति की

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

स्थापना की। बाद में इन दो जातियों के मिश्रण से (सुमेर जाति और एसीरियन जाति) बेबीलोनिया की संस्कृति का जन्म हुआ और एक विशाल नगर की स्थापना हुई जिसका नाम बेबिलोन (बाब+इलि=बाबेल, बाब=द्वार, इलि=भगवान, अर्थात् भगवान का द्वार, और बाबेल से बेबिलोन) पड़ा। इस प्रकार यहाँ तीन संस्कृतियाँ या तीन जातियाँ बन गईं। बेबिलोन की ख्याति राजा हम्मूरबी (२१२३ से २०८० ई० पू०) ने राजकीय क़ानून जगह जगह स्तम्भों पर कीलाक्षर में खुदवाकर बढ़ाई और राजा नेबू कद्रेज़ार II (६१२—५६१ ई० पू०) ने हैंगिंग गार्डन बनवाकर बढ़ाई।

कीलाक्षर (CUNEIFORM) लिपि : यहीं क्यूनीफार्म की उत्पत्ति चित्रात्मक से वर्णात्मक तक, ३५०० ई० पू० से ६०० ई० स० तक, होती रही। पहले लेटे चित्र बनाये गये, फिर खड़े चित्र बनाये गये फिर परिवर्तित होते होते ६४० संकेतात्मक शब्द बने (पत्र तीसरा–१ शब्दों के चित्र, उस भाषा में नाम तथा अर्थ दिये गये, २–खड़े से लेटे बनाये गये, ३–कीलाक्षर ४००० वर्ष पूर्व बनाये गये, ४-परिवर्तन किये गये तथा ५-पूर्ण शब्द बन गये)। इस का नाम आक्सफोर्ड विश्व-विद्यालय के प्रोफेसर टॉमस हाइड (Thomas Hyde), जो हेब्रू विभाग के अध्यक्ष थे, ने दिया। यह शब्द दो लैटिन शब्दों से बना है क्यूनियस (Cuneus)+फार्मा (Forma) जिसके अर्थ हैं वेज (Wedge) = मेख+शेप (Shape) शक्ल अर्थात् मेख (जो त्रिकोण होती है) की शक्ल की लिपि जिसको हिन्दी में कीलाक्षर कहते हैं। इस्लाम के आक्रमण के कारण १५०० ई० स० में इस लिपि की मृत्यु हो गई।

इसके लिखने का तरीका भी बड़ा आश्चर्यजनक था। पहले किसी धातु के त्रिकोणाकार सांचे बना लिये जाते थे। फिर मिट्टी की ईटें बनाकर, मुलायम रहने पर उन सांचो द्वारा दबा दबा कर निशान बना कर उन ईटों को पका लिया करते थे और ग्रन्थालय में रख दिया करते थे। इसी प्रकार की ईटों का एक बहुत बड़ा संग्रह एसीरियन राजा अशुरबनीपाल के निनेवः के महल से श्री लेअर्ड (Layard) द्वारा खुदान करने पर सन् १८५० ई० में प्राप्त हुआ। इस में ३०,००० ईटें ६२० ई० पू० की तैयार की गई निकली हैं जो आज British Museum में सुरक्षित हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पर्शियन कीलाक्षर लिपि : पर्शियन कीलाक्षर (क्यूनिफार्म) के गूढ़ाक्षरों का रहस्योद्घाटन ईस्ट इन्डिया कम्पनी के एक फौजी पदाधिकारी, सर हेनरी रॉलिन्सन ने १८४७ ई० में किया। यह गूढ़ाक्षर १७०० फिट ऊंची चट्टान पर विहिस्तम के नगर में मिले। यह शिला लेख ५२१-४८५ ई० पू० के बीच डैरियस प्रथम द्वारा खुदवाये गये थे। उस में ३६ वर्णात्मक अक्षर मिले। जब संसार के विद्वानों के सामने इसकी व्याख्या रखी गई तो सब (Palaeographists) ने मान्यता दी। इस लिपि की कई शाखायें जगह-जगह पर पुरातन विभाग द्वारा खुदाई करने पर प्राप्त हुई हैं, जो निम्नलिखित हैं :—

प्राचीन, पर्शियन, या, एसीरियन कीलाक्षर : इसकी वर्णमाला L. W. King ने तैयार की। (पत्र चौथा)

युगारिटिक कीलाक्षर : युगारिट नगर से, जो ३६०० वर्ष पूर्व भूमध्य सागर के पूर्वी किनारे पर एक मुख्य नगर था कीलाक्षर प्राप्त हुये जिसकी वर्णमाला (C.H. Jordan) के आधार पर दी गई है। (पत्र पाँचवाँ)

बेबीलोनियन कीलाक्षर : बेबीलोनिया के (बीच में खाली रहने वाले) कीलाक्षर तथा पर्शियन कीलाक्षर की तुलना एक लेख देकर की गई जो इस प्रकार है : Xerxes. The Great King. The King of Kings. (पत्र छठवाँ)

मिश्र की लिपियां

मिश्र फैरोज़ (Pharaohs) का देश कहलाता है। यह सर्वशक्तिमान् राजा, प्रजा के जीवन दाता, मन्दिरों के मुख्य पुजारी और सूर्य भगवान एमन रा (Amon-Ra) के कुल के माने जाते थे। वे वर्ण-संकरता दूर रखने के कारण अपनी सगी बहनों से विवाह करते थे। इन का सबसे पहला महाराजा मेने माना जाता है, जिसने ५४०० वर्ष पूर्व एक शक्तिशाली राज्य स्थापित किया था। इस देश पर ६७० ई० पू० एसीरियनों ने, ५२५ ई० पू० पर्शियनों ने, ३३२ ई० पू० युनानियों ने (सिकन्दर ने), ६० ई० पू० रोमनों ने और अन्त में ६३८ ई० सन्

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
में मुसलमानों ने आक्रमण किये और देश की सभ्यता व साहित्य को बड़ी हानि पहुंचाई। यहाँ भी कई नगर-देश थे।

चित्रात्मक लिपि : यहाँ लेखन कला लगभग ५६०० वर्ष पूर्व चित्रों में आरम्भ हुई। (पत्र सातवां)

हीरोग्लिफ्स (HIEROGLYPHS) : जब चित्रात्मक लिपि के चित्र प्रचलित हो गये और भले प्रकार से विचार को व्यक्त करने लगे और सन्देश पहुंचाने योग्य हो गये तो इन चित्रों की एक वर्णमाला तैयार हो गई और इस लिपि का नाम हीरोग्लिफ्स पड़ा। यह ग्रीक (यूनानी) भाषा का शब्द है। हीरोस (Hieros = Sacred) = पवित्र, ग्लिफ़ीन (Glyphein = Carving) = खुदाई, अर्थात् पत्थरों या लकड़ी पर खुदाई। इस लिपि में ७०० से अधिक चिन्हात्मक शब्द हैं तथा २४ चित्रों की एक वर्णमाला भी तैयार की गई है। इस का जन्म लगभग ४५०० वर्ष पूर्व माना जाता है। यह लिपि ऊपर से नीचे, बायें से सीधे और सीधे से बायें लिखी जाती रही। (पत्र नवां व आठवां-१) (पत्र सैंतीसवां व अड़तीसवां-१)

हिरेटिक (HIERATIC) : इस लिपि का जन्म हीरोग्लिफ्स द्वारा लगभग ३५०० वर्ष पूर्व हुआ। यह भी एक ग्रीक शब्द है जिसके अर्थ हैं पवित्र लिपि क्यों कि इस लिपि का प्रयोग केवल राजा और पुजारी किया करते थे। यह शीघ्रता का लेखन-रूप है जो हिरोग्लिफ्स से लिया गया है जिसको कर्सिव (Cursive) लेखन कहते हैं। यह भी कभी, सीधे से बायें और कभी बायें से सीधी लिखी मिलती है। (पत्र दसवां-१ व आठवां-२)

डिमॉटिक (DEMOTIC) : इस लिपि का विकास हिरेटिक द्वारा लगभग २७०० वर्ष पूर्व हुआ। यह लिपि जन साधारण की लिपि थी। इस का नाम डिमॉस (Demos) शब्द से बना जिस का अर्थ है जनता, उसी से आज के शब्द डिमॉक्रेसी, डिमॉग्राफी (Democracy, Demography) मिलते हैं। यह लिपि सीधे से बायें लिखी जाती थीं। (पत्र आठवां-३)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कॉप्टिक (COPTIC) : ईसा पूर्व की चौथी शताब्दी में जो युनानी, सिकन्दर के साथ मिश्र पर आक्रमण करने आये और यहीं बस गये, इनका मिश्रण मिश्रिओं से हुआ और यह लोग कॉप्ट (Copts) कहलाये और मिश्री युनानी भाषा मिल कर कॉप्टिक हो गई और लिपि भी हो गई जो २२०० वर्ष पूर्व प्रयोग में आने लगी। यह बायें से दायें की ओर लिखी जाती थी। यह कॉप्ट लोग बाद में ईसाई हो गये। आज इन लोगों की गणना केवल डेढ़ लाख है जो मिश्र में रहते हैं। (पत्र आठवां-४ व पत्र दसवां-२)

अरबी : आज मिश्र में अरबी लिपि का प्रयोग होता है जो यहां मुसलमानों के आक्रमण के साथ सातवीं शताब्दी में आई। इसके विषय में आगे दिया जायेगा। (पत्र आठवां-५)

बहुत से पुरातन शास्त्रियों ने मिश्र की लिपियों के गूढ़ाक्षरों का रहस्योद्घाटन करने के प्रयत्न किये परन्तु वे सब असफल रहे परन्तु १७९८ में नैपोलियन के साथ एक शास्त्री चेम्पोलियन आया जिसको एक काला पत्थर नील नदी के डेल्टा में रोसेटा के छोटे नगर में मिला जिस पर तीन लिपियां थीं। एक हीरोग्लिफ्स, दूसरी डिमॉटिक और तीसरी ग्रीक। क्यों कि चैम्पोलियन ग्रीक लिपि जानता था, वह उसकी मदद से मिश्र की लिपि को पढ़ सका। बाद में उसने १८२२ में एक हीरोग्लिफ्स का शब्द कोष प्रकाशित कराया और तब सारे संसार को इतने प्राचीन देश की सभ्यता का ज्ञान हुआ, बाद में रॉलिन्सन (Rawlinson) ने भी उसका शब्द कोष तैयार किया। अब सारे गूढ़ाक्षर पढ़ लिये गये हैं।

सिनायटिक (SINAITIC) लिपि : जिस प्रकार आरम्भ में मिश्र में चित्रात्मक शब्द थे वैसे यहां भी प्रचलित थे परन्तु वह मिश्र से भिन्न थे। बाद में सिनाई में भी अरबी आ गई। सिनाई हज़रत मूसा के नाम से जोड़ा जाता है जिसको कोहे-तूर भी कहते हैं। यहीं माउन्ट सिनाई पर मूसा को खुदा के दस पैग़ाम हेब्रू भाषा में प्राप्त हुये। (पत्र सैतीसवां अड़तीसवां-२)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

भारत की लिपियां

भारत में लिपि के जन्म का प्रश्न लिपि के इतिहास में बड़ा आश्चर्यजनक और विवादास्पद है। वेद् भारत के सबसे प्राचीन पवित्र व दिव्य साहित्य समझे जाते हैं। इनमें श्रुतियां हैं (ज्ञान, जो सुना गया) जो चार वेदों में पाई जाती हैं और जो ईश्वर से कही गई और ऋषियों द्वारा सुनी गई, गुरू से चेले को और पिता से पुत्र को, अर्थात् गुरू वंश और कुल वंश द्वारा हमारे पास तक पहुँची। कोई नहीं जानता कि वेद जिनकी भाषा संस्कृत है कब और किस लिपि में लिखे गये। इतने बड़े ज्ञान भण्डार के लिपि बद्ध न होने के दो कारण माने जा सकते हैं; एक तो सम्भवतः कोई लिपि न हो और दूसरे लिखना मनुष्य की कुछ कमज़ोरी समझी जाती हो, जैसे आज भी समझी जाती है। यदि कोई पण्डित धार्मिक पुस्तक को देख देख कर पढ़े (जैसे रामायण, गीता, महाभारत, पुराणादि) तो उस पण्डित को अधिक ज्ञानी पण्डित नहीं समझा जाता। इसी कारण उस काल में भी बजाय लिखने के कण्ठस्थ करना अधिक महान् समझा जाता रहा होगा।

वेदों के तथा अन्य धार्मिक ग्रन्थों के (रामायण, महाभारत, गीता आदि) लिपि बद्ध होने का समय अनुमानतः इतिहासकारों ने भिन्न भिन्न माना है जैसे १५००, १०००, ८००, ५००, २०० वर्ष ई० पू०। अभी तक, यही बात निर्विवाद नहीं है कि आर्य बाहर से भारत में आये या यहीं के मूल निवासी थे। प्रमाण के अभाव में अनुमान ही किसी बात को सिद्ध करने के काम में लाये जाते हैं जो सदैव भिन्न पाये जाते हैं। यह भी अनुमान से ही सिद्ध किया जा सकता है कि जब पाणिनी ने अष्टाध्यायी व्याकरण सातवीं शताब्दी ई० पू० (मैक्समूलर ने चौथी शताब्दी मानी है) में लिखी और छठी शताब्दी ई० पू० में पाठशालायें थीं, तो अवश्य लिपि भी होनी चाहिये। परन्तु अनुमान सर्व माननीय प्रमाण नहीं हो सकता।

पूर्व इसके कि यह लिखा जाय कि भारत में लिपियों का जन्म तथा उनकी उत्पत्ति कब और कैसे हुई, यह लिखना आवश्यक है कि उन प्राचीन लिपियों की

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

खोज यहां कब और कैसे आरम्भ हुई। जिस प्रकार मिश्र व मेसोपीटामिया की प्राचीन लिपियों के गूढ़ाक्षर अठारहवीं शताब्दी तक प्रमाणित रूप में नहीं पढ़े जा सके उसी प्रकार यहां भी अठारहवीं शताब्दी तक नहीं पढ़े जा सके। इस खोज के लिये हमें अंग्रेजी सरकार व कुछ अंग्रेज विद्वानों का आभार मानने में अपनी मान हानि नहीं समझनी चाहिये।

सन् १७८४ में (सर विलियम जोन्स के यत्नों से) "एशियाटिक सोसायटी-बगॉल" (क्यों कि कलकत्ता भारत-सरकार की राजधानी थी) भारत में और १८२३ में "रॉयल एशियाटिक सोसायटी-लन्दन" इंगलैन्ड में स्थापित की गई। जिनका कार्य एशिया के – खास तौर पर भारत के – प्राचीन ग्रन्थों कलाओं, लेखों, तथा ऐतिहासिक पत्रों व सिक्कों की खोज करना था। इसी दृष्टिकोण को रखते हुये सन् १८६१ में संयुक्त प्रदेश (वर्तमान उ० प्र०) के मुख्य इंजीनियर कर्नल ए० कनिंगहाम (A. Cunningham) के प्रयत्नों से "आर्किआलोजिकल सर्वे" (Archaeological Survey–पुरातन विभाग) स्थापित हुआ और वही उसके अध्यक्ष भी नियुक्त हुये। खोज करने वालों के कुछ नाम दिये जाते हैं :—

सन्	नाम	जगह	वस्तु उल्लेख
१७८५	चार्ल्स विलकिन्स	दीनाजपुर जिला बादल नामक स्थान	एक स्तंभ का लेख पढ़ा गया जो बंगाल के राजा नारायण पाल के समय का था।
१७८५	राधाकांत शर्मा	देहली के पास	१३वीं शताब्दी के लेख पढ़े गये।
१७८५	जे० एच० हरिंगटन	बुद्ध गया के पास वाली गुफाओं के लेखों को प्राप्त किया	गुप्तलिपि की कुछ वर्णमाला तैयार की गई।
१८१८ से १८२३ तक	कर्नल जेम्स टाड	राजपूताना में व काठियावाड़ में	यहां के कई लेखों का (७वीं से १५वीं शताब्दी तक के) पता लगाया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सन्	नाम	जगह	वस्तु उल्लेख
१८२८	बी०जी० बबिंगटन	मामल्ल पुर में (दक्षिण भारत)	तामिल भाषा के प्राचीन लेखों को पढ़ कर वर्ण-मालायें तैयार की गईं।
१८३३	वाल्टर इलियट		प्राचीन कनड़ी अक्षरों को पहिचान कर वर्ण-माला तैयार की।
१८३४	कप्तान ट्रायर	प्रयाग (अशोक के लेख स्तम्भों द्वारा)	राजा समुद्रगुप्त के लेख का कुछ अंश पढ़ा।
,,	डा० मिल	,,	उसको पूरा पढ़ लिया।
१८३७-३८	जेम्स प्रिन्सेप	देहली, सांची, अमरावती, गिरिनार	गुप्त लिपि को पढ़ा और वर्णमालायें तैयार कीं। ब्राह्मी लिपि की वर्णमाला भी अन्य विद्वानों के सहयोग से तैयार की।
१८३४-३८	कप्तान कोर्ट, मि० नारिस, जनरल कनिंगहाम	अफगानिस्तान की खुदाई व सिक्कों द्वारा	खरोष्ठी लिपि पढ़ी गई और वर्णमाला तैयार की गई।

इन सब के एकत्रित प्रयासों से १८६० तक बड़ा खोज कार्य हुआ जिसके द्वारा भारत के कई भागों में अनेक शिला लेखों, ताम्र पत्रों व सिक्कों के गूढ़ाक्षर पढ़े गये और प्राचीन ब्राह्मी लिपि से गुप्त, कुटिल, नागरी, शारदा, बंगला, तेलुगू, कनड़ी, ग्रन्थ, कलिंग, तामिल आदि अनेक लिपियों का ज्ञान प्राप्त हुआ और उनकी वर्णमालायें तैयार की गईं। इन्हीं खोजों के द्वारा भारत के प्राचीन इतिहास में भी, जो अभी तक अनुमानित प्रमाणों पर तथा कुछ लोगों के केवल अनुमानों पर आधारित था, संशोधन किये गये।

खरोष्ठी लिपि : इस लिपि का नाम खरोष्ठी क्यों पड़ा इसके कई कारण विद्वानों ने लगाये हैं, परन्तु प्रमाण न होने के कारण अनुमान से कारण बना कर बताये

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

गये हैं। संस्कृत में खरोष्ठी के अर्थ हैं गधे के होंठ (खरह = गधा, ओष्ठ = होंठ) अर्थात् गधे के होंठ जैसी लिपि । श्री राजबली पाण्डे का विचार है कि मध्य एशिया में खरोष्ठा एक जाति थी [जिनमें कुशान, यवन (ग्रीक), शाक्य (सीथियन) तथा तुषार जातियाँ सम्मिलित थीं] उसके नाम पर खरोष्ठी पड़ा खरपोस्ता अर्थात् गधे की खाल पर लिखी जाने वाली लिपि से खरोष्ठी बना। अरमायक शब्द खरोष्ठा से खरोष्ठी बना। ' ललित-विस्तर " (बुद्ध-चरित का ग्रन्थ, जिसका अनुवाद चीनी भाषा में चौथी शताब्दी के आरम्भ में हुआ) के अनुसार किअ-लु-सेटो (एक दैवि शक्ति वाले आचार्य) के नाम पर खरोष्ठी पड़ा। इसकी उत्पत्ति अरमाइक द्वारा ईसा पूर्व की छठी शताब्दी में पंजाबसे पश्चिम की ओर के निवासियों के लिये किया गया क्यों कि ईरान में तो उस समय कीलाक्षरों का प्रयोग होता था जो व्यापारियों के लिये लिखना कठिन था ईरान राज्य में उस समय दूसरी प्रचलित लिपि 'अरमायक' थी जिसका प्रयोग व्यापार में अधिक होता था और क्यों कि व्यापारी अधिक भ्रमण भी करते थे तो इनके ही द्वारा संसार की बहुत सी लिपियाँ तथा संस्कृतियाँ फैलीं भी और मिश्रित होकर कई अन्य लिपियों का भी जन्म हुआ । इसी 'अरमायक' व कुछ पाली-प्राकृत अक्षरों के मिश्रण से इस खरोष्ठी की उत्पत्ति हुई ताकि पश्चिमोत्तर भारत के निवासी आसानी से अपने विचारों को इस लिपि के द्वारा व्यक्त कर सकें।

इस लिपि की ३७ अक्षरों की वर्णमाला १८३० में कई सिक्कों द्वारा और शहबाज़ गढ़ी (पंजाब के अशोक के शिला लेखों से) के लेखों से तैयार की गई। ई० पू० की तीसरी शताब्दी में इस का लोप हो गया क्यों कि इस की जगह ब्राह्मी ने लेली। (पत्र दसवाँ–३)

ब्राह्मी लिपि : 'ललित विस्तर' के अनुसार इस लिपि के जन्मदाता ब्रह्मा जी जो वेदों के भी जन्म दाता माने गये हैं, माने जाते हैं । इस लिपि का जन्म व विकास कब और कैसे हुआ है कोई नहीं जानता। प्रमाण के अभाव में विद्वानों ने अनुमान लगाये हैं, जैसे, कनिंगहम कहते हैं कि भारतीय बीजाक्षरों से उत्पन्न हुई। वेबर का कहना है कि प्राचीन फ़ोनेशियन लिपि से निकली । टेलर का कहना है

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कि अरबी से इस का सम्बन्ध रहा और हेलेवी के अनुसार अरमायक, खरोष्ठी व युनानी लिपियों के मिश्रण से इसका जन्म हुआ । श्री ए० बी० वालवाल्कर के विचार से इसका जन्म (समय निश्चित नहीं है) बहुत पहले लगभग सातवीं आठवीं शताब्दी ई० पू० में हुआ जो महेश्वरी ब्राह्मी कहलाती थी और वह महेश्वर या शिव के डमरु के घुमाव से जो उन्होंने नृत्य करते समय बजाया उत्पन्न हुई, जिसमें १४ महेश्वरी सूत्र पाये जाते हैं और यही वैदिक-ब्राह्मी-लिपि और सूत्र पाणिनी की अष्टाध्यायी व्याकरण के आधार बने जो इस प्रकार हैं (पत्र ग्यारहवां-१-में १५ सूत्र वाली ब्राह्मी लिपि तथा साथ साथ हिन्दी के अक्षर दिये हैं । इसी के नीचे वैदिक व पौराणिक ॐ भी दिया है । सं०-२-सिन्धु-घाटी-लिपि के अक्षरों की तुलना अशोकन ब्राह्मी से की गई है तथा पत्र चौदहवां-१ में अशोकन ब्राह्मी दी है और पत्र बीसवां के नीचे ब्राह्मी अक्षरों का जोड़ दिखाया है)

बहुत से विद्वानों का मत है कि इस का विकास सिन्धु घाटी की लिपि से हुआ । (पत्र ग्यारहवां में ब्राह्मी सिन्धु घाटी लिपि व हिन्दी दी गई है)

इन सब बातों का ध्यान रख कर तथा ब्राह्मी लिपि की कुछ मुद्रायें पश्चिम से भी पुरातन-विभाग की खुदान से प्राप्त हुई जिन पर वहाँ की लिपि क्यूनीफार्म भी थी, यह अवश्य कहा जा सकता है कि इसका सम्बन्ध सेमेटिक लिपियों से अवश्य रहा होगा । भारत के प्राचीन समय में भी सांस्कृतिक, व्यापारिक व राजनैतिक सम्बन्ध ईरान, फोनेशिया, हैती, क्रीत, मिश्र युनान आदि से रहे हैं जिनके द्वारा व्यापारिक वस्तुओं का, धर्म व दर्शन का, राजदूतों व राजकीय उपहारों का तथा भाषा व लिपि का आदान प्रदान भी होता रहता था । हर विभाग में भारत ने कुछ दिया और कुछ लिया । इसलिये ब्राह्मी के कई अक्षरों का सम्बन्ध वहाँ की लिपियों से साफ जान पड़ता है । लिपियों के आदान प्रदान में देश काल के अनुसार परिवर्तन भी हो जाता है, जो मुद्रणालयों के न होने के कारण और शीघ्रता से हो जाता है । अक्षरों की लिखते लिखते सूरत ही बदल जाती है ।

मिश्र ने बैल का मुंह इस प्रकार बनाया (पत्र बारहवां) इसके ऊपर यदि शीघ्रता से हाथ फेरा जाय तो फोनेशियन अलिफ़ (अ) बन जाता है यदि उसकी

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दिशा पलट दी जाये तो ब्राह्मी का अ बन जाता है यदि उस को खड़ा कर दिया तो रोमन की A बन जायेगी जरा तिरछा रहने पर युनानी A बन जायेगी। सिनायटिक लिपि का घर का चित्र, जिसकी ध्वनि ब है, फोनेशियन बेथ बना, युनानी व रोमन बीटा (ब) बनी और ब्राह्मी का भी ब बना। मिश्र के ऊंट का चित्र जो अंग्रेज़ी में केमेल फोनेशियन का गिमेल, युनानी व रोमन गामा (G) ग और ब्राह्मी का ग बना। इसी प्रकार सिनायटिक चित्र त्रिकोण द्वार, फोनेशियन का दलेथ, युनानी डेल्टा, रोमन डी (D), उर्दू का दाल, और ब्राह्मी का द भी बना। इसी प्रकार अरमायक लिपि का शीन (श) पलट देने से ब्राह्मी का श बनता है; पे (प) पलट देने से प बनता है, इसी के ताबू (त) में तनिक सा परिवर्तन करने से ब्राह्मी का त बनता है मोआबाइट ग बिलकुल ब्राह्मी के ग से मिलता है। इस प्रकार सेमेटिक लिपियों के सात अक्षर ब्राह्मी के अक्षरों से मेल खाते हैं। इसके अतिरिक्त ब्राह्मी भी पहले (लगभग २६०० वर्ष पूर्व) दायें से बायें सिन्धु-घाटी-लिपि के अनुसार लिखी जाती थी। भारत में अशोकन ब्राह्मी का प्रमाण मिलता है जो पत्र चौदहवां-में दिया है। (पत्र बारहवां)

गुप्त लिपि : यह लिपि गुप्त वंश के राजाओं के समय (चौथी/पांचवीं शताब्दी) सारे उत्तर भारत में प्रचलित थी। इस का विकास ब्राह्मी के द्वारा हुआ। इसकी वर्णमाला चार्ल्स विल्किन्सन ने १७८५ से ८६ तक बुद्ध-गया की गुफ़ा से प्राप्त लेखों से आधी तैयार कर ली थी, जिसको डा० मिल और जेम्स प्रिन्सेप ने देहली व सांची के लेखों द्वारा पूरी कर दी। इसका नाम मालूम न होने के कारण, तथा गुप्त काल की होने के कारण गुप्त लिपि दे दिया गया। (पत्र तेरहवां-१)

कुटिल लिपि : यह लिपि छठी से नवीं शताब्दी तक उत्तर भारत में प्रचलित थी। यह गुप्त लिपि का बदला हुआ रूप है। उत्तर प्रदेश के पीलीभीत जिले के एक देवल गांव में ९९२ में एक ताम्रपत्र प्राप्त हुआ, जिस पर इस लिपि का नाम कुटिलाक्षराणि दिया था। मेवाड़ में राजा अपराजित के समय के लेखों में, जो सातवीं शताब्दी के मध्य के पाये गये, विकटाक्षराणि दिया था। इसके अक्षर कुटिल व विकट थे इस लिये कुटिल लिपि नाम पड़ा। इसकी वर्णमाला जारानके

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
मठ के ताड़-पत्र-पुस्तक व श्री बावर के प्राप्त किये लेखों से तैयार की गई है। (पत्र तेरहवां--२)

देव नागरी लिपि : इस लिपि की उत्पत्ति ब्राह्मी से नवीं शताब्दी में हुई। कोल्हापुर में यह आठवीं शताब्दी में भी पाई गई है। श्री आर० एम० शास्त्री के अनुसार देवताओं के पूजन विधि के त्रिकोण व चक्रों के नाम के पहले अक्षरों द्वारा इसका नाम देव नगर से देवनागरी पड़ा। कुछ विद्वानों का विचार है कि इस का जन्म काशी अर्थात देवनगर में हुआ इस कारण देवनागरी कहलाई, कुछ का विचार है कि यह देवताओं की लिपि है इस कारण देवनागरी हुई। बाद में इसको हिन्दी कहने लगे। आज यह लिपि राष्ट्र भाषा बन गई है। बोली और लिपि का मिलान इसमें पूर्णता के अधिक से अधिक निकट पाया जाता है। इसके विकास की चार सीढ़िया निम्नलिखित हैं :—

१-मोरवी (काठियावाड़) गुजरात से ९०४ ईसवी सन् में प्राप्त दान पत्र द्वारा तैयार की गई वर्णमाला। (पत्र चौदहवां-२)

२-उदयपुर तथा उज्जैन के लेखों से ११वीं शताब्दी में तैयार की गई वर्णमाला। (पत्रचौदहवां-३)

३-आबू के पारमार राजा धारा वर्ष के समय के लेखों से १२०८ में तैयार की गई वर्णमाला। (पत्र चौदहवां-४)

शारदा लिपि : यह कश्मीर की सुप्रसिद्ध देवी शारदा के नाम से प्रचलित हुई। ब्राह्मी से कुटिल द्वारा दसवीं शताब्दी में इस की उत्पत्ति हुई जिसका प्रमाण सराहां के लेखों से प्राप्त हुआ है। (पत्र तेहरवां--३)

टाकरी लिपि : यह शारदा लिपि का घसीट रूप है। इस लिपि का नाम टाकुर (राजा या भगवान के लिये आता है) के नाम ठाकुरी तथा टाकरी पड़ गया। (पत्र तेरहवां-४)

बंगला लिपि : यह लिपि पूर्वी भारत की देवनागरी लिपि द्वारा विकसित हुई। इसका समय ११वीं शताब्दी माना जाता है। बंग देश या बंगाल के नाम पर इसका नाम बंगला लिपि पड़ा। (पत्र पन्द्रहवां-१ ब्राह्मी पन्द्रहवां--२ बंगला)

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पश्चिमी लिपि : इस लिपि का प्रचलन गुजरात, नासिक, खानदेश तथा सतारा जिले की ओर पांचवी शताब्दी से ९वीं शताब्दी तक रहा। ५७१ ई० सन् के राजा ध्रुव सेन के दान पत्रों से इस लिपि की वर्णमाला तैयार की गई है। (पत्र सोलहवां-१)

मध्य-प्रदेशी लिपि : इस लिपि का उपयोग पांचवीं से नवीं शताब्दी तक मध्य प्रदेश, बुन्देल खण्ड, उत्तरी हैदराबाद आदि में होता था। इसका विकास ब्राह्मी द्वारा हुआ। पांचवीं शताब्दी के वाकाटक वंशी राजा प्रवर सेन द्वित्तीय के तीन दान पत्रों से जो दुदिया में मिले यह वर्णमाला तैयार की गई है। (पत्र सोलहवां-२)

तेलुगू-कनड़ी लिपि : यह लिपि दक्षिण भारत के हैदराबाद राज्य, आन्ध्र व मैसूर राज्य तथा दक्षिण-पश्चिम भागों में प्रचलित थी। इसकी उत्पत्ति ब्राह्मी से पांचवीं शताब्दी में हुई। १४ वीं शताब्दी में यह दोनों पृथक हो गईं। तेलुगू लिपि का विकास निम्नलिखित प्रकार से हुआ :—

१-७५० ईसवी में पश्चिमी चालुक्य वंशी राजा कीर्तिवर्मन के दान पत्रों द्वारा वर्णमाला बनाई गई। [पत्र सत्रहवां-१]

२-१०वीं शताब्दी में पूर्वी चालुक्य वंशी राजा भीम के दान पत्रों द्वारा तैयार की गई। [पत्र सत्रहवां-२]

३-११वीं शताब्दी में पूर्वी चालुक्य वंशी राजा राज के दान पत्रों द्वारा तैयार की गई। [पत्र सत्रहवां-३]

४-वर्तमान तेलुगू की वर्णमाला। [पत्र सत्रहवां-४] ब्राह्मी से कनड़ी की उत्पत्ति कैसे हुई इस में है। [पत्र अठारहवां-१ ब्राह्मी, २-कनड़ी]

ग्रन्थ लिपि : इस लिपि का जन्म ब्राह्मी से सातवीं शताब्दी में मद्रास प्रदेश में हुआ और १५वीं शताब्दी तक इस के रूप में विकास होता रहा। इसमें ग्रन्थ लिखे जाते थे इस कारण इसका नाम ग्रंथ लिपि पड़ा। [पत्र १९वां--१ ब्राह्मी, २--ग्रंथ]

कलिंग लिपि : यह लिपि श्रीकाकुलम व गंजम के जिलों में [उड़ीसा और

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

आन्ध्र की सीमाओं पर स्थित हैं] ७ वीं व ११ वीं शताब्दी में पाई जाती थी। इसमें कई लिपियों का मिश्रण था। अब इसका लोप तेलुगू व उड़िया लिपियों में हो गया। इसकी वर्णमाला कलिंग के गंगा वंशी राजा व पार्लाकिमेडी के दान पत्रों से, जो ११ वीं शताब्दी के काल के हैं, तैयार की गई। [पत्र सोलहवां-- ३]

तामिल लिपि : इस लिपि का जन्म और विकास ब्राह्मी और ग्रन्थ से सम्बन्ध रखता है। यही लिपि मद्रास प्रदेश में वर्तमान है। ब्राह्मी से किस प्रकार विकास हुआ दिखाया गया है [पत्र बीसवां--१ ब्राह्मी, २--तामिल]।

कैथी लिपि : इस लिपि का जन्म व विकास ब्राह्मी व हिन्दी से है जो बिहार में १२वीं व १३वीं शताब्दी में हुआ। इस लिपि में गुजराती लिपि की तरह लकीर नहीं खींचते। इसका प्रयोग कायस्थ अर्थात कायथ (लेखपाल) अधिक करते थे, इस कारण कैथी नाम पड़ गया। [पत्र इक्कीसवां--१]

मैथिल लिपि : यह मिथिला प्रदेश (वर्तमान तिरहुत) के ब्राह्मणों की लिपि थी जिसमें अनेक संस्कृत ग्रन्थ मिलते हैं। इसकी उत्पत्ति बंगला लिपि से हुई। मिथिला में पाई जाने के कारण मैथिल पड़ा। [पत्र इक्कीसवां--२]

उड़िया लिपि : उड़ीसा में वर्तमान है। इसका जन्म पुरानी बंगला लिपि से हुआ। [पत्र सोलहवां--४]

गुजराती लिपि : गुजरात के नाम पर इसका नाम गुजराती पड़ा। इसका जन्म व विकास ब्राह्मी द्वारा व हिन्दी द्वारा हुआ। इसमें भी ऊपर लकीर नहीं खींचते। [पत्र इक्कीसवां--३]

मौड़ी लिपि : शिवाजी ने जब अपना राज्य स्थापित किया तो नागरी ही प्रचलित थी। परन्तु लिखने में कुछ कठिनता के कारण शिवाजी के चिटनीस [मंत्री = चिटनवीस = चिट्ठी नवीस] बाला जी आवा जी ने इस नागरी के अक्षरों को मोड़ कर बनाई इस कारण इस लिपि का नाम मौड़ी लिपि पड़ गया। इसका चलन अब भी महाराष्ट्र के कुछ जिलों में पाया जाता है। [पत्र २१ वां--४]

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मलयालम लिपि : यह लिपि ग्रन्थ लिपि का घसीट रूप है । केरल प्रदेश में वर्तमान है । (पत्र बाईसवां–१)

तुलु लिपि : यह मलयालम लिपि का परिवर्तित रूप है और कुर्ग में पाई जाती है । (पत्र बाईसवां–२)

गुरमुखी लिपि : सिक्ख धर्म के गुरु अंगद जी ने १६ वीं शताब्दी के मध्य बोली की शुद्धता के लिये इसको जन्म दिया । गुरु के नाम पर गुरु मुखी प्रसिद्ध हुई । अधिक तर इस के अक्षर शारदा लिपि से लिये गये हैं जो उस समय पंजाब में वर्तमान थी । (पत्र बाईसवां–३)

सिन्धी लिपि : इस का जन्म लगभग दसवीं शताब्दी में अरबी लिपि द्वारा सिन्ध में हुआ । इसको अरबी-सिन्धी भी कहते हैं । सिन्ध में उस समय भी देवनागरी से सम्बन्धित बनयाकर (बानिया+अक्षर) लिपि चलती थी जो व्यापारियों में प्रचलित थी । इस को दायें से बायें लिखते हैं । (पत्र तेईसवां–१,२–वनियाकर)

उर्दू लिपि : उर्दू लश्करी भाषा याने फौजी भाषा भी कहलाती है जो मुसलमानों ने भारत की उन भाषाओं से मिला कर बनाई जो उत्तर में उस समय प्रचलित थीं जब वह आक्रमणकारी बन कर आये । इस लिपि का जन्म लगभग १२ वीं १३ वीं शताब्दी माना जाता है इसका जन्म अरबी लिपि द्वारा ही हुआ । (पत्र तेईसवां–३)

भारत में इस समय २६५ बोलियाँ हैं परन्तु सब बोलियाँ अपनी लिपि नहीं रखतीं, जैसे कश्मीरी बोली की लिपि उर्दू–अरबी है या मराठी बोली की लिपि देवनागरी है ।

पाली प्राकृत मागधी आदि भी भाषायें थीं जो संस्कृत के साथ साथ, भारत में पांचवी व चौथी शताब्दी ई० पू० से प्रचलित रहीं और इनकी लिपि ब्राह्मी थी । पाली बौद्धों के लिये, संस्कृत ब्राह्मणों के लिये थी । इसी कारण अशोक के शिलालेख पाली में ही मिले हैं । पाली बौद्धों ने बनाई केवल बौद्धों के लिये । इस का जन्म अवन्ती में हुआ । प्राकृत जनता की बोली थी ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सिन्धु घाटी की लिपियां

खुदान कार्य : स्व० राखल दास बनर्जी, जो पुरातन विभाग के उच्च-पदाधिकारी थे, पांच वर्षों से उन बारह स्तम्भों के ढूंढने में रत थे जो सिकन्दर ने भारत से जाते समय यहाँ बनवाये थे। १६२२ के शीत काल में शिकार खेलते समय रास्ता भूल जाने के कारण घोड़े पर सवार एक टीले पर जा पहुंचे जहां पर उनको एक प्राचीन प्रकार का चाकू प्राप्त हुआ और उन्होंने अनुमान लगा लिया कि इस स्थान पर कोई पुरानी सभ्यता भूमि के नीचे दबी है। उन्होंने खुदान कार्य आरम्भ कर दिया। इस कार्य को बाद में भरतीय सरकार ने सर जॉन मार्शल की देख रेख में १६२५ में आरम्भ किया। उसके पश्चात श्री ई० जे० एच० मैके ने १६३१ तक खुदान कार्य किया। यह था मोहेन-जो-दड़ो।

इसी के उत्तर में चार सौ मील पर राय बहादुर दया राम सहानी ने उसके पश्चात श्री माधोस्वरूप वत्स ने खुदाई की और यह था हड़प्पा। इन दोनों स्थानों की खुदाई में अन्य नाना प्रकार की वस्तुओं के साथ लगभग तीन हज़ार मुद्रायें भी निकलीं जिन्होंने भारत के विषय में, विद्वानों की अटल धारणाओं को, इतिहासकारों की आज तक की मान्यताओं को निर्मूल सिद्ध कर दिया और गूढ़ाक्षर वेत्ताओं के लिये एक ऐसी समस्या खड़ी कर दी कि जितना उसे सुलझाया गया उतना ही वह उलझती गई।

खुदाई की प्राप्त वस्तुओं से यह भी सिद्ध हुआ है (जिसमें समुद्री प्राणियों के हाड़ आदि निकले) कि मोहिन-जो-दड़ो एक द्वीप था और किसी विदेशी सभ्यता का प्रभाव इस पर नहीं पड़ा अपितु यहां की सभ्यता का प्रभाव ईरान-ईराक़ की पुरानी (सुमेर, ऐसीरिया आदि) सभ्यताओं पर पड़ा है। ६००० वर्ष से २३०० वर्ष तक अर्थात सिकन्दर के समय तक सभ्यता का बहाव पूर्व से पश्चिम रहा परन्तु २३०० वर्ष के पश्चात सभ्यता का बहाव पश्चिम से पूर्व हो गया जो दिन प्रति दिन तेज होता गया और आज का भारत तो वैज्ञानिक प्रगति के लिये, औद्योगिक प्रगति के लिये, कल-पुर्जों के लिये, राजनैतिक नीतिओं के लिये, शिक्षण उन्नति के लिये, आर्थिक सन्तुलन के लिये तथा अन्न की भीख माँगने के लिये

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पश्चिमी देशों का ही मुंह ताकता रहता है।

यहाँ के निवासी देवी देवताओं का सामुहिक पूजन नहीं करते थे इसी कारण यहाँ की खुदाई में कोई मन्दिर प्राप्त नहीं हुआ। धर्म केवल एक व्यक्तिगत चीज़ थी। यहाँ के लेखों से पता लगता है कि उन की भाषा संस्कृत थी और वेदों, आरण्यक, ब्राह्मण, उपनिषद् आदि ग्रन्थों से बहुत मेल खाती है। इनके दार्शनिक विचार मानव पर केन्द्रित थे। मन्दिर तो राजा महाराजाओं ने तथा अमीरों ने अधिक शक्तिशाली तथा अधिक अमीर बनने के लिये बनवाये, जहाँ सर्व प्रकार के चमत्कारों को तथा भव्यता को देखने की आशा की जाती थी। इन्ही चमत्कारों से दिन पर दिन सारे संसार में पूजा की प्रथा बढ़ने लगी और पूजा कराने वाले मनुष्यों की एक जाति पुजारी की पूर्ण प्रतिष्ठा के साथ उत्पन्न हो गई। इस प्रकार राजा, धनी व पुजारी जन साधारण को गुमराह करके अपने उल्लू सीधा करने लगे, जो कई देशों में अब तक वर्तमान है।

3881

खुदाई में निकली वस्तुओं व मुद्राओं के चित्र इन इन ग्रन्थों में (Mohen-jo-Daro And Indus Civilisation Edited by Sir John Marshall जिसका संक्षिप्त रूप M I C कहलाने लगा, दूसरा Further Exacavations at Mohenjo-Daro Edited by E. J. H. Mackay जिसका संक्षिप्त रूप M F E कहलाने लगा और Exacavations at Harappa Edited by M. S. Vats. जो M E H कहलाने लगा) बड़ी सुन्दरता तथा संख्या के साथ छापे गये हैं। इन्हीं मुद्राओं के चित्रों के आधार पर संसार के गूढ़ाक्षर-वेत्ताओं में रहस्योद्घाटन करने की एक होड़ लग गई और यह बात निर्णयात्मक रूप से सिद्ध हो गई कि सिन्धु-घाटी की सभ्यता ५००० वर्ष पुरानी है। खुदान की वस्तुओं के समय का काल उस सभ्यता का अन्त काल था तो उस सभ्यता का आरम्भ काल और मध्यकाल कितना प्राचीन होगा। यदि इन ५००० वर्षों में अन्य ५००० और जोड़ दिये जायें तो हम अवश्य उस सभ्यता के जन्म के समीप पहुंच सकते हैं।

यहां की लिपि में चिन्ह और चित्र दोनों ही पाये जाते हैं, जो दायें से

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बायें कभी बायें से दायें तथा कभी दोनों ओर लिखे मिलते हैं। कुछ मुद्राओं (Seals) में केवल लिपि है तथा कुछ में केवल चित्र ही हैं और कुछ में चित्र और लिपि दोनों ही हैं और ऐसी मुद्राओं में चित्र व लिपि दोनों ही एक दूसरे के समर्थक हैं। इसको पढ़ने में विद्वानों ने अनुमान अधिक प्रमाण कम लगाये हैं। जहां प्रमाणों का अभाव होता है वहां अनुमान का ही सहारा लिया जाता है। इसी अनुमान के कारण गूढ़ाक्षर वेत्ताओं में धर्ती-आकाश का अन्तर पाया है और यह अन्तर ही इस बात का प्रमाण है कि उन विद्वानों का कार्य अप्रमाणित होने के कारण सर्वमान्य न हो सका।

सर जॉन मार्शल के विचार से Seal M I C. P L. XII No. 17 में (पत्र चौबीसवां–१) जो मनुष्य का आकार है उसको उन्होंने पशुओं से घिरे रहने के कारण पशुपति नाथ ही माना है परन्तु अन्य विद्वानों ने इस मुद्रा की लिपि के भिन्न भिन्न अर्थ लगाये हैं जो आगे दिये गये हैं। मार्शल की पुस्तकों में उन मुद्राओं का भी जिक्र है जो सुमेर आदि में पुरातन विभाग द्वारा खुदाई करने पर मिली हैं और उन पर सिन्धु-घाटी की लिपियां पाई गई हैं। उनमें से एक का उल्लेख यहां भी किया जाता है और जो विद्वानों द्वारा पढ़ी गई परन्तु सब ने अर्थ भिन्न भिन्न ही निकाले। यह मुद्रा (पत्र चौबीसवां–२) जोखा (Djokha)-उम्मा-टेल्लो के पास ईराक में निकली थी और जिसको २८०० वर्ष ई० पू० पुराना माना जाता है। M I C के ४१४ पृष्ठ पर एक और मुद्रा दी है जिसको विद्रानों ने भिन्न- भिन्न रूप से पढ़ा है। (पत्र चौबीसवां–३) मार्शल तथा अन्य पाश्चात्य विद्वानों का यह मत है कि यहां द्राविड़ सभ्यता थी और आर्य जाति बाहर से लगभग ३५०० वर्ष पूर्व भारत में आई, सिन्धु घाटी की सभ्यता ने निर्मूल सिद्ध कर दिया है। यहां की लिपि से यह भी मत खण्डित हो जाता है कि ब्राह्मी लिपि का विकास फोनेशियन या अरमायक लिपियों से हुआ है क्यों कि सिन्धु घाटी की लिपि में कई अक्षर ब्राह्मी लिपि के पाये जाते हैं। यह बात अवश्य किसी भी विचारक या विद्वान को आश्चर्य में डाल देती है कि ब्राह्मी लिपि के प्राप्त लेखों में तथा सिन्धु घाटी की प्राप्त लिपि में लगभग २००० वर्ष का ऐसा अन्तर क्यों हो गया जिस पर प्रमाण के अभाव में पुल नहीं

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बांधा जा सकता।

सिन्धु घाटी के लेखों से यह भी सिद्ध हो गया है कि वेदों की आरण्यक की, ब्राह्मणों की तथा उपनिषदों की रचना इसी सभ्यता-वासियों ने की क्यों कि उनके विचार व भाषा (संस्कृत) मिलती जुलती है।

अब उन विद्वानों के विचार पढ़िये जिन्होंने सिन्धु घाटी की लिपि को पढ़ने के प्रयत्न किये हैं, जो इस प्रकार है :—

श्री सी० एफ० गैड इस मुद्रा को (पत्र चौबीसवां-३) सीधे से बायें इस प्रकार पढ़ा 'प' 'त्र' 'य' अर्थात पुत्र। यह कहते हैं कि इस लिपि में ३६६ अक्षर हैं।

डा० जी० आर० हन्टर का विचार है कि इसमें २३४ चिन्ह हैं जैसे एक सैनिक तीर-कमान के साथ, अनाज गोदाम, ताल में बतक़ (पत्र पच्चीसवां-१) और उनकी वर्णमाला इस प्रकार है। (पत्र पच्चीसवां-२)

श्री एरस्ट डब्लोफर का विचार है कि यह लिपि ईस्टर द्वीप की लिपि से मिलती है। (पत्र छब्बीसवां-१)

स्वामी शंकरानन्द ने इस लिपि को पढ़ने के लिये तान्त्रिक † चिन्हों का आधार लिया है और एक वर्णमाला तैयार की है। (पत्र सत्ताइसवां-१ तांत्रिक चिन्ह तथा संख्या २-में सिन्धुघाटी-लिपि के अक्षर दिये हैं)। आप का विचार है कि वेद पुजारियों के ग्रन्थ हैं जिसमें समाज के एक अंग का ही वर्णन है। वेदों

---

† वेदों में मन्त्र हैं और तान्त्रिक दर्शन में तन्त्र हैं। इनक विचार धारा चार प्रकार की है जिसको आगम के नाम से सम्बोधित करते हैं जैसे, १-उत्तरी शैवागम-कश्मीर में प्रचलित है ; २-दक्षिणी शैवागम-दक्षिण में प्रचलित है (जिसमें लिंगयात तथा वीर शैव पाये जाते हैं) ; ३-वैष्णवागम-जो विष्णु को मूल मान कर चलते हैं तथा ४-शक्तागम-शक्ति की पूजा करते हैं (इनके सम्प्रदाय में लैगिक सम्बन्ध करके दोनों लिंगों की पूजा होती है-इन्ही को यह शक्ति का रूप मानते हैं)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

में वेदना का अधिक वर्णन है जिससे सिद्ध होता है कि वैदिक काल के मनुष्य विजेता नहीं परन्तु परास्त लोग थे। इस कारण इन को आक्रमण कारी आर्यों से भिन्न होना चाहिये। वेदों की भाषा से सिद्ध होता है कि इस की रचना करनेवाले बड़े योग्य, ज्ञानी तथा व्याकरण आदि से पूर्ण शिक्षित होने चाहिये। ऐसी रचना करने वाले बेघरबार वाले व्यक्ति नहीं हो सकते। वैदिक साहित्य के अध्ययन करने से इस बात का अनुमान लगाया जा सकता है कि कितनी शताब्दियाँ लगी होंगीं उस ज्ञान को चोटी तक पहुंचाने में तथा कितनी शताब्दियों तक वह वर्तमान रहा होगा तथा कितनी शताब्दियाँ लगी होंगीं उसके पतन में, क्यों कि खुदान में निकली वस्तुयें उनके पतन का काल था जो ५००० वर्ष पुराना मान लिया गया है तो क्या उन का वर्तमान और प्रगति काल ५००० वर्ष और पुराना नहीं माना जा सकता अर्थात सिन्धु घाटी की सभ्यता को १०००० वर्ष पुराना मानने में कोई अड़चन नहीं दिखाई देती।

स्वामी शंकरानन्द ने पशुपति वाली मुद्रा (पत्र चौबीसवां-१) को इस प्रकार पढ़ा :—भैंसे का चित्र = 'ज', गेन्डा = 'ल', जार (हाथी के ऊपर बना चित्र) = 'म', मछली = 'ध', हाथी = 'श', आदमी = 'क', चीता = 'न', बकरा (जो सबसे नीचे बना है) = ऐ' अर्थात जल मध शकुनै अर्थात पानी की चिड़ियों ने सारे पानी के श्रोत ढक लिये हैं। पत्र चौबीसवां -२ की मुद्रा को बायें से सीधे पढ़ा प, ण, या = पणिया = वाणिया = बनिया।

श्री सुधान्सु कुमार रे इस लिपि में २८८ वर्णात्मक चिन्ह मानते हैं और इसी लिपि को ब्राह्मी की तथा संसार की कुछ अन्य लिपियों की भी मां मानते हैं जैसे फोनेशियन, अरमायक आदि। उनकी वर्णमाला इस प्रकार है (पत्र अट्ठासइवां)। उन्होंने पशुपति वाली मुद्रा (पत्र चौबीसवां-१) को इस प्रकार पढ़ा है। ऊपर की पंक्ति सीधे से बायें की ओर :-पहला चित्र लम्बा मनुष्य एक योगी का है, दूसरा 'य' तीसरा 'ग', चौथा 'अ', पाँचवां 'ल', छठा 'अ', सातवां 'म'। इस प्रकार मिला कर योगालयम् हुआ। उन्होंने जोखा वाली मुद्रा (पत्र चौबीसवां-२) को इस प्रकार पढ़ा-सीधे से बायें-म ग ध स इ श ए।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

श्री वालवाल्कर व श्री यल० यस० वाकन्कर ने जोखा वाली मुद्रा (पत्र-चौबीसवां-२) को कपड़ों की गांठों की, जो भारत से सुमेर भेजी जाती थीं, एक पर्ची मानी है क्योंकि इसी मुद्रा की दूसरी ओर कपड़े के निशान भी बनाये गये हैं सीधे से बायें पढ़ने में उन्होंने छः अक्षरों में से चार तो ब्राह्मी के ही माने हैं जैसे म रू मा ल या म रि मा ल। मारी, सुमेर की खुदान में एक बड़ा नगर निकला है, माल के अर्थ हैं पश्चिम, अर्थात पश्चिम का भारी नगर। पाचवां चिन्ह अक्षर नहीं अपितु अंक है और छठा त्रिशूल है। उन्होंने अन्य मुद्राओं को पढ़ने के लिये कुछ अक्षर इस प्रकार पढ़े हैं। (पत्र छब्बीसवां-२)

श्री एम० वी० एन० कृष्ण राव ने लगभग ५०० मुद्रायें एक्रोफोनी (acrophony) पद्धति से पढ़ी हैं जैसे बकरी के चित्र को पहला अक्षर ब मान लिया। उन्होंने पशुपति वाली मुद्रा को (पत्र चौबीसवां-१) सीधे से बायें इस प्रकार पढ़ा, भैंसा = महिशा का 'म', गेन्डा = खडग का 'ख', मनुष्य = नर का न, हाथी = सद्री का 'स', उसके नीचे फिर बना है नर = न, तो अक्षर हुये म ख न स न, अर्थात मख नाशन भावार्थ हुआ मखासुरों का नाश करने वाला।

श्री प्राणनाथ का कहना है कि सिन्धु-घाटी की लिपि को पढ़ने के लिये सुमेर तथा मिश्र की लिपियों का ज्ञान होना अति आवश्यक है। उन्होंने कुछ चिन्हों की वर्णमाला, अपने अनुमानों, तान्त्रिक चिन्हों व मिश्र के चिन्हों का आधार लेकर, बनाई है। (पत्र छब्बीसवां--३)

श्री एस० पर्णवितान ने इस मुद्रा को (पत्र चौबीसवां-३) इस प्रकार सीधे से बायें य, त्रि, नः पढ़ा है।

डा० फतेह सिंह † ने अभी तक लगभग २००० मुद्राओं के गूढ़ाक्षरों का रहस्योद्घाटन कर लिया है। उनका कहना है कि यहां आर्य-द्राविड़ द्विजातीय

---

† डा० फतेह सिंह (जो राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर के वर्तमान निदेशक हैं और जिनसे मिलने का मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ है) ने सिन्धु-घाटी-लिपि का रहस्योद्घाटन करने में सबसे अधिक तथा महत्वपूर्ण शोध कार्य किया है। उन्होंने प्राचीन इतिहास तथा वैदिक साहित्य का अति गहन अध्ययन किया है और उन्होंने

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मान्यता पाश्चात्य देशों के विद्वानों की देन है जिसको हम आज भी छोड़ने को तैयार नहीं हैं। भरत से भरण-पोषण, भरण-पोषण करने वाला देश भारत बना, जिसके निवासी भारतीय, तो सिन्धु घाटी के निवासी न आर्य थे न द्राविड़ परन्तु वह थे भारतीय, जिन्होंने वैदिक साहित्य की रचना की।

पुरातन विभाग ने उस सभ्यता को ५००० वर्ष प्राचीन माना है जो उनका उपनिषद् काल था तो हमको ब्राह्मण, आरण्यक व वेदों के लिये कितना पीछे जाना पड़ेगा क्योंकि वेद ही सबसे पहली रचना है जिसके अर्थ हैं ५००० वर्ष और पीछे। तो यह मानना असैद्धान्तिक न होगा कि सिन्धु घाटी की सभ्यता १०,००० वर्ष पुरानी है। उनका यह भी कहना है कि वैदिक-संस्कृत भाषा जो सिन्धु घाटी की मुद्राओं से प्राप्त है, अलंकारों और उपमाओं से परिपूर्ण है जिसका अनुवाद नहीं किया जा सकता, क्योंकि अनुवाद करने से सारा आशय ही समाप्त हो जाता है। उनकी यह भी मान्यता है कि मुद्राओं में जो सीधे हाथ की ओर मुंह किये चित्र हैं वह दैविक हैं और जो बायें हाथ की ओर मुंह किये हैं वह आसुरिक हैं। उनकी बनाई वर्णमाला तथा अक्षरों के जोड़ इस प्रकार हैं (पत्र उन्तीसवां, तीसवां, इकतीसवां) पशुपति वाली मुद्रा को (पत्र चौबीसवां--१) इस प्रकार पढ़ा है, बृत्राग्निशुनौ प्राणान्नौन्द्रेन्दू अर्थात इन्द्र और चन्द्र स्वरूप बृत्र और अग्नि शुन जीव के प्रदाता हैं। उन्होंने इस मुद्रा को (पत्र चौबीसवां--३) इस प्रकार सीधे से बायें पढ़ा। उमा त्रि अत्रि उमा = ओ३म् की शक्ति का नाम है, त्रि = तीन, अत्रि = जो तीन न हो) अर्थात ऐसी उमा जो अत्रि भी है और त्रि भी है। उन्होंने जोखा वाली मुद्रा को (पत्र चौबीसवां--२) इस प्रकार पढ़ा ज्ञानन्, न यजत्र तपन अर्थात ज्ञान से ही मुक्ति हो सकती है यज्ञ से तप से नहीं।

ऊपर दिये गये विभिन्न विद्वानों के विभिन्न मतों से यह बात तो सिद्ध

साबित कर दिया है कि सिन्धु घाटी के निवासी वेदों के, आरण्यकों के, ब्राह्मणों के तथा उपनिषदों के रचने वाले थे। उन्होंने पाश्चात्य देशों के विद्वानों की आर्य-द्राविड़ मान्यता को भी निर्मूल सिद्ध कर दिया है। वेदों की रचना उनके हिसाब से लगभग आठ या दस हज़ार वर्ष पहले हुई होगी। उनके कई लेख व पुस्तकें इस विषय पर निकल चुकी हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हो ही गई कि वेद् यहीं के निवासियों ने रचे और भारत की सभ्यता सब देशों से प्राचीन सभ्यता है। केवल लिपि के विषय में यह अवश्य कहा जा सकता है कि उन लोगों ने इसको इतना मुख्य नहीं समझा जितना कंठस्थ करना। फिर भी सभ्यता की चेन की अभी कई कड़ियां उपलब्ध नहीं हैं। सम्भव है पुरातन विभाग की और खुदाईयों से कुछ कड़ियाँ मिल जायें ताकि लिपि और सभ्यता का २००० वर्ष का गढ़ा पाटा जा सके और इस बीच का इतिहास पूर्ण हो जाये। यदि यह गढ़ा पट गया तो भारत संस्कृति व सभ्यता में, दर्शन व धर्म में तथा भाषा व लिपि में संसार के सारे देशों का मुकुट या श्रोत प्रमाणित हो जायेगा और आर्य-अनार्य, काले-गोरे की धारणायें विश्व के इतिहास से लोप हो जायेंगी।

चीन की लिपियाँ

चीनी चीन के निवासी नहीं हैं परन्तु कहीं बाहर से आये और मूल निवासियों से लड़ कर चीन में लगभग ५००० वर्ष पूर्व बस गये। यह लोग प्रकृति-पूजक और पुर्षा-पूजक थे। यहां तीन धर्म प्रचलित थे। एक टाओवाद जिसमें देवी देवता, चमत्कार व पुजारी और स्वर्ग-नर्क आदि की बातें पाई जातीं थीं और अधिकतर निर्धन व अज्ञानियों के लिये था, दूसरा कन्फ्यूशसवाद बुद्धि वादियों के लिये था जिसमें चरित्रता व नैतिकता थी और तीसरा बौद्ध धर्म था जो भारत से ६५ ई० सन् में पहुंचा। शू हुआंग ती ने चीन की प्रसिद्ध दीवाल ई० पू० की तीसरी शताब्दी में बनवाई जिसमें लगभग ३६० कन्फ्यूशसवादी विद्वानों को झोंक दिया गया और उनके धार्मिक साहित्य को जला दिया गया।

त्रिपुन्ड लिपि : लगभग ४८०० वर्ष पूर्व फो-ही ने आठ तान्त्रिक त्रिपुन्डों का निर्माण किया और उनको जगह जगह पर काट् कर आठ शब्द बनाये (पत्र बत्तीसवां–ऊपर)। इन तीन पक्तियों में एक एक करके तीन तीन पंक्तियां और जोड़ दी गईं और उसी प्रकार काट काट कर ४८ शब्द बनाये।

चित्रात्मक लिपि : लगभग ४००० वर्ष पूर्व शांग काल में इस प्रकार पशुओं के चित्र बनाये (पत्र तेतीसवां–१) तथा अन्य वस्तुओं के चित्र बनाये जिनसे प्रचलित लिपि बनी जो शीघ्रता से लिखी जा सके जैसे मिश्र में हिरोग्लिफ्स से

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हिरेटिक बनी उसी प्रकार चीनी लिपि बनी। चीनी चित्र और उससे बसीट लिपि ऊपर और मिश्री चित्र और उससे बसीट लिपि बनी नीचे इस पत्र में दिये हैं (पत्र बत्तीसवां--मध्य)। उसी के नीचे किस प्रकार ENGLISH MAN चीनी लिपि में लिखते हैं। एक सरल शब्द कितनी कठिनता से तीन चित्र बना कर बनता है (पत्र बत्तीसवां--नीचे)। इसके पश्चात किस प्रकार से आदि काल के चित्रों से आज की चीनी लिपि विकसित हुई पत्र तेतीसवां--२ में दिया गया है। जिसमें लगभग ४८००० चिन्हात्मक शब्द हैं। यह लिपि ऊपर से नीचे लिखी जाती है। इसलिए ऊपर से नीचे पढ़िये।

कैशू लिपि : नवीं शताब्दी में कैशू वर्णमाला तैयार की गई और उसके अक्षर मोनो-सिलेबिक-शब्दों में जोड़ कर नये नये शब्दों का आवश्यकतानुसार निर्माण हुआ। आज चीनी लिपि संसार की मुख्य लिपियों में से मानी जाती है। कैशू के कुछ अक्षर इस पत्र में दिये जाते हैं। (पत्र चौंतीसवां--१)

जापान की लिपियां

जापान उगता सूर्य का देश कहलाता है। यहाँ के झण्डे पर भी सूर्य का ही निशान है। यहां के राजा भी सूर्यकुल वंशी कहलाते हैं। दूसरे महायुद्ध के पूर्व तो यहां के महाराजा को कोई नजर उठा कर देख भी नहीं सकता था। अन्तर केवल इतना है कि अन्य संसार के देश सूर्य को पुल्लिंग मानते हैं तो जापानी सूर्य को स्त्रीलिंग अर्थात देवी मानते हैं। यहां के मूल निवासी ऐनु कहलाते हैं। जापान में धर्म, दर्शन साहित्य, भाषा, लिपि सब कुछ कोरिया होता हुआ चीन से पहुंचा। बौद्ध धर्म यहां छठी शताब्दी में पहुंचा। जापानी भाषा का नाम कान्जी है।

चित्रात्मक लिपि : जापान में महाराजा ओजिन (२७०--३१२ ई० सन्) के समय में, अचिकी और वानी, कोरिया के दो विद्वानों द्वारा चीन के चिन्हात्मक शब्द पहुंचे जो कन्फ्यूशस शास्त्रों में थे। इन शब्दों के द्वारा यहां लिपि का जन्म

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

माना जाता है। छठी शताब्दी तक यह कुछ ऊँचे लोगों तक ही सीमित रही परन्तु बौद्ध धर्म के प्रचार के साथ लिपि के ज्ञान का भी प्रचार बढ़ा। चीन के तीन शब्द जो ऊपर से नीचे पढ़े जायेंगे, इस प्रकार हैं वृक्ष, चावल, धातु, इन्हीं शब्दों को चीनी भाषा में मू, वेई, चिन कहेंगे और जापानी भाषा (कुन) में की, कोमे, काने कहेंगे। इस प्रकार चीन के हज़ारों मोनो-सिलेबिक्स-शब्द जापान पहुंचे। (पत्र पैंतीसवां-१)

कताकाना व हीरागाना लिपियां : धीरे धीरे यहां के भाषा-वैज्ञानिकों तथा लिपि विद्वानों ने परिवर्तन किया और लिपि को सरल बनाया। आठवीं शताब्दी के अन्त में श्री कीबीनो माकीबी ने कताकाना के अक्षरों का निर्माण किया और नवीं शताब्दी के मध्य में एक बौद्ध भिक्षु कोबो देशी ने हीरागाना के अक्षरों का निर्माण किया। अब यह दोनों व्यक्ति शिक्षा क्षेत्र के प्रथम सन्त माने जाते हैं और पूजे जाते हैं। जापानी लिपि में केवल १५ ब, द. ग, ह, क, म, न, ण, स, प, र, ट, व ज, इ, व्यञ्जन होते हैं और स्वरों की सहायता से ऊपर की दोनों लिपियां ४८ मिली भुली ध्वनियां उत्पन्न करती हैं। इन दोनों लिपियों के अक्षर चीन के कौन कौन से शब्दों से बनाये गये, कुछ इस पत्र में दिये हैं (पत्र पैंतीसवां-२) जो इस प्रकार हैं :—

१-चीनी शब्द हैं। २-चीनी शब्दों के अर्थ हिन्दी में दिये हैं। ३-उन शब्दों का एक भाग लेकर कताकाना के अक्षर बनाये। ४-फिर कताकाना के वह अक्षर घसीट बने। ५-उन्हीं चीनी शब्दों से हीरागाना के अक्षर निकाले। ६-वही घसीट (Cursive) बने। ७-ध्वनि के लिये हिन्दी अक्षर दिये हैं। कताकाना के कुछ अक्षरों की बारह खड़ी देखिये (पत्र चौंतीसवां-२)। अब इसका प्रयोग रोक दिया गया है इसकी जगह हीरागाना ने ले ली है। चीनी शब्दों का प्रयोग घटते घटते हज़ारों से केवल १८५० शब्दों तक रह गया है इन्हीं शब्दों में कताकाना या हीरागाना के अक्षर जोड़ कर शब्द बना लिये जाते हैं। इनकी लिखावट में भी पुराने नये का बहुत अन्तर है (पत्र छत्तीसवां-१) कुछ इस पत्र में दिये हैं।

जापानी या चीनी लिपियां लिखने में कलम या ब्रुश को ६० डिग्री पर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पकड़ कर लिखा जाता है। Stroke मारे जाते हैं। इनमें दो Stroke के शब्दों से २३ Stroke के शब्दों तक शब्द मिलते हैं। यह लिपियां संसार की कठिन तम लिपियां समझी जाती हैं। यह बायें से दायें लिखी जाती हैं (पत्र छत्तीसवां--२ में पहले Strokes के नम्बर दिये हैं, फिर चित्र-लिपि दी है, उन शब्द के उच्चारण दिये हैं तथा उसके अर्थ दिये हैं)।

मांचू लिपि : इसका जन्म मंचूरिया में वहां के मांचू राजा के द्वारा हुआ। समय ज्ञात नहीं। अब यह चीन देश का एक भाग है। यह लिपि ऊपर से नीचे लिखी जाती है और इसमें २७ अक्षर होते हैं। (पत्र छत्तीसवां–३)

पश्चिमी एशिया के सेमेटिक देशों की लिपियां

हज़रत नूह (Noah), जिन्होंने दुनिया डूबते समय एक बड़ी नाव बनाकर सब जातियों के पशुओं के जोड़े रख कर पृथ्वी को फिर से आबाद किया था, के बेटे साम के वंश की जाति को सेमेटिक कहते हैं।

फ़ोनिशियन लिपि : वर्तमान लेबेनान व सीरिया फोनिशिया कहलाता था जो २०० मील लम्बा और ३५ मील चौड़ा था। फोनिशियन लोग खालदोन (CHALDEAN) जाति के थे जो इब्राहीम के साथ उर नगर (मेसोपोटामिया) से चल कर लगभग ४२०० वर्ष पहले इधर आकर बस गये थे। पहले तो यह जहाज़ों को लूटा करते थे, फिर यह लोग बड़े तिजारती हो गये और मिश्र, सिनाइ व क्रीत आदि से चित्रात्मक लिपि लाकर उनमें ध्वनि पैदा की, अर्थात चित्रों को अपनी भाषा की ध्वनि से मिलाया। चित्रों के नाम का पहला अक्षर लेकर चित्र से मिलता भुलता अक्षर बनाया, उन्हीं में से जो यह दूसरे देशों से लाये और १६०० ई० पू० में केवल व्यञ्जनों (Consonants) की २२ अक्षरों की एक ध्वनि-आत्मक लिपि (Phonetics) तैयार की। अंग्रेजी शब्द कोष में और आज के जन साधारण लोगों में भी एक शब्द फ़ोन (Phone) मिलता है जिसका प्रयोग इस प्रकार होता है, ग्रामोफ़ोन, माइक्रोफ़ोन, टेलीफ़ोन आदि। यह शब्द फ़ोन फ़ोनिशियन लोगों के नाम पर हीं प्रचलित हुआ, क्योंकि इन्होंने ही चित्रों में ध्वनि पैदा की। स्वर के अक्षर न होने के कारण इनकी लिपि के अक्षरों

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

द्वारा एक शब्द से कई शब्द पढ़े जा सकते हैं जैसे बिना स्वर के यदि तीन व्यञ्जन लिखे जायें : MLK=तो यह MILK, MULK, MALK, MOLK (मिल्क, मुल्क, मल्क, मोल्क) कुछ भी पढ़े जा सकते हैं। फोनिशियन लोगों नेपश्चिम को न केवल वर्णात्मक लिपि दी परन्तु स्याही, क़लम और काग़ज़ भी दिया।

क्योंकि इन्होंने केवल व्यञ्जनों की उत्पत्ति की इस कारण इनके सारे अक्षरों के नाम व्यञ्जन में ही अन्त होते हैं, जैसे, अलिफ़, बेथ, गिमिल, दलेथ (Aleph, Beth in Arabic=house, Gimel=जो Camel से बना, Daleth)। यह लिपि दायें से वायें लिखी जाती थी और इसी से सारी सेमेटिक लिपियां सम्बन्ध रखने के कारण दायें से वायें लिखो जाती हैं। इसी लिपि द्वारा युनानी एट्रूस्कन व रोमन लिपियों ने जन्म लिया। (पत्र सैतीसवां व अड़तीसवां के पहले खाने में मिश्र की हीरोग्लिफ्स है, दूसरे में सिनाइ की हैं, तीसरे में फोनिशियन लिपि है, चौथे में युनानी लिपि है पाचवें में एट्रस्कन और छठवें में रोमन लिपि है)

हिटायट लिपि : पैलेसटाइन के मूल निवासियों का नाम हेब्रू में हित्थी या वनी हेथ (कनआन के दूसरे बेटे हेथ की औलाद) था। हिटायट शब्द लोगों व भाषा दोनों के लिये प्रयोग किया जाता था। बोग़ाज़ कुये की खुदान में, जो १९०६-७ में की गई इस साम्राज्य की राजधानी हातीशश की बहुत सी वस्तुयें प्राप्त हुई हैं। उन्हीं के आधार पर कहा जा सकता है कि ४५०० वर्ष पूर्व हिटायट साम्राज्य के टुकड़े बहुत से नगर-देशों में हो गये जिसमें हाती मुख्य था जिसने अपनी शक्ति की महानता दिखाई परन्तु ३५०० वर्ष पूर्व सौ वर्ष के लिये इसका पतन हुआ परन्तु फिर चेतना आई और एक नई हिटायट रियासत क़ायम हुई जो ७१७ ई० पू० में एसीरिया के राजा सरगांव द्वत्तीय ने कारकिमेश को हराकर नष्ट कर दी। यहां की लिपि का रिकार्ड उत्तरी सीरिया के हमाथ नगर की खुदाई से, जो १८१२ में की गई थी, ईंटों में प्राप्त हुआ है। यहां लिपि का जन्म (चित्रों में) ३८०० वर्ष पूर्व हुआ। यह दोनों ओर से लिखी जाती थी। श्री आई० जे० जेल्ब ने इसकी चित्र-वर्णमाला तैयार की है। (पत्र उन्तालीसवां)

हेब्रू लिपि : इसकी उत्पत्ति के विषय में अभी तक कुछ निर्णयात्मक रूप से

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ज्ञात नहीं। धार्मिक विचारों द्वारा यह मान लिया गया है कि भगवान जेहोवा ने दो शिला लेखों द्वारा हज़रत मूसा (Moses) को सिनाइ की पहाड़ी पर लगभग १६२० ईसा पूर्व में हेब्रू लिपि में लिखे दस आदेश दिये। यह मूसा के समय की हेब्रू मानते हैं। दूसरे प्रकार की हेब्रू का जन्म हज़रत सुलेमान (King Solomon) द्वारा ६५० ई० पू० माना जाता है। तीसरे प्रकार की हेब्र का जन्म उन यहूदियों द्वारा हुआ जो ईरान के राजा नेबूकद्रेजार द्वारा बन्दी बना कर बेबीलोनिया में ५८५ ई० पू० रखे गये थे, जिसको जूडिया (यहूदिया, जहूदिया, जूडिया, इस प्रकार यह नाम फारस के लोगों ने रख लिया था) कहते हैं जो पत्र इक्तालीसवां में दी गई है। श्री डेविड ड्रिन्गर का विचार है कि इस लिपि का जन्म ईसा पूर्व की दूसरी शताब्दी में अरमायक (अरामियन) लिपि द्वारा हुआ जो वर्ग हेब्रू कहलाती थी (Square Hebrew)। फिर वर्तमान हेब्रू की उत्पत्ति १०वीं शताब्दी में हुई। (पत्र चालीसवां-२. प्राचीन हेब्रू जो २२०० वर्ष पहले बनी, पत्र चालीसवां--३, वर्तमान हेब्रू जो १०वीं शताब्दी में बनी)

चैल्डियन लिपि : सेमेटिक जाति के लोगों ने अरब से मेसोपोटामिया में आकर एक छोटा सा देश चैल्डिया बसाया जिसकी राजधानी उर थी। इन लोगों का नाम व इनकी भाषा का नाम चैल्डियन या खालेदीन पड़ गया। यहां मूर्ति पूजा प्रचलित थी। यहीं के एक मूर्तिकार आज़र का बेटा हज़रत इब्राहीम ४२०० वर्ष पूर्व देश छोड़ कर कनआन चला गया था। बाद में खालेदीन सभ्यता बेबीलोनिया की सभ्यता में मिश्रित हो गई। इस लिपि का जन्म लगभग २६०० वर्ष पूर्व माना जाता है। (पत्र इक्तालीसवां)

सामारिटन लिपि : समारिया का एक छोटा सा राज्य पैलेस्टाइन के पास (वर्तमान लेबेनान देश) ई० पू० की दसवीं शताब्दी में विद्यमान था। यहां पर हार्वर्ड विश्व विद्यालय के स्नातकों ने १६०८-१० में खुदाई की। प्राप्त लेखों से पता लगा कि यहां ईसा पूर्व की ८वीं शताब्दी में लिपि की उत्पत्ति हुई। (पत्र ब्यालिसवां--४)

सीरियन लिपि : सीरिया (इस्लामिक भाषा में शाम) सातवीं शताब्दी से

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मुसलमान बादशाहों का केन्द्र रहा है। यह ईसा पूर्व की १६ वीं शताब्दी में एक बड़ा व्यापारिक केन्द्र था, जहां मिश्र, बेबीलोनिया, भारत व युनान के व्यापारी एकत्रित हुआ करते थे। बोगाजकुई की खुदाई से सिद्ध हुआ है कि यहां ई० पू० की आठवीं शताब्दी में २२ अक्षरों की एक वर्णमाला प्रचलित थी। (पत्र तितालिसवां-१)

मोआइट लिपि : मोआब पैलेस्टाइन (फिलिस्तीन) राज्य का एक प्रदेश था। १८६८ को खुदाई में यहां कुछ लेख प्राप्त हुये जिनसे सिद्ध हुआ है कि यहाँ ईसा पूर्व की १० वीं शताब्दी में लिपि विद्यमान थी। यह लेख मोआब के एक प्राचीन नगर डिबान में मिले जो मोआब-शिला-लेख के नाम से प्रसिद्ध हुये। अब पेरिस के संग्रहालय में रखे हैं। मोआब के राजा का नाम मेशा था जिसने इस्राइल के राजा जेरहाम के खिलाफ़ क्रान्ति की थी जेरहाम ने ८९६ से ८८४ ई० पू० तक राज्य किया। इसी क्रान्ति के विषय में शिलालेख प्राप्त हुआ। इस लिपि की उत्पत्ति फोनिशियन लिपि द्वारा हुई। (पत्र ब्यालिसवां-१)

सैबियन लिपि : साबा देश के निवासी व भाषा सैबियन कहलाते थे। इसमें दक्षिण-पश्चिम अरब व कुछ भाग अफ्रीका का भी सम्मिलित था यहीं की महारानी शीबा (बाथ शीबा) राजा सुलेमान (किंग सोलोमन) से मिलने ६ वीं शताब्दी में इस्राइल गई थी। प्रो० एन० गुयेक ने तेल-एल-खलीफ नगर, जो अकाबा खाड़ी के उत्तरी समुद्री किनारे पर है, में १९३८ में खुदाई की। इससे सिद्ध हुआ है कि यह लिपि ईसा पूर्व की ६ वीं शताब्दी में प्रचलित थी। इसकी उत्पत्ति फोनिशिया की लिपि से मानी जाती है और इसमें २८ अक्षर थे। यह दायें से बायें लिखी जाती थी। (पत्र ब्यालिसवां--२)

इथीयोपिक लिपि : इसको तथा सैबियन लिपि को दक्षिण सेमेटिक लिपियां भी पुकारते हैं। इथीयोपिया का नाम युनानी भाषा के शब्द इथीयोपिस से पड़ा। यह मिश्र देश के दक्षिण में स्थित है। पहले यह मिश्र देश का ही एक भाग था परन्तु ईसा पूर्व की ११ वीं शताब्दी में स्वतंत्र हो गया। २७०० वर्ष पूर्व एबेसीनिया इस देश के अन्तर्गत आ गया। यहां लिपि की उत्पत्ति २५०० वर्ष पूर्व

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सैवियन के अक्षरों द्वारा ही हुई। चौथी शताब्दी में राजा एकजम ने दूसरी लिपि का निर्माण किया जो सीधे से बायें लिखी जाती थी परन्तु १३ वीं शताब्दी में यह फिर संशोधित की गई और बायें से सीधे लिखी जाने लगी (पत्र इक्तालिसवें में पुरानी तथा पत्र तितालिसवां- २ में नई लिपि दी गई है)

ज़ेन्ड लिपि : इसको पारसी लिपि भी कहते हैं। इस लिपि का जन्म तो पांचवी-छठी शताब्दी ई० पू० का मानते हैं, परन्तु सिकन्दर के आक्रमण ने सारी हस्त-लिखित पुस्तकों को नष्ट करवा दिया। २२६ ई० सन् में एशिया निवासियों ने क्रान्ति की और एक गवर्नर अर्देशायर (Artaxeres) ने फिर राज्य स्थापित किया तथा अग्नि-पूजा का पारसी धर्म आरम्भ किया तथा इस लिपि को भी आरम्भ किया। आठवीं शताब्दी में मुसलमानों के आक्रमण ने फिर इस लिपि को नष्ट कर दिया और इसकी जगह अरबी लिपि ने ले ली। अब ज़ेन्ड लिपि पारसियों की धार्मिक पुस्तक ज़ेन्ड-अवेस्ता में पाई जाती है। (पत्र तितालिसवां-३)

सिडॉन की लिपि : सिडॉन एक प्राचीन फोनेशिया का नगर था जो टायर नगर के २० मील उत्तर में भूमध्य सागर के पूर्वी किनारे पर था इस नगर का नाम ज़िडार के नाम पर पड़ा जो कनआन का बेटा था। ज़िडार से सिडान हो गया। यहां एक वर्णात्मक लिपि की उत्पत्ति फोनिशियन लिपि द्वारा ६०० ई० पू० में हुई। यह रासशमरा की खुदान से हस्तगत हुई। (पत्र ब्यालीसवां--३)

अरमायक लिपि : इसको अरामियन जाति के नाम अरामियन लिपि भी कहते हैं। अरम, इब्राहीम के भाई नोहर के बेटे शेम का पुत्र था। अरामियन लोग दक्षिण अरब से लगभग ३५०० वर्ष पूर्व सीरिया में आकर बस गये। इस लिपि का जन्म फोनेशियन लिपियों द्वारा आठवीं शताब्दी में हुआ है, जिसका प्रमाण हम्मात के राजा ज़ाकिर के शिला लेख से मिलता है जो अलब्राईट को १६०४ में प्राप्त हुआ और जिसका समय ७७५ ई० पू० लगाया जाता है। सातवीं शताब्दी ई० पू० में यह भाषा (बोली और लिपि) सारे ईरान मेसोपोटामिया, सीरिया, एशिया मायनर आदि देशों की सबसे अधिक प्रचलित भाषा (Lingua Franca) हो गई। ईशू (Jesus) इसी भाषा में उपदेश दिया करते थे। इस लिपि में २२

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अक्षर पाये जाते हैं। इस लिपि से चौखुंटी हेब्रू (Square Hebrew) की ई० पू० की दूसरी शताब्दी में और खरोष्ठी की उत्पत्ति ई० पू० की छठी शताब्दी में हुई। यह भी दायें से बायें लिखी जाती थी। (पत्र चालीसवां -१)

नबातियान लिपि : १६६ ई० पू० से १०६ ई० सन् तक नबातियान का एक छोटा सा राज्य (वर्तमान जॉर्डन) स्थित था। इस लिपि की उत्पत्ति इसी काल में हेब्रू फोनिशियन लिपियों के मिश्रण से हुई। (पत्र इकतालीसवां)

अरबी लिपि : इसकी उत्पत्ति नबातियान लिपि द्वारा हुई है। इसका विकास पत्र चवालीसवें में इस प्रकार दिया है :—

१--सिनायटिक अरबी - पहली से तीसरी शताब्दी; २--अरबी -- चौथी शताब्दी; ३--अरबी -- छठी शताब्दी; ४--अरबी -- सातवीं व आठवीं शताब्दी; ५--नस्ख अरबी -- जो आज कल प्रचलित है। इस अरबी की चार शाखायें मानी जाती हैं। (पत्र इकतालीसवां) इसीसे पर्शियन, सिन्धी व उर्दू लिपियां बनीं :—

१--मक्की -- जो मक्का में प्रचलित थी; २--कूफिक -- जो कूफा में प्रचलित थी। कूफा नगर पूर्व में और कार्डोबा पश्चिम (स्पेन) में शिक्षा के केन्द्र १२ वीं शताब्दी में बड़े प्रसिद्ध थे। पत्र साठवां में नीचे कूफिक अरबी दी गई है जिसका अर्थ है "नहीं है कोई (देवता) पूजने योग्य सिवाय उस अल्लाह के जिसका पैग़ाम लाने वाला मोहम्मद है"; ३--मग़रिबी -- जो कार्डोबा व उत्तरी अफ्रीका में प्रचलित थी; ४--नस्ख -- जो आज प्रचलित है।

योरोपीय देशों की लिपियां

युनान (Greece) योरोपीय देशों की, संस्कृति और सभ्यता में, धर्म और दर्शन में, भाषा और लिपि में, राजनीति और विज्ञान में तथा हर प्रकार के विकास में, मां समझी जाती है। जिस प्रकार भारत ने अपनी चीजें सुदूर पूर्व (दक्षिण-पूर्व और उत्तर-पूर्व) को दीं, युनान ने भारत से व सेमेटिक देशों से कुछ व अपना कुछ जोड़ कर उसी प्रकार योरोपियन देशों को दिया। इसके अतिरिक्त योरोपिय देशों को मुसलमानों ने भी बहुत कुछ दिया। जो योरोपीय देश आज से २०० वर्ष पूर्व जंगली और बर्बर थे उन्ही देशों ने समस्त पृथ्वी पर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

किसी न किसी रूप में अपना अड्डा जमाया तथा बहुत से देशों को कई शताब्दियों तक दास बनाये रखा।

युनानी लिपि : इसका जन्म फोनेशियन की वर्णमाला द्वारा हुआ। ११०० ई० पू० में युनानियों ने फोनेशियन लिपि को स्वर दिये जिसके कारण फोनेशिया के अक्षरों के नाम अलेफ बेथ गिमेल दलेथ युनानी लिपि के एल्फा बीटा गामा डेल्टा हो गये। यह लिपि भी दायें से बायें लिखी जाती थी। मगर युनानियों ने ६०० ई० पू० के पश्चात् इसकी दिशा परिवर्तन की। यह कार्य एक रात में नहीं हुआ कई दशाब्द व शताब्द लगे। पहले ये लोग दायें से बायें और फिर बायें से दायें याने हल चलाने की विधि (Boustrofoden Style) से लिखते रहे तदन्तर बायें से सीधे की विधि में स्थिर हो गये। इस लिपि में २४ अक्षर पाये जाते हैं। इस लिपि में भी प्राचीन व लौकिक (Classic) में अन्तर नज़र आते हैं परन्तु वह उल्लेखनीय नहीं हैं। (पत्र सैंतीसवां-अड़तीसवां-४ व ४६ वां)

माइसीनियन लिपि : माइसीनिया युनान के उत्तरी भाग को कहते थे। यह एक बहुत प्राचीन नगर देश था जिसकी सभ्यता ४७०० वर्ष पुरानी मानी जाती है। इसका सम्पर्क क्रीत की सभ्यता से काफी रहा है। यहां श्री शिलीमैन ने १८७६ में खुदाई करके प्राचीन सभ्यता का पता लगाया। यहां चित्रात्मक लिपि द्वारा वर्णात्मक बनाई गई थी जिसके गूढ़ाक्षर वेन्ट्रीस और चैडविक द्वारा पढ़े गये। (पत्र पैंतालीसवां-१)

क्रीत की लिपि : क्रीत युनान देश के दक्षिण में एक छोटा सा द्वीप है जिसकी सभ्यता ४५०० वर्ष पुरानी मानी जाती है। यहां के निवासिओं को राजा मिनॉस के नाम पर मीनियन कहते हैं। १६०८ में इटली के एक पुरातन-शास्त्री द्वारा खुदाई से यह सिद्ध हो गया है कि यहां ३७०० वर्ष पूर्व चित्रात्मक लिपि आरम्भ हुई (पत्र पैंतालिसवां-२) जो बाद में वर्णात्मक हो गई। (पत्र उनचासवां-३)

सायप्रस की लिपि : सायप्रस भूमध्य सागर में फोनेशिया के नज़दीक एक द्वीप है जिसकी सभ्यता ५००० वर्ष पुरानी मानी जाती है। यहां भी लगभग ३००० वर्ष पूर्व चित्रात्मक से वर्णात्मक लिपि बनी जो १८६५ की खुदाई से सिद्ध हो गया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

यह खुदाई श्री लिंगी पामर दि सेसनोला ने करवाई थी। यह अमरीका के राजदूत बन कर यहां आये थे। यह लिपि दायें से बायें लिखी जाती थी। (पत्र पैतालीसवां--३)

एट्रूस्कन लिपि : एट्रूस्कन लोग, कुछ इतिहासकार मानते हैं कि एशिया मायनर से इटली (लेटियम Latium के नाम से प्रसिद्ध था) आये और कुछ मानते हैं समुंद्री राह से इटली पर आक्रमण करते हुये आये। इनकी संस्कृति १००० ई० पू० पुरानी मानी जाती है। इनका अन्तिम राजा तारकीन ५०६ ई० पू० रोम के आदि निवासियों द्वारा निकाल दिया गया तब रोम राज्य की नींव पड़ी। इनकी २६ अक्षरों की वर्णात्मक लिपि की उत्पत्ति युनान की लिपि द्वारा लगभग ८ वीं शताब्दी ई० पू० हुई। यह सीधे से बायें लिखी जाती थी। (पत्र सैंतीसवां अड़तीसवां-५)

केल्टिक लिपि : केल्ट लोग आर्य (जो योरोप में इन्डोयोरोपियन ग्रूप कहलाते हैं) थे जो मध्य योरोप में रहा करते थे। चौथी शताब्दी ई० पू० में यह जाकर आयरलैन्ड में बस गये। चौथी शताब्दी ईसवी सन में २० अक्षरों की एक वर्णात्मक लिपि की उत्पत्ति ओगम के नाम से की। इस लिपि का नाम ओगमा देवता के नाम पर रखा गया जैसे भारत में ब्राह्मी लिपि का नाम ब्रह्मा के नाम पर रखा गया। इस वर्णमाला की उत्पत्ति में यहां के मूल निवासी ड्रूड नामो पण्डितों ने काफी सहयोग दिया। (पत्र सैतालिसवां--१)

बार्डिक लिपि : बार्ड आयर लैन्ड और वेल्स के बड़े ज्ञानी पण्डित थे जो केल्टों के आने से पहले रहते थे। परन्तु कुछ इतिहासकार मानते हैं कि बार्ड और ड्रूड दोनों केल्ट जाति के ही थे। यह लोग पण्डित थे, युद्ध में फौज के सरदार भी हुआ करते थे और महाकवि भी थे। इन लोगों ने तीसरी शताब्दी ई० पू० में बार्डिक लिपि को अपने ही नाम पर बनाया। इसमें ४० अक्षर होते हैं। (पत्र छियालिसवां--१)

रूनिक लिपि : इस लिपि का जन्म लगभग ५ वीं शताब्दी में हुआ। यह २४

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अक्षरों की वर्णात्मक लिपि है। 'रून' शब्द प्राचीन जर्मनी भाषा के 'रू' से निकला है जिसके अर्थ हैं "गुप्त" (छिपी हुई) इसके भिन्न भिन्न नाम भिन्न भिन्न देशों में पड़ गये जैसे जर्मनी में इस लिपि का नाम रूनेन, नार्वे और स्वीडन में फुथोर्क प्राचीन जर्मनी में (गोथ लोग रहते थे) रूना, आइस लैन्ड में रूनर। (पत्र छियालिसवां-२)

रूना लिपि : इसको पुरानी जर्मनी लिपि भी कहते हैं। (पत्र छियालिसवां-३)

सीरिलिक लिपि : मोराविया, जो आज जेकोस्लावैकिया देश का एक अंग है, आठवीं शताब्दी में एक रियासत थी। वहां के युवराज रोस्टिस्लाव ने युनानी-पौराणिक-चर्च के पादरियों को ऐसे धर्म प्रचारकों को भेजने के लिये पत्र लिखा जो स्लाव जाति के लोगों को उनकी भाषा में ही इसाई धर्म का प्रचार कर सकें। उस समय रोम के पादरियों का दबदबा खूब शक्ति के साथ बढ़ रहा था। किसी मनुष्य की चाहे वह राजा हो या फकीर, मजाल नहीं थी कि धामिक राजनीतिक व सामाजिक क्षेत्र में कोई कार्य रोम के पादरियों की आज्ञा के विरुद्ध कर सके। उस समय इसाई धर्म प्रचार की तीन भाषायें ही मुख्य थीं, युनानी, लैटिन और हेब्रू। स्लाव जाति के लोग पूर्वी योरोप में काफी दूर तक फैले थे और उनके पास अपनी कोई लिपि न थी। बाद में यह जाति जेकोस्लावैकिया, युगोस्लेविया व बुलगैरिया के देशों में बट गई। उधर बुलगैरिया के राजाओं (बोरिस, सीमीयन) ने भी बुलाने के प्रयत्न किये।

इस पर बैजन्ताइन सरकार ने दो भाईयों को, जिनका नाम कान्सटैन्टाइन (बाद में यही संत सीरिल कहलाये गये) और मेथॉडियस था भेजा और उन लोगों ने अपने अथक परिश्रम से स्लाव लोगों को न केवल बाइबिल की मीठी वाणी सुनाई परन्तु एक लिपि भी तैयार की। यह दोनों संत ८६१ में पहुंचे परन्तु संत सीरिल की मृत्यु ८६८ में हो गई।

सीरिलिक लिपि आज मुख्यता रूस, बुलगैरिया व यगोस्लाविया में प्रयोग की जाती है। बुलगैरिया में इसकी दो शाखायें हो गई थीं। पहली जो संत सीरिल ने बनाई थी ग्लैगोलिथिक थी (पत्र अड़तालिसवां-१) दूसरी जो संत सीरिल ने

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

संशोधित की होगी या बाद बनाई होगी या वहां के लोगों ने कुछ संशोधन किया होगा पता नहीं, सीरिलिक कहलाई। यह ग्लैगोलिथिक के १५० वर्ष बाद प्रचलित हुई। इसमें ३० अक्षर पाये जाते हैं। (पत्र अड़तालिसवां-२)

गोथिक लिपि : गोथ लोगों के पादरी उलफिलास ने ३७० ई० स० में रून-लिपि के द्वारा यह लिपि तैयार की। गोथ लोग बाल्टिक सागर के गॉट लैन्ड द्वीप के मूल निवासी थे जो योरोप में आकर बस गये। इसमें २७ अक्षर होते हैं। (पत्र इक्तालीसवां)

हंगेरियन लिपि : यह लिपि हुणों ने, जो सीथिया (काले सागर के उत्तर में है) से आकर यहां बस गये थे, ३७६ ई० में बनायी। हुण, मगोल जाति के थे जिन्होंने योरोप में खूब लूट मार मचाई। हंगेरी का नाम भी हुणों के नाम पर पड़ा। यह लिपि दायें से बायें लिखी जाती थी परन्तु अन्य भाषाओं से मिश्रित होकर बायें से दायें लिखी जाने लगी। (पत्र छियालिसवां-४)

जॉर्जियन लिपि : इस लिपि के जन्म दाता संत मिश्राप माने जाते हैं जिन्होंने पांचवीं शताब्दी में इसका प्रचार किया। आरम्भ में ३० अक्षर थे बाद में आवश्यकता पड़ने पर ६ और जोड़ लिये गये। यह सीधे से बायें लिखी जाती है। इसके तीन प्रकार हैं :—

१-खुत्सुरी - पुजारियों की लिपि। (पत्र उनचासवां-१)
२-नस्ख - जनता की लिपि। (पत्र इक्तालीसवां)
३-मखद्रूली - फौजियों की लिपि। (पत्र इक्तालीसवां)

आरमेनियन लिपि : उत्तरी पर्शिया के निवासी आरमेनिया प्रदेश में रहने के कारण आरमेनियन कहलाते थे और उन्होंने तीसरी शताब्दी में ईसाई धर्म को अपना लिया। इनकी लिपि के भी जन्मदाता संत मिश्राप ही माने जाते हैं। इसमें २८ अक्षर थे पर बाद में १० जोड़ लिये गये। (पत्र उनचासवां-२)

रोमन लिपि : जिस प्रकार से जापान में सब कुछ चीन से आया उसी प्रकार रोम में सब कुछ युनान से आया। इटली देश का पुराना नाम लैटियम तथा लैटिन

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

था इसी कारण इस लिपि का प्राचीन नाम लैटिन भी था यह लिपि संसार की सबसे अधिक प्रयोग में आने वाली लिपि है और इसका विस्तार राम राज्य के विस्तार के साथ हुआ। रोम राज्य समाप्त हो गया परन्तु अपनी लिपि की छाप छोड़ कर आया। इस लिपि का जन्म युनानी व एट्रूस्कन लिपियों द्वारा हुआ है। पहले तो रोम (इटली) पर एट्रूस्कन राजा तारकीन का राज्य था परन्तु ५०६ ई० पू० में रोम के आदि निवासियों ने क्रान्ति करके उसको समाप्त कर दिया और रोम राज्य की नींव डाली। यह लिपि पहले दायें से बायें लिखी जाती थी परन्तु बाद में बायें से दायें लिखी जाने लगी। इसमें २६ अक्षर हैं। (पत्र ३७ वां ६, ४६ वां)

रूस की लिपि : सिरिलिक लिपि से इसकी उत्पत्ति हुई। (पत्र अड़तालिसवां--३)

सर्बियन लिपि : इसकी उत्पत्ति सीरिलिक लिपि से १० वीं शताब्दी में हुई। सर्बिया देश अब युगोस्लाविया में लुप्त हो गया। (पत्र अड़तालिसवां--४)

एशिया के अन्य देशों की लिपियां

मंगोल लिपि : दूसरे महायुद्ध के पश्चात एशिया और योरोप के नक्शों में बहुत परिवर्तन हुआ। राष्ट्र एक, देश कई देश कई, राष्ट्र एक हो गया। इसी प्रकार मंगोलिया देश भी विभाजित हो गया इनर और आउटर मंगोलिया। इनर मंगोलिया चीन का होगया और उसी में लुप्त हो गया और दूसरा स्वतंत्र हो गया। यहां एक तो सीरिलिक लिपि का प्रयोग होता है दूसरा मंगोल लिपि का प्रयोग होता है। यह लिपि ऊपर से नीचे लिखी जाती है। इस लिपि में अक्षरों के रूप बदल जाते हैं। यदि शब्द के शुरू में लिखा तो एक रूप वही अक्षर मध्य में आया तो दूसरा रूप, वही अक्षर यदि अन्त में आया तो तीसरा। (पत्र ५०वां–१)

तिब्बत की लिपि : यहां लिपि का जन्म एक बौद्ध भिक्षु व तिब्बत निवासी के सहयोग से ७ वीं शताब्दी में हुआ। यह संसार के अन्य देशों की पहुंच के बहुत बाहर रहा परन्तु भारत व नेपाल के सम्पर्क में काफी रहा। वर्तमान तिब्बत की वर्णमाला इस प्रकार है। (पत्र पचासवां--२)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बर्मा की लिपि : यहां के प्राचीन निवासी तैलंग कहलाते थे। भारतीय संस्कृति का प्रभाव इस देश पर बहुत पड़ा है। यहां लिपि की उत्पत्ति ८ वीं शताब्दी में हुई इस लिपि में तेलुगू-कनड़ी का अधिक समावेश है। (पत्र इक्यावनवां–१)

मो-सो लिपि : उत्तरी बर्मा की मीकांग वादी सें लगभग १३ वीं शताब्दी में इस लिपि का जन्म हुआ। इस लिपि के ३७६ चिन्ह १८८६ में बोर्न (F. S. A. Bourne) को मिले। कुछ लोगों का विचार है कि इस लिपि में ३००० चिन्ह होते हैं। अब यह अधिक प्रचलित नहीं है। (पत्र छप्पनवां--१)

थाई लिपि : थाईलैन्ड में पाई जाती है। थाई लोग चीन से आकर यहां बस गये। यहां की लिपि में ७ वीं शताब्दी में चीनी लिपि का अधिक समावेश था बाद में भारतीय तेलुगू-कनड़ी का प्रभाव पड़ा। वर्तमान लिपि का जन्म राजा रूआंग द्वारा १० वीं शताब्दी में हुआ। इनकी पहली राजधानी अयोध्या के नाम से थी। (पत्र इक्यावनवां--२)

कम्बोज लिपि : आदि वासिओं की भाषा में खिमिर जिससे कम्बोडिया इस देश का नाम पड़ा। यह बर्मा के पूर्व में है। संस्कृत में इस देश का नाम खम्बोज है जो इस राष्ट्र के जन्म दाता खाम्बे के नाम पर पड़ा। इस बात को लगभग २००० वर्ष हुये। १२ वीं शताब्दी में यह देश अपने पूरे योवन पर था और उसी काल में यहां लिपि का जन्म हुआ। प्रचलित लिपि में ५५ अक्षर पाये जाते हैं। (पत्र इक्यावनवां-३)

जावा की लिपि : जावा द्वीप इन्डोनेशिया देश का एक भाग है। भारत के हिन्दू यहां पहली शताब्दी में पहुंचे और अपने साथ संस्कृति व भाषा भी ले गये। सुमात्रा और जावा निवासिओं में नवीं शताब्दी तक युद्ध चलते रहे। बाद में जावा में राजधानी बनी और १४०० तक कार्य चलता रहा। १५ वीं शताब्दी में भारतीय-मुसलमानों ने आक्रमण किया और इन्डोनेशिया इस्लाम के झण्डे के नीचे आ गया परन्तु जावा व बाली के निवासियों ने अपना हिन्दू धर्म न छोड़ा जो आज तक मानते चले आ रहे हैं। यहां लिपि का जन्म चौथी शताब्दी में

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हुआ। यहां दो प्रकार की लिपियां बनीं, प्राचीन (पत्र बावनवां-१) और नवीन (पत्र बावनवां -२) परन्तु अब राजकीय लिपि रोमन ही हो गई है।

सुमात्रा की लिपि : यहां पाचवीं शताब्दी में हिन्दू राजा श्रीविजय का राज्य था। सातवीं शताब्दी में यहां महायान बौद्ध-धर्म पहुंचा। १४ वीं शताब्दी में जावा निवासिओं ने अपना अधिकार कर लिया। सुमात्रा के मूल निवासी बटक थे जो बाद में इसाई हो गये। इनके नाम पर यहां की प्राचीन लिपि का नाम बटक लिपि पड़ा जिसका जन्म छठी शताब्दी में हुआ। (पत्र बावनवां--३)

बाली लिपि : बाली के निवासी हिन्दू और जावा निवासिओं के मिश्रण से हैं। बाली लोगों की भाषा कावी है जो गुजरातिओं ने प्रदान की। लिपि का छठी शताब्दी में जन्म हुआ। (पत्र त्रेपनवां-१)

बगमेसी लिपि : यह इन्डोनेशिया देश के सिलेबीज़ द्वीप में पाई जाती है। इसका जन्म दसवीं शताब्दी में हुआ। (पत्र त्रेपनवां-२)

मिन्हासा लिपि : यह लिपि इन्डोनेशिया के सिलेबीज़ द्वीप के उत्तरी भाग मिनाडो के ३०० ग्रामों में प्रचलित थी। यह चित्रात्मक लिपि थी। इसके जन्म का तथा लोप का ज्ञान नहीं। (पत्र छप्पनवां-२)

सिन्हाली लिपि : भारत के दक्षिण में एक बड़ा द्वीप है, जहां २५०० वर्ष पहले उत्तर भारत के लोग जाकर बसे। इसका नाम सिंहल द्वीप था, ब्राह्मण इसको लंका कहने लगे, १६ वीं शताब्दी में पुर्तगीज़ ने ले लिया और इसका नाम जीलॉन रखा जिससे सीलोन हुआ। १७६८ में अंग्रेज़ों ने अपने कब्जे में कर मद्रास प्रदेश में मिला लिया। १८०५ में देश अलग हो गया। लगभग २३०० वर्ष पूर्व यहां बौद्ध धर्म गया और तभी यहां लिपि का जन्म हुआ जिसमें बाद में तामिल लिपि का बहुत प्रभाव पड़ा और वर्तमान लिपि ५० अक्षरों की बनी। (पत्र त्रेपनवां-३)

अमेरिका के देशों की लिपियां

आजकल उत्तरी व दक्षिणी अमेरिका के सारे देशों में भाषायें तो भिन्न-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

भिन्न पाई जाती हैं परन्तु उन सब की लिपि एक है। यहां के आदि निवासिओं की लिपियां, जो अब नष्ट हो चुकी हैं और कहीं कहीं पाई भी जाती हैं, यहां दी जा रही हैं। अमेरिकन-रेड इन्डियन्स पर योरोप निवासिओं ने बड़े अत्याचार किये और उनकी सभ्यता व संस्कृति नष्ट करने में कोई कसर न उठा रखी। और यह सब हुआ उसी अहिंसा और शान्ति के झण्डे के नीचे जिसको एक दिन भगवान ईशू ने मानव कल्याण के लिये विश्व में फैराया था।

ऐज़टेक लिपि : यह चित्रात्मक लिपि बड़े पशुओं की खाल पर लिखी जाती थी जो ऐज़टेक लोगों ने, जो मेक्सीको में रहते थे और १५ वीं शताब्दी में उन्नति के शिखर पर थे, लगभग १४ वीं शताब्दी में तैयार की। (पत्र ५४ वां)

माईयन लिपि : माईया (अमेरिकन-रेड-इन्डयन) जाति के लोग मध्य अमेरिका (पनामा नहर के आस पास) में रहते थे। लगभग २६०० वर्ष पूर्व अपने सभ्य होने का प्रमाण अपने भव्य मन्दिरों द्वारा देते हैं। इन्होंने अपनी चित्रात्मक लिपि बनाई जिसको माईयन हिरोग्लिफ्स भी कहते हैं क्योंकि यह भी पवित्र खुदाई ही है। इन्होंने अपना कैलेन्डर लगभग २५०० वर्ष पूर्व १८ महीनों का बनाया और हर महीना २० दिन का बनाया तथा एक महीना २५ दिन का कर दिया। इन्होंने मिश्र जैसे बड़े पिरेमिड भी पहली से छठी शताब्दी तक बनाये। किस प्रकार उन्होंने चार देवता चार दिशाओं के लिये बनाये। (पत्र ५७ वां-१, ४)

एस्कीमो लिपि : ग्रीन लैण्ड और एलास्का की बर्फ में रहने वाले आदि वासी एस्कीमो कहलाते हैं। इन्होंने अपनी लिपि सम्भवतः १४ वीं शताब्दी में बनाई। (पत्र पचपनवां-१)

क्री लिपि : यह लिपि अमेरिकन-रेड-इन्डियन की एलोकियन जाति ने, जो कनाडा देश के हुडसन खाड़ी के आस पास रहती है और लगभग १५००० जनसंख्या है, बनाई। इस लिपि में बाइबिल के कुछ भाग भी छप चुके हैं। इस लिपि का जन्म १८३३ में हुआ। (पत्र सत्तावनवां-२)

चिरोकी लिपि : यह लिपि भी रेड-इन्डियन की चिरोकी जाति के एक मनुष्य

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चिकवाया ने १८२१ में बनाई। चिकवाया शिक्षित नहीं था परन्तु बुद्धिमान था। इसमें ८५ चिन्ह होते हैं। (पत्र सत्तावनवां-३)

अफ्रीका के देशों की लिपियाँ

अफ्रीका मनुष्य-विज्ञान-वेत्ताओं (Anthropologists) और धार्मिक अध्ययन-कर्ताओं (Theologists) का वर्षों तक एक स्कूल बना रहा। उधर व्यापारियों ने धन एकत्र करने के लिये अपना शोषण स्थान बनाया और योरोप के देशों ने अपने उपनिवेश बना कर अफ्रीका को हर प्रकार से लूटा। परन्तु फिर अफ्रीका जागा, शनै शनै स्वतंत्र हुआ और अब संसार के अन्य देशों के साथ कंधे से कंधा मिला कर चलने को तत्पर रहता है।

एन्सिब्दी लिपि : इस लिपि की उत्पत्ति नाइजेरिया वासियों ने की। समय ज्ञात नहीं। उसके अर्थ इस प्रकार है :—
१–विवाहित प्रेम। २–विवाहित प्रेम तकिया सहित। ३–विवाहित प्रेम दो तकियों सहित। ४--पति-पत्नि को पृथक करने वाला झगड़ा। ५--जोर का झगड़ा। ६--स्त्री ६ बच्चों सहित। ७--एक घर एक पुरुष व तीन स्त्रियों सहित। ८-एक घर दस बच्चों, दो स्त्रियों व एक पुरुष के साथ। (पत्र छप्पनवां-३)

बामुन लिपि : इस चित्रात्मक लिपि का जन्म १६०७ में बामुन जाति के सुल्तान द्वारा कैमेरून देश में हुआ। इसमें लगभग १००० चिन्ह पाये जाते हैं जो गूढ़ाक्षरों की तरह श्री ओ० जी० एस० क्राफॉर्ड ने पढ़े। (पत्र अट्ठावनवां--१)

वाइ लिपि : इस लिपि का जन्म १८२६ में सीरे लियोन (Sierre Leone) पश्चिमी अफ्रीका के देश में हुआ। इसके जन्म दाता श्री मोमूलू दुवालू बुलेके हैं। इसमें २२६ चिन्ह पाये जाते हैं। इसको १८४८ में कमोडर फॉर्ब्स ने पढ़ा। (पत्र अट्ठावनवां-२)

सोमाली लिपि : इस लिपि का जन्म इसी शताब्दी में इमाम युसुफ द्वारा हुआ। इसमें पांच स्वर और २२ व्यञ्जन हैं और अफ्रीका के सोमाली देश में पाई जाती है। (पत्र अट्ठावनवां--३)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पॉलीनेशिया की लिपि

प्रशांत महासागर (Pacific Ocean) में हजारों द्वीप पाये जाते हैं जिनकी सभ्यता काफी प्राचीन मानी जाती है। यह द्वीप योरोप व अमेरिका के देशों ने उपनिवेश बना लिये हैं, उनमें से कुछ स्वतंत्र भी हो चुके हैं। इन्हीं द्वीपों के समूह में एक ईस्टर द्वीप समूह भी है, जो दक्षिण अमेरिका के चिली देश का उपनिवेश है और २५०० मील पश्चिम में है। यहीं लगभग २०० भव्य मूर्तियां प्राप्त हुई हैं।

ईस्टर द्वीप की लिपि : डच एडमीरल रागेवीन ने इसको १७७२ में ईस्टर के दिन मालूम किया। इस कारण इसका नाम ईस्टर द्वीप पड़ा। यहां की लिपि को कोहन-रंगो-रंगो कहते हैं जो दायें से बायें और बायें से दायें लिखी जाती थी परन्तु वह चित्रात्मक थी जिनमें संकेत पाये जाते हैं। इस द्वीप को संसार की नाभि माना गया है। कुछ ऐन्थ्रोपॉलोजिस्ट्स ने यहां के निवासियों को आर्य माना है जो सूर्य के उपासक थे। इनके रहने की गुफायें पैत्रिक होती थीं। उन्हीं गुफाओं में से पत्र सैतालिसवां--२ में दिया लेख पुरातन-विज्ञान-वेत्ता श्री थोर को १९३४ में प्राप्त हुआ। (पत्र सैतालिसवां–२ में इस प्रकार पढ़िये :—
१--देवता, २--आकाश का, ३--रंगो, ४--पृथ्वी का, ५--बनाया, ६–प्रकाश। भावार्थ हुये : रंगो ने, जो आकाश और पृथ्वी का देवता है, प्रकाश पैदा किया)

कुछ अन्य लिपियां

ब्रेल लिपि : इस लिपि को एक नेत्र हीन फ्रांस के अध्यापक लुई ब्रेल (Louis Braille, 1809-1852) ने १८२९ में बनाया। १९५१ में भारत-सरकार ने हिन्दी ब्रेल का निर्माण किया। इसमें केवल ६ बिन्दु होते हैं जो इस प्रकार से ⠿ रखे होते हैं और इनकी गिनती ऊपर से नीचे १, २, ३ फिर सीधे ओर की गिनती ऊपर से नीचे ४, ५, ६ की जाती है और इन्हीं बिन्दुओं से सारी लिपियां बनाई जा सकती हैं। यह बिन्दू कागज में उठे हुये छपते हैं जिनको छू कर नेत्रहीन मनुष्य पढ़ लेते हैं। इसकी वर्णमाला इस प्रकार है। (पत्र ५९वां--१ Eng., २--हिन्दी)

आशु लिपि : इसको अंग्रेजी में शार्ट हैन्ड भी कहते हैं। इसका जन्म सर आइसाक पिटमैन ने १८३७ में किया। इसी प्रणाली के आधार पर श्री राधेलाल

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

त्रिवेदी ने १९२५ में हिन्दी व उर्दू की शार्ट हैन्ड लिपि तैयार की और श्री एस० पी० सिन्ह ने १९३७ में तैयार की। इसीके कुछ अक्षर अंग्रेज़ी, हिन्दी व उर्दू के पत्र साठवां में दिये जाते हैं।

पिक्टो लिपि : इसका निर्माण डच पत्रकार करेल जॉनसन और एक जर्मन प्रो० एन्द्री एकार्ड ने मिल कर किया है। इसका शब्द कोष भी तैयार कर लिया गया है। यह आशा की जा रही है कि यह संसार की लिपि बन जाये। यदि संसार ने ५० या १०० साल में इसको अपना लिया तो कितने आश्चर्य्य की बात होगी कि मनुष्य ने हज़ारों वर्ष पहले चित्रों द्वारा लिपि का आरम्भ किया और फिर चित्रों के युग में पहुंच जायेगा। (पत्र इकसठवां--१)

वाहन-चालक लिपि : यह लिपि चिन्हात्मक है जो वाहन चालकों (कार, बस, लारी, मोटर सायकिल, रिक्शा, आटो-रिक्शा आदि) पर नियन्त्रण रखने के लिये बनाई गई है ताकि सड़क पर घटनायें कम घटें और चालक होशियार रहें। इसका जन्म इसी शताब्दी के आरम्भ में हुआ है। (पत्र इकसठवां--२)

भारती लिपि : इसका निर्माण १९४५ में स्वामी सत्य भक्त † ने किया है। इस लिपि में यह विशेषतायें हैं :— १--इसके स्वर और मात्रायें एक सरीखी हैं। २--इसमें अल्प प्राण और महा प्राण के अक्षर मिलते झुलते हैं। ३--इसमें दो व्यञ्जनों को जोड़ कर कोई अक्षर नहीं बनाया जाता। ४--मात्रायें सब सीधी ओर ही लगाई जाती हैं। ५–यह टंकण व मुद्रण के लिये बहुत उपयोगी है। (पत्र ६२वां)

भारती लिपि : इस लिपि का श्री लाल ने भारत की अन्य लिपियों के अक्षर लेकर निर्माण किया है ताकि यह सर्वमान्य हो जाये, जैसे इसका 'अ' तामिल का अ है परन्तु कुछ संशोधन के साथ। (पत्र त्रेसठवां--१)

सुगम नागरी : इसका निर्माण श्री श्रवण कुमार गोस्वामी ने किया है ताकि टंकण व मुद्रण में सुगमता से नागरी का प्रयोग हो सके। (पत्र त्रेसठवां--२)

---

† पूज्य स्वामी सत्य भक्त आज तीस वर्षों से मानव-कल्याण-कार्य में रत हैं और अभी तक ८० पुस्तकें लिख चुके हैं। उन्होंने मानव भाषा व लिपि दोनों का निर्माण किया है। आप सत्यसमाज के प्रवर्तक तथा सत्याश्रम-वर्धा के अधिष्ठाता हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अंक

अंको का जन्म उंगलियों से माना जाता है। मनुष्य गिनना उंगलियों से ही सीखा इसी कारण अंकों को लैटिन भाषा में डिजिट्स (Digitus = finger) उंगली के नाम पर कहते हैं। भारत और बेबीलोन दोनों ही गणित में सारे संसार से आगे थे। शून्य का निर्माण पाश्चात्य विद्वान बेबीलोन द्वारा मानते हैं और बहुत से भारत द्वारा। क्यों कि भारत की सभ्यता वहां से अधिक प्राचीन है इस कारण शून्य का निर्माण भारत में ही हुआ होगा।

आरम्भ काल में अक्षरों को ही अंकों का रूप दे दिया जाता था और एक अक्षर कुछ अंकों का मान लिया जाता था। बाद में अंकों के चिन्ह बने जिनको लिख कर प्रचलित किया गया। देश काल के अनुसार इनमें भिन्नता रही। (पत्र ६४ वां, ६१ वां, ४० वां, ५५ वां--२, ७ वां--२)

निष्कर्ष

जब से संसार में लिपि का जन्म हुआ, तब से अब तक विद्वानों का तथा लिपि-निर्माण-कर्ताओं का यही प्रयत्न रहा है कि बोली की ध्वनि के साथ अक्षरों का मेल ऐसा बैठे कि उसमें कोई त्रुटि न हो जो अधिकतर पाई जाती है। जैसे पॉलीफोनी या मोनोफोनी में, अर्थात अक्षर एक उच्चारण कई प्रकार के या उच्चारण एक अक्षर कई प्रकार के। अब इसके उदाहरण लीजिये। पहला रोमन लिपि में A अक्षर का उच्चारण अ, ऐ, आ, ए होता है या इन तीन K. C. Ch. अक्षरों का एक उच्चारण क होता है। दूसरा उर्दू में उर्दू के अक्षर सीन (س), स्वाद (ص), से (ث) का उच्चारण स और ते (ت), तोय (ط) का त अपना उच्चारण एक ही रखते हैं परन्तु कोई यह नहीं जानता सीन स्वाद से व ते तोय का प्रयोग कहां और क्यों किया जाय। इसके लिये उनकी व्याकरण में कोई सिद्धांत नहीं है। युनानी भाषा में कुछ शब्दों में जैसे Psychology, Pneumonia में P. व्यर्थ लगाते हैं जब कि उसका उच्चारण ही नहीं है, इसी प्रकार पुर्तगीज़ भाषा में आखरी M शान्त है और फ्रेंच भाषा में S शान्त है जैसे पंजिम (Panjim) लिखा जायेगा परन्तु पढ़ा जायेगा पंजी, लाओस (LAOS) लिखा जायेगा पढ़ा जायेगा लाओ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

यह केवल भारत देश ही है जहां लगभग २५०० वर्ष पहले ऐसी लिपि का निर्माण हुआ जिसमें ध्वनि और अक्षरों के बीच नाम मात्र अन्तर रहा। जैसे अक्षर श और ष हैं। दोनों में कहीं एक उच्चारण कहीं पृथक जैसे 'विशेष' में दोनों 'श, ष' का एक ही उच्चारण है परन्तु षट और वर्ष में उच्चारणों का अन्तर है एक में ख है और दूसरे में श। इसी ब्राह्मी लिपि से हिन्दी भी बनी। आज संसार की तमाम लिपियों में हिन्दी ही पूर्णता के समीप है यदि कुछ और संशोधन हो गये और यह अधिक वेग से लिखने योग्य बनाई जा सकी तो पूर्णता में संसार की कोई लिपि इसकी तुलना में नहीं आ सकती। एक और विशेषता हिन्दी में है कि जो अक्षरों के नाम हैं वही उसके उच्चारण हैं जैसे हिन्दी का 'ब', नाम भी 'ब' और उच्चारण भी 'ब' परन्तु इसके नाम अन्य भाषाओं अलग हैं जैसे रोमन में बी, ग्रीक में बीटा, उर्दू में बे फोनिशियन में बेथ, सीरिलिक में बुकी इत्यादि परन्तु उच्चारण 'ब' का ही होगा।

आज संसार में ४०० लिपियां हैं और २७९६ बोलियां हैं और राष्ट्र-वाद-अन्धता मानव को क़रीब नहीं आने देती। राष्ट्रवादी विचार से "जो हमारा है वह अच्छा है अच्छा ही नहीं उत्तमोत्तम है और सब राष्ट्रों को वह अपनाना चाहिये" यह शब्द दूसरों के दिलों में एक विष घोल देते हैं। राष्ट्रवाद को दृढ़ बनाने के लिये मानव समाज का शोषण और संहार हो रहा है इस कारण मैं अपने नौजवान मित्रों से इस बात की अपील करता हूं कि वह इस कहावत को "जो हमारा है वह अच्छा" बदल कर 'जो अच्छा है वह हमारा" मानें और राष्ट्रीयता को अन्तर्राष्ट्रीयता की तुलना में कम महत्व दें ताकि मानव की हर उस प्रगति में संशोधन और सुधार हो सके, जो उसको हानिकारक सिद्ध हो सकती है। विचारों में विस्तृता हो न कि संकीर्णता। आज भाषा के नाम पर अपने ही देश में कितना द्वेष फैल रहा है। मैं युवकों से अपील करूंगा कि वह भाषा व लिपि के नाम पर, राजनैतिक दलों के नाम पर तथा धर्मों के नाम पर स्वार्थी लीडरों द्वारा गुमराह न हों जो युवकों की शक्ति लगा कर अपना स्वार्थ पूरा करते हैं।

मुझे आशा है कि मेरे पाठक गण मेरी अपील पर विचार करके अपने भावी कार्यक्रम तथा विचार धारा बदलने का प्रयत्न करेंगे और अपनी शक्ति को निर्माण कार्य में लगा कर उसका सदोपयोग करेंगे।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पत्र पहला

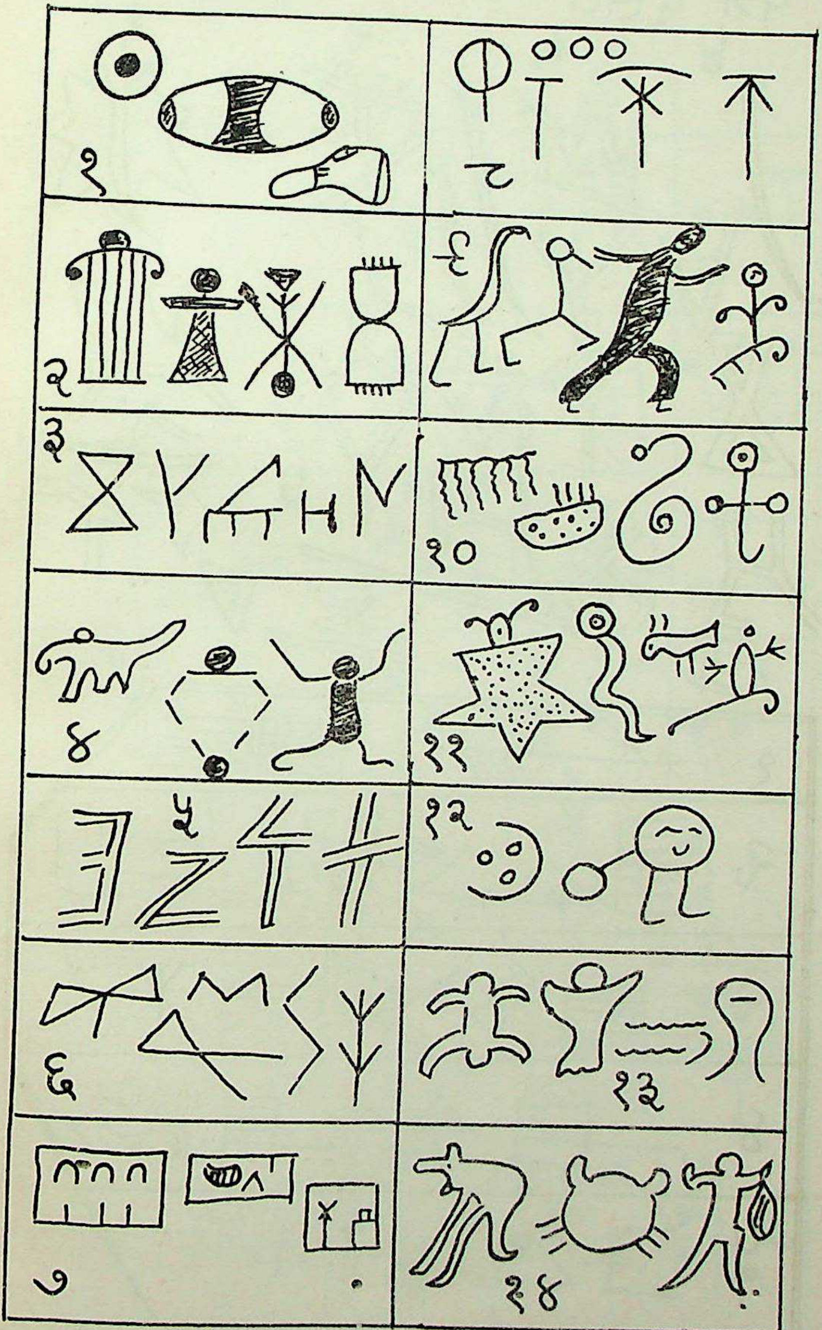

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पत्र दूसरा

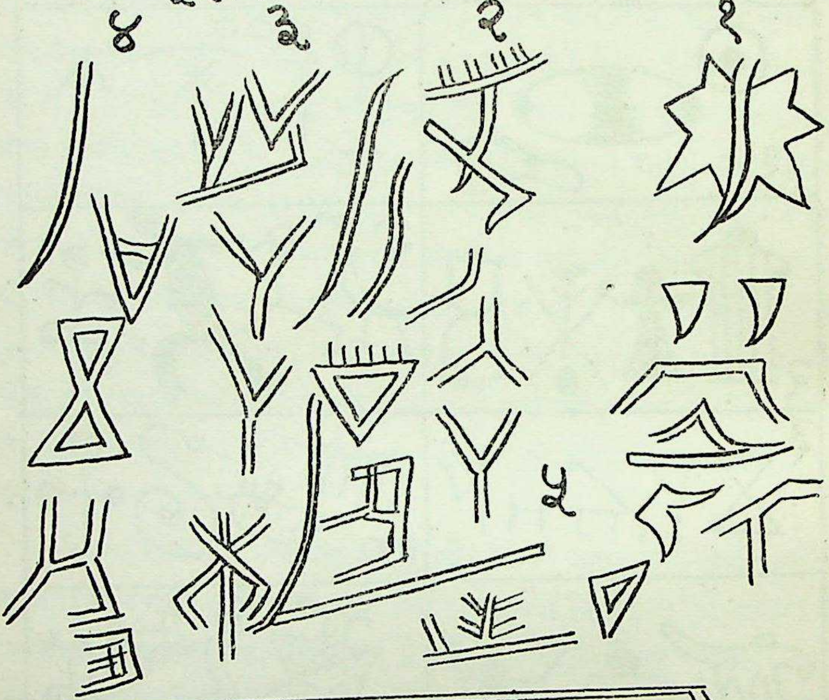

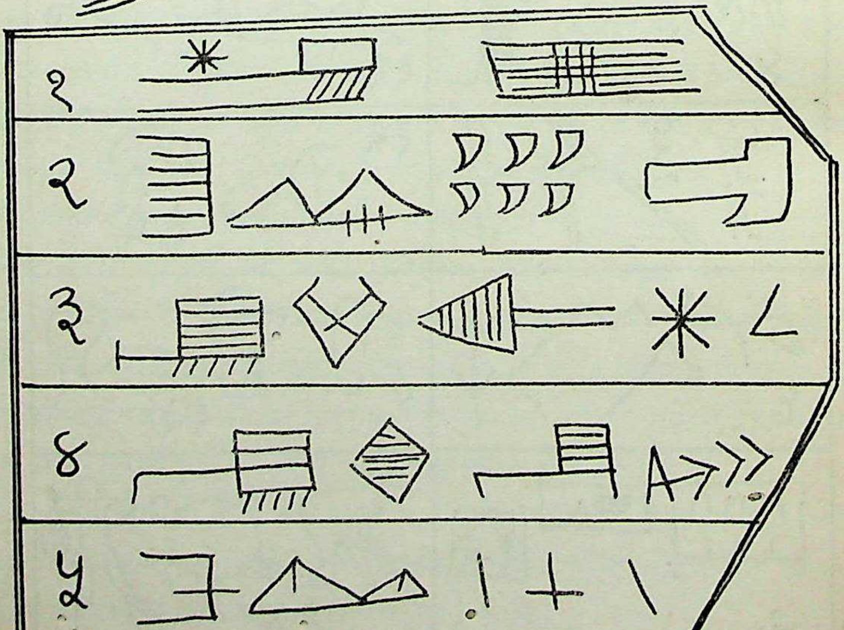

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पत्र तीसरा

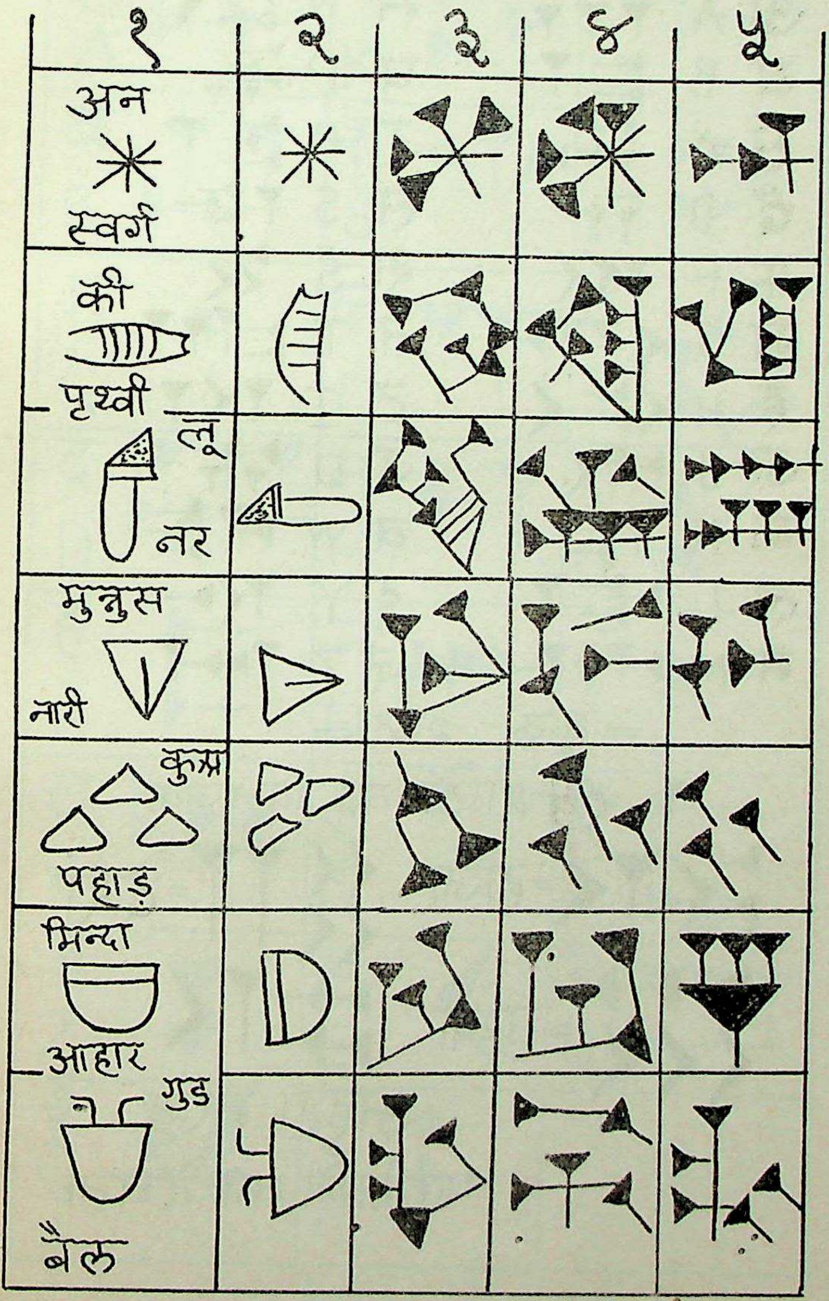

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पत्र चौथा

अ	A	न	N
ब	B	प	P
स	Č	र	R
द	D	स	S
फ़	F	श	Š
ग	G	त	T
ह	H	ट	T̲
ज	J	उ	U
क	K	व	W
ल	L	इ	Y
म	M	ज़	Z

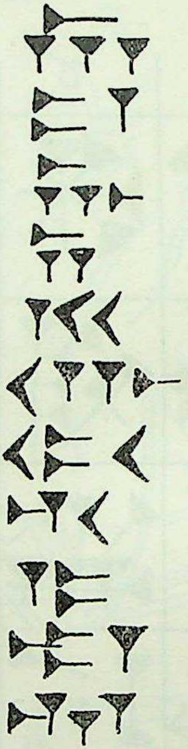

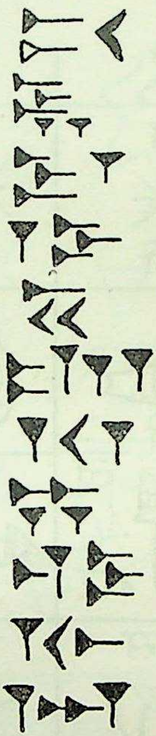

= कुछ शब्द =

= शब्दों का विभाजक

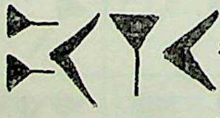 = राजा

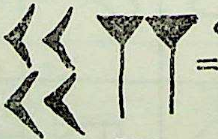 = देश

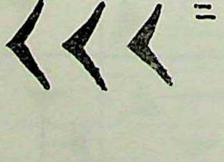 = पृथ्वी

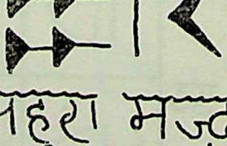

अहुरा मज़्द

पारसियों का देवता

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पत्र पाचवां

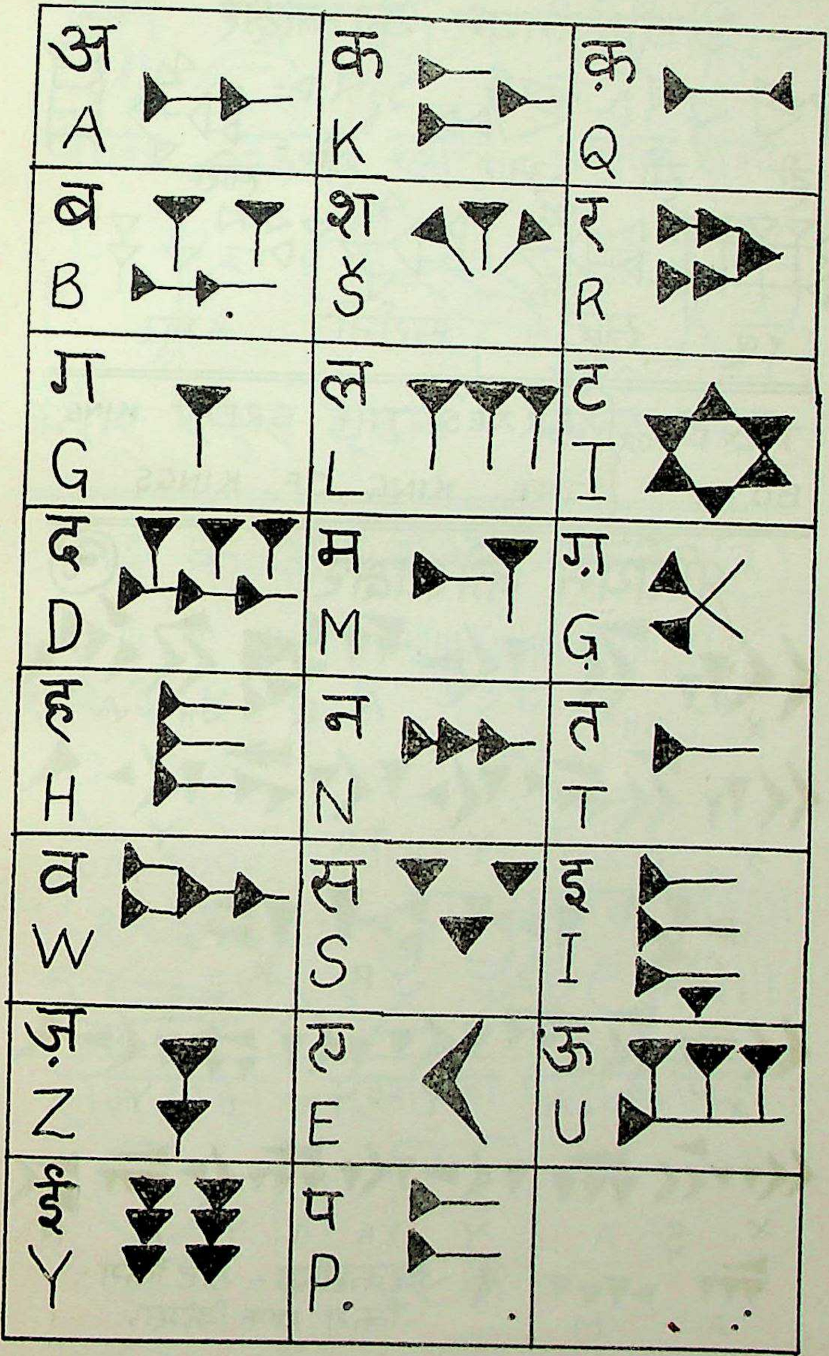

पत्र कलवां

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बैबीलोनियन कीलाक्षर (१)

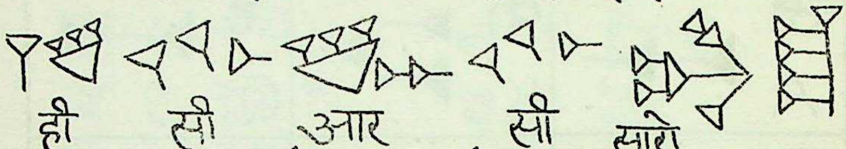

ही सी आर सी सारो

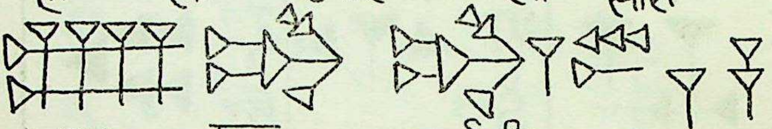

खू सार सर्शनी मार

TEXT FOR BOTH { XERXES, THE GREAT KING, THE KING OF KINGS

पर्शियन कीलाक्षर (२)

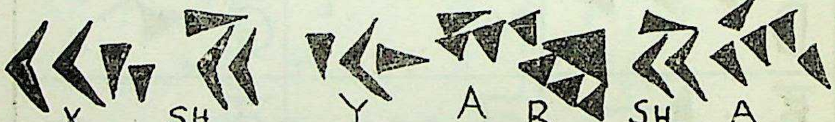

X SH Y A R SH A

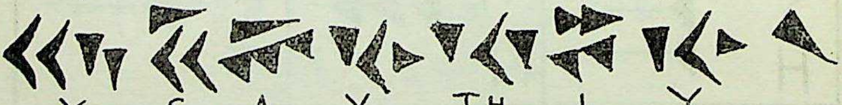

X S A Y TH I Y

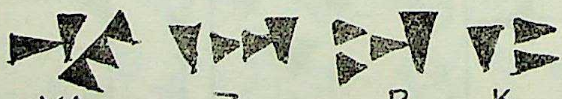

VA Z R K

X S A Y TH I Y

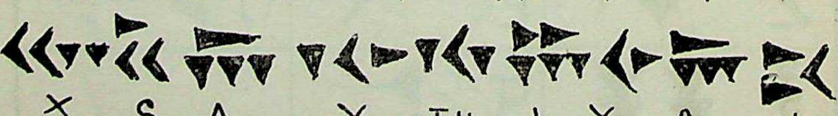

X S A Y TH I Y A N

A M

ज़रकसीज़ - ग्रेट किंग - किंग ग्राफ किंगस.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पत्र सीखो

पीटना उड़ना खाना चलना रोना

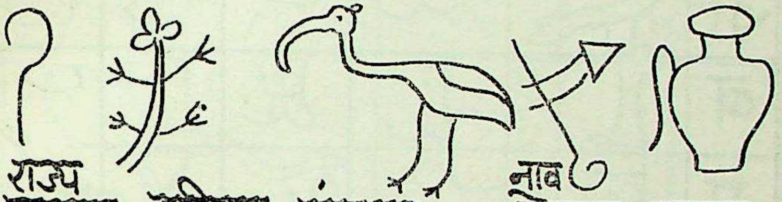

राज्य करना दक्षिण ढूंढना नाव खेना ठन्डा

मिश्र के अंक व अंक-चिन्ह ②

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १०

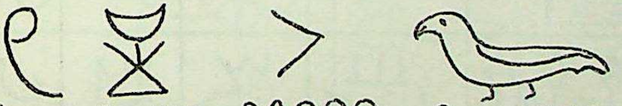

१०० १००० १०,००० १००,०००

१२३१२३ — इस प्रकार लिखिये

रामसेस - मूसा का पालक पिता

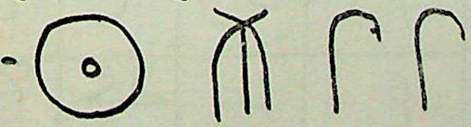

रा म. स स.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पत्र आठवाँ

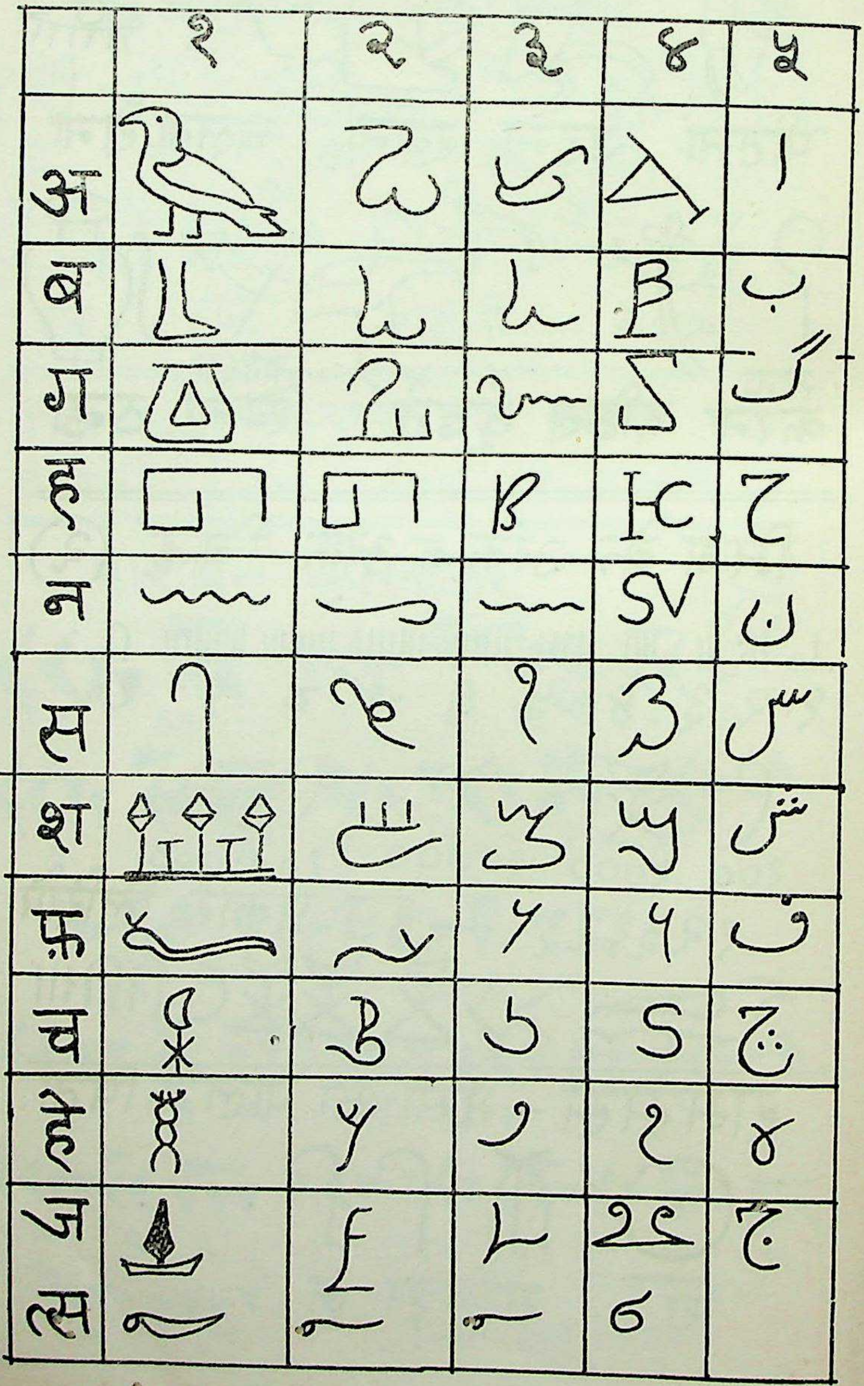

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पत्र नवां

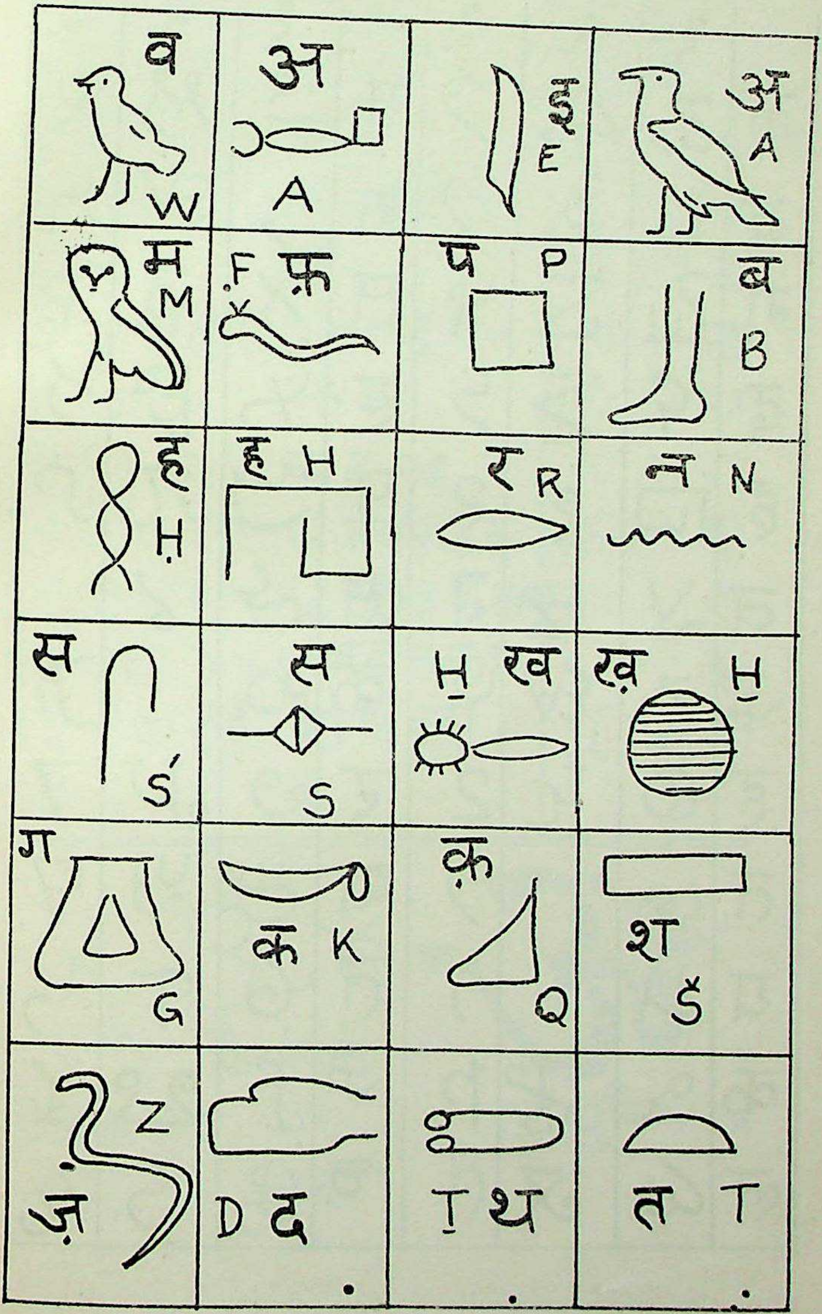

पत्र बसावां

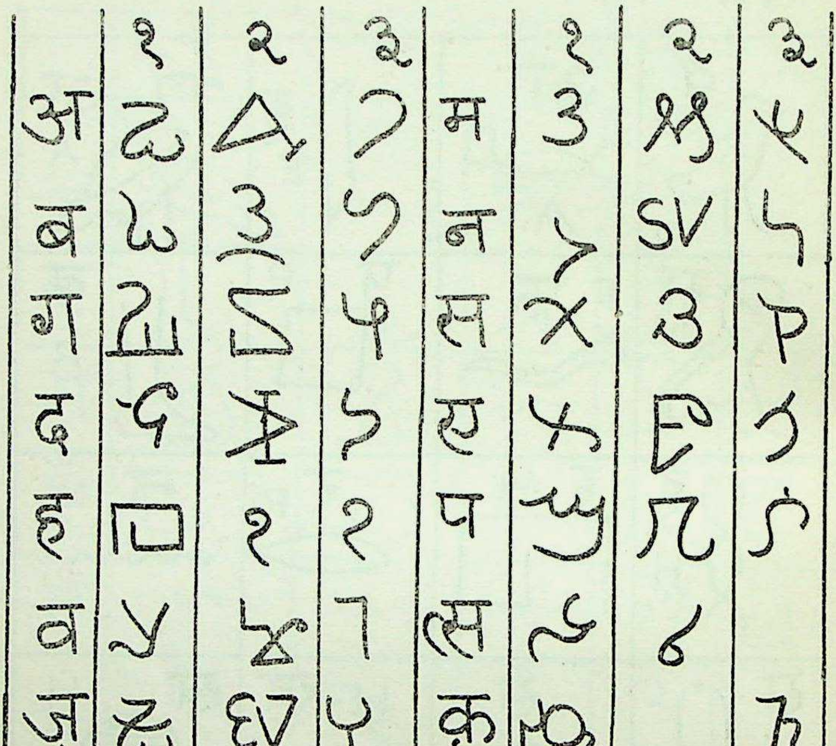

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पत्र ग्यारहवां ①

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

②

1- आ इ उ
2- ऋ ऌ
3- ए ओ
4- ऐ औ
5- ह य व र
6- ल
7- ञ म ङ ण न
8- ऋ म
9- घ ढ ध
10- ज ब ग ड द
11- ख फ ढ ठ थ
12- च ट त क प
13- श ष स
14- ह

सिन्धुघाटी	ब्राह्मी	
(	(	ट
+	+	क
□	□	ब
○	○	ठ
⊙	⊙	थ
∧	∧	ग
⩓	∧	श
ǀ	ʕ	र
∴	∴	इ
ϑ	ь	ह

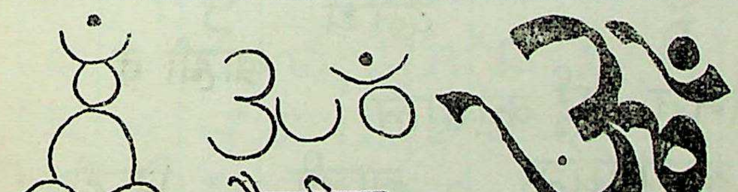

पौराणिक

वैदिक ॐ खड़ा ॐ लेटा आधुनिक ॐ

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

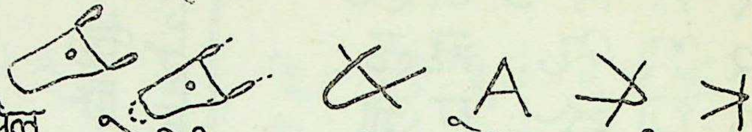

बैल
मिस्र फ़ोनेशियन अलिफ रोमन ब्राह्मी अ

घर का चित्र
सिनाइ का बेथ
ग्रीक A

B B ब

फ़ोनेशियन का बेथ ग्रीक बीटा ब्राह्मी का

G ग

मिस्र फ़ोनेशियन ग्रीक रोमन ब्राह्मी
का गिमेल गामा
केमेल (CAMEL)

तेलुगू ग

सिनायटिक द्वार फ़ोनेशियन ग्रीक डेल्टा
दलेथ

D
रोमन उर्दू का दाल ब्राह्मी द

अरमायक ब्राह्मी हिन्दी
श
प
त
मोआब का ग

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पत्र तेरहवां

	१	२	३	४		१	२	३	४
अ	स	अ	अ	ङ	ठ		०	०	ठ
आ		आ	आ	ङ	ड	२	३	५	३
इ	ः।	ॐ	ऽ	६	ढ	६	८	म	२
ई		ॐ	ऽ	६	ण	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२
उ	ट	५	ऽ	७	त	०	ह	उ	३
ऊ			क	७	थ	⊙	१	ब	ब
ए	△		ऐ	८	द	८	ध	[illegible]	[illegible]
ऐ			ऐ	९	ध	०	प	०	ए
ओ			ड	ङ	न	क	न	न	९
औ			ड	ङ	प	प	प	प	प
क	+	ल	ф	४	फ	०	८	०	८
ख	र	ख	ख	ख	ब	□	८	८	६
ग	ी	ग	ग	ग	भ	न	ऋ	ड	३
घ	ш	ш	घ	घ	म	⊔	ऋ	म	८
च	८	त	प	ड	य	ω	प	य	य
छ		८	८	३	र	(	र	र	१
ज	E	ज	ए	अ	ल	त	ल	ल	ल
झ		५	गा	५	व	◁	र	व	ल
ट	C	ट	ट	ट	श	ण	प	म	श
स	म	स	म	ङ	ह	५	स	द	उ

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पत्र चौथवां

	१	२	३	४
अ	𑀅	[illegible]	[illegible]	[illegible]
इ	𑀇	[illegible]	[illegible]	[illegible]
उ	𑀉	[illegible]	[illegible]	[illegible]
ए	𑀏		[illegible]	[illegible]
ओ	𑀑		[illegible]	
क	𑀓	[illegible]	[illegible]	[illegible]
ख	𑀔	[illegible]	[illegible]	[illegible]
ग	𑀕	[illegible]	[illegible]	[illegible]
घ	𑀖	[illegible]	[illegible]	[illegible]
ङ	𑀗		[illegible]	
च	𑀘	[illegible]	[illegible]	[illegible]
छ	𑀙	[illegible]	[illegible]	
ज	𑀚	[illegible]	[illegible]	[illegible]
झ	𑀛		[illegible]	
ञ	𑀜		[illegible]	
ट	𑀝	[illegible]	[illegible]	[illegible]
ठ	𑀞	[illegible]	[illegible]	[illegible]
ड	𑀟	[illegible]	[illegible]	[illegible]
ढ	𑀠		[illegible]	[illegible]

	१	२	३	४
ण	𑀡	[illegible]	[illegible]	[illegible]
त	𑀢	[illegible]	[illegible]	[illegible]
थ	𑀣	[illegible]	[illegible]	[illegible]
द	𑀤	[illegible]	[illegible]	[illegible]
ध	𑀥	[illegible]	[illegible]	[illegible]
न	𑀦	[illegible]	[illegible]	[illegible]
प	𑀧	[illegible]	[illegible]	[illegible]
फ	𑀨	[illegible]	[illegible]	
ब	𑀩	[illegible]	[illegible]	
भ	𑀪	[illegible]	[illegible]	[illegible]
म	𑀫	[illegible]	[illegible]	[illegible]
य	𑀬	[illegible]	[illegible]	[illegible]
र	𑀭	[illegible]	[illegible]	[illegible]
ल	𑀮	[illegible]	[illegible]	[illegible]
व	𑀯	[illegible]	[illegible]	[illegible]
श	𑀰	[illegible]	[illegible]	[illegible]
ष	𑀱	[illegible]	[illegible]	[illegible]
स	𑀲	[illegible]	[illegible]	[illegible]
ह	𑀳	[illegible]	[illegible]	[illegible]

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पत्र पन्द्रहवाँ

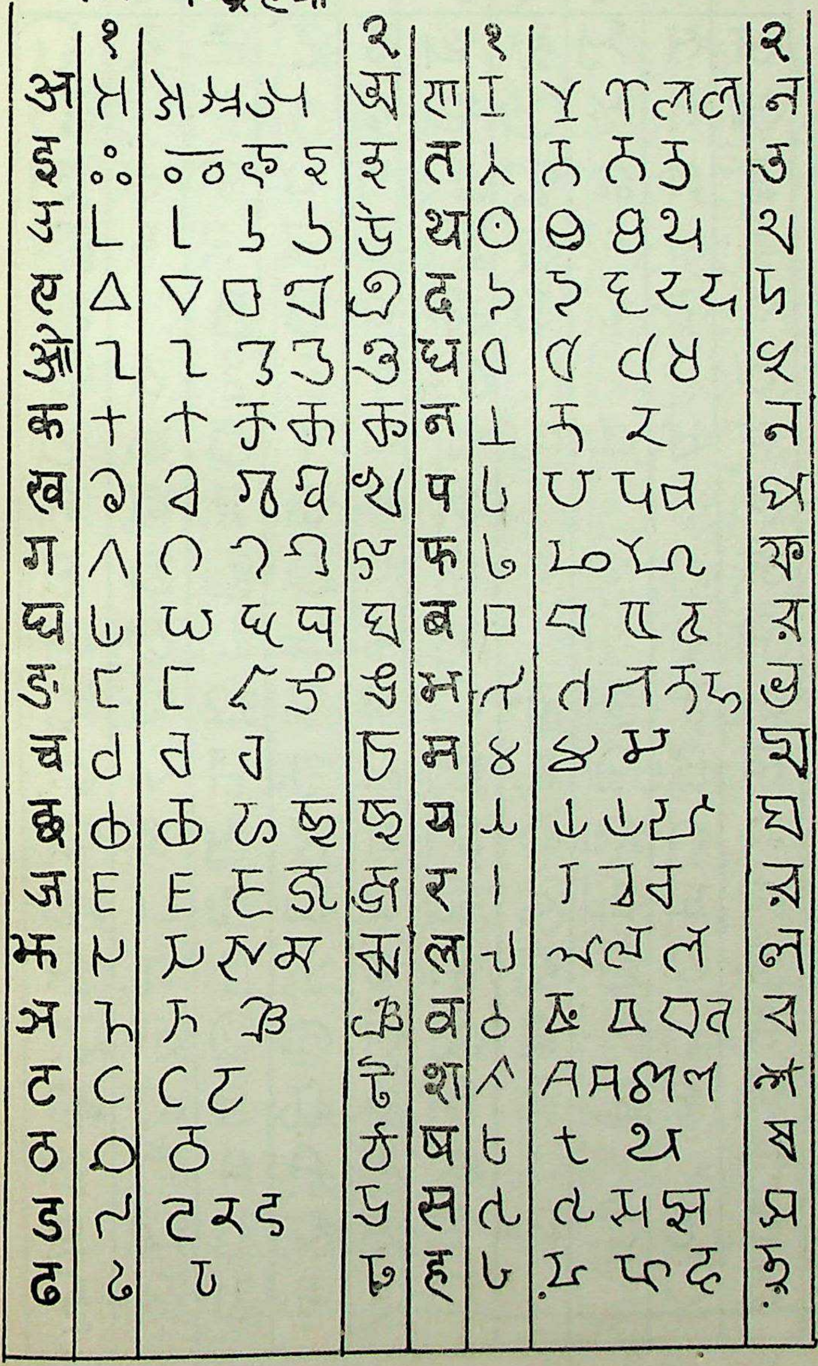

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पत्र सोलहवाँ

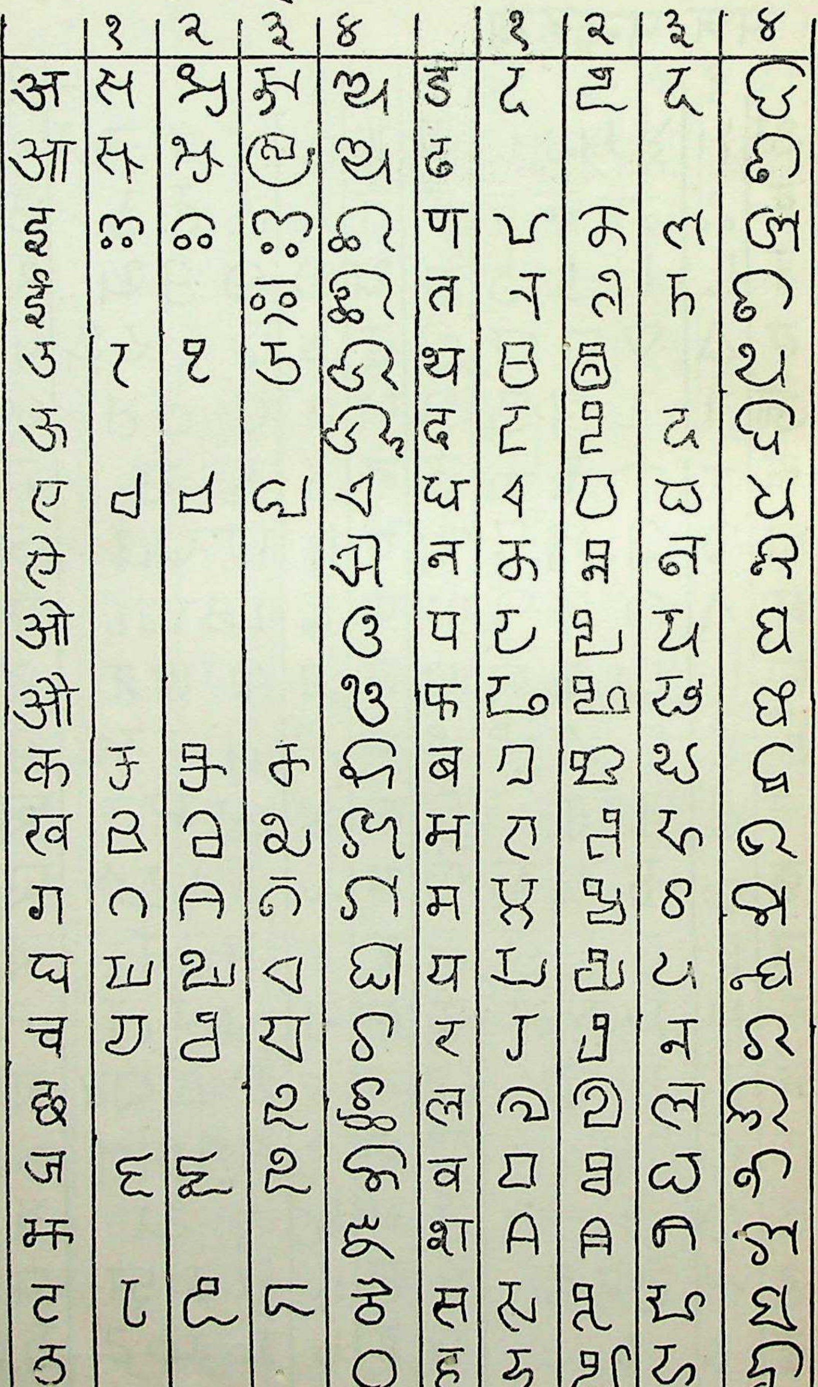

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पत्र सत्तरहवा

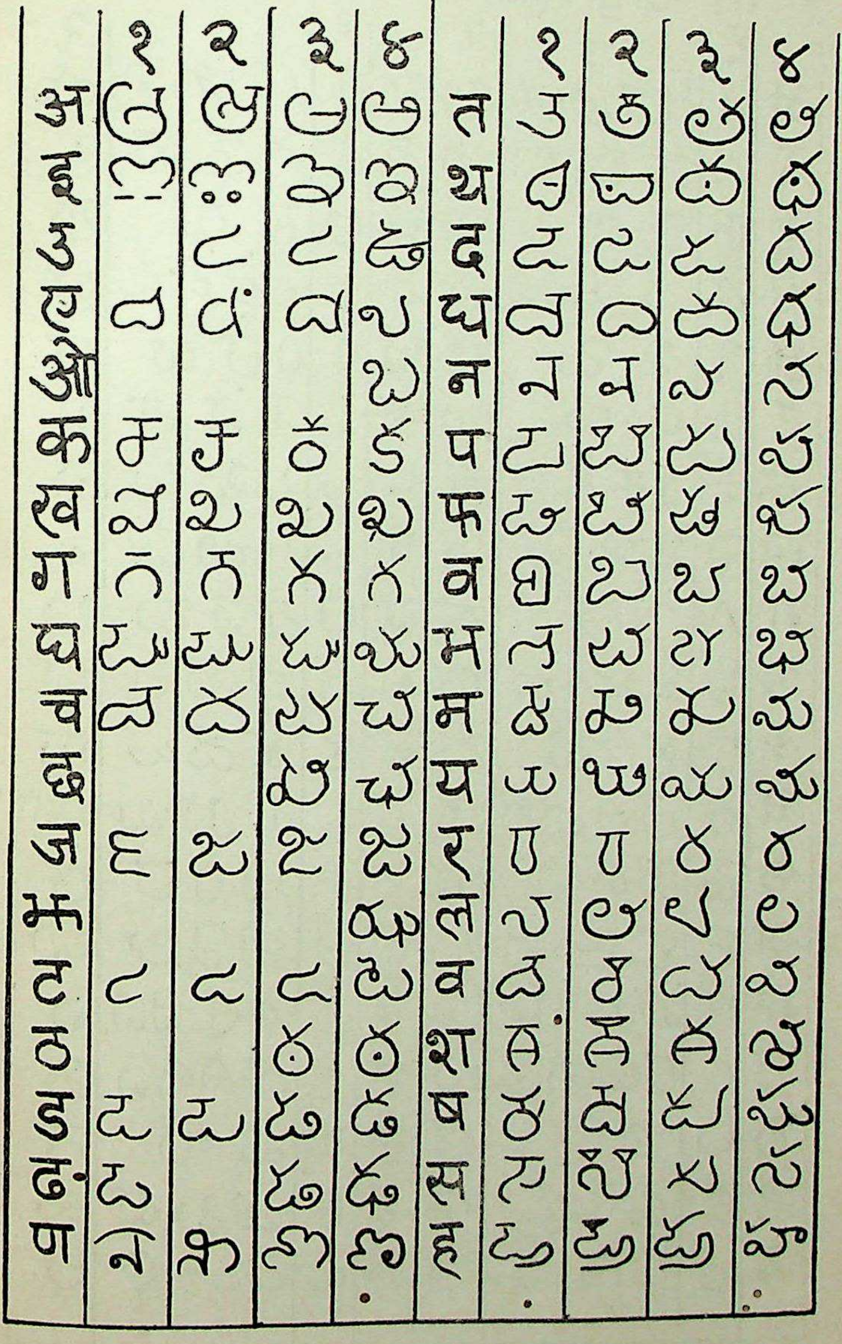

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पत्र अठारहवां

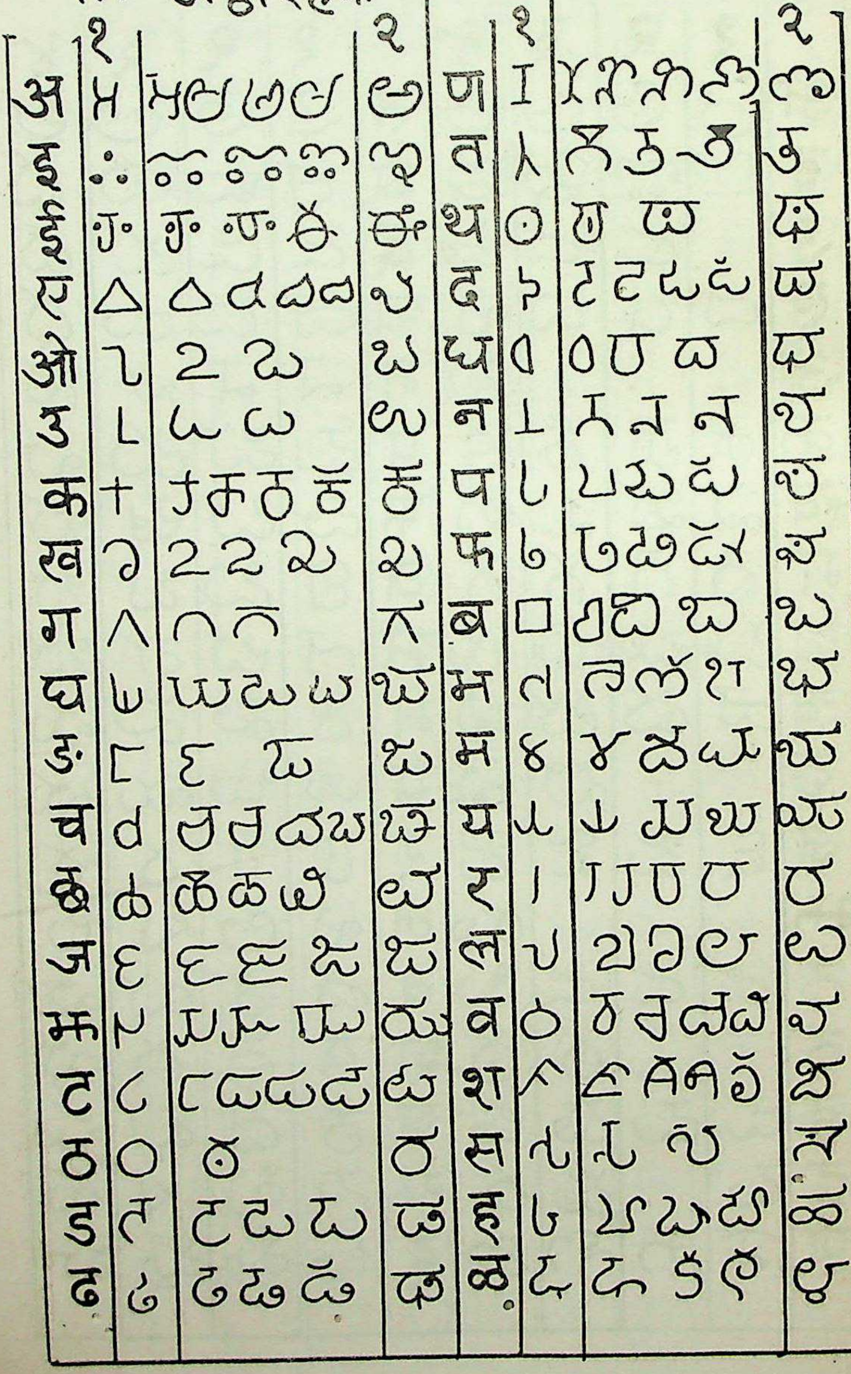

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पत्र उन्नीसवां

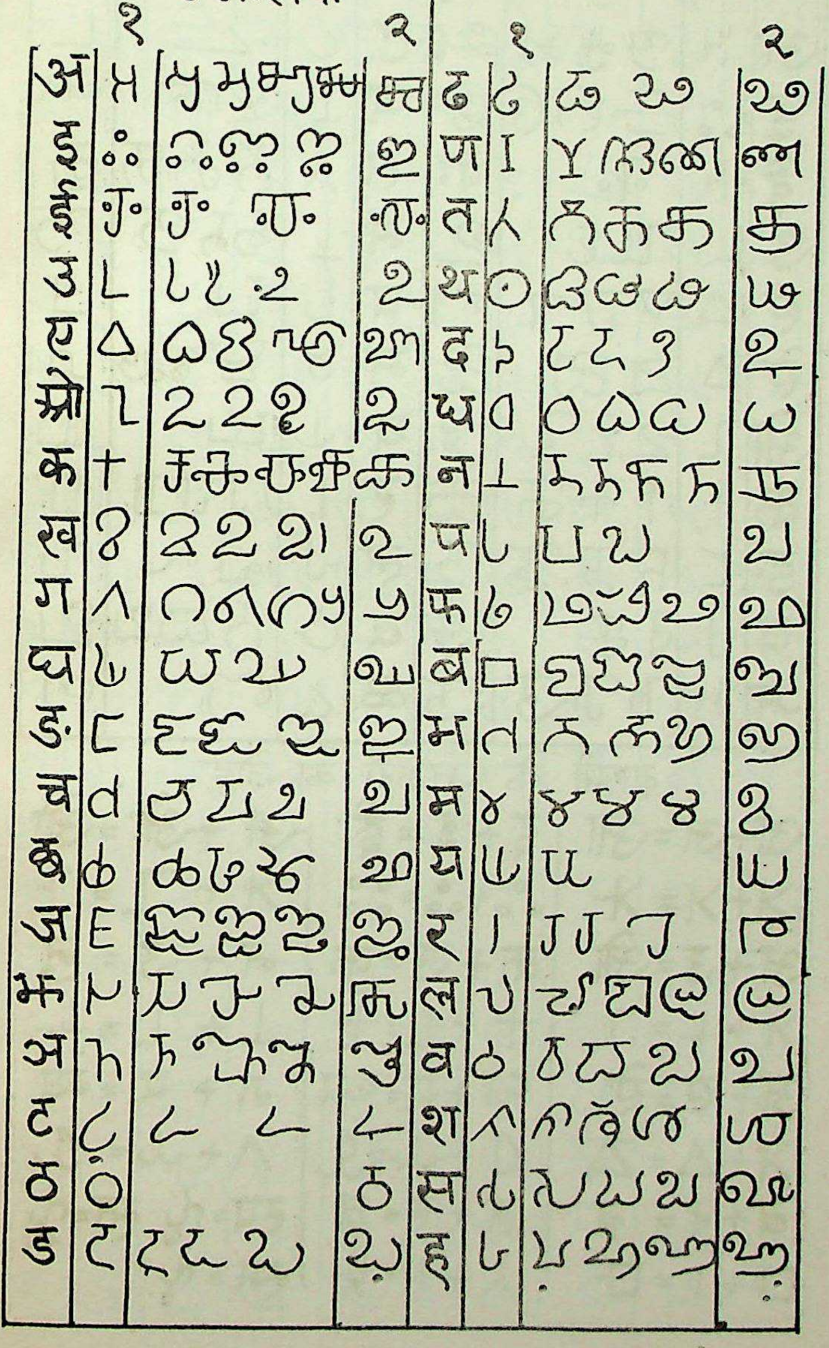

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पत्र तीसवाँ

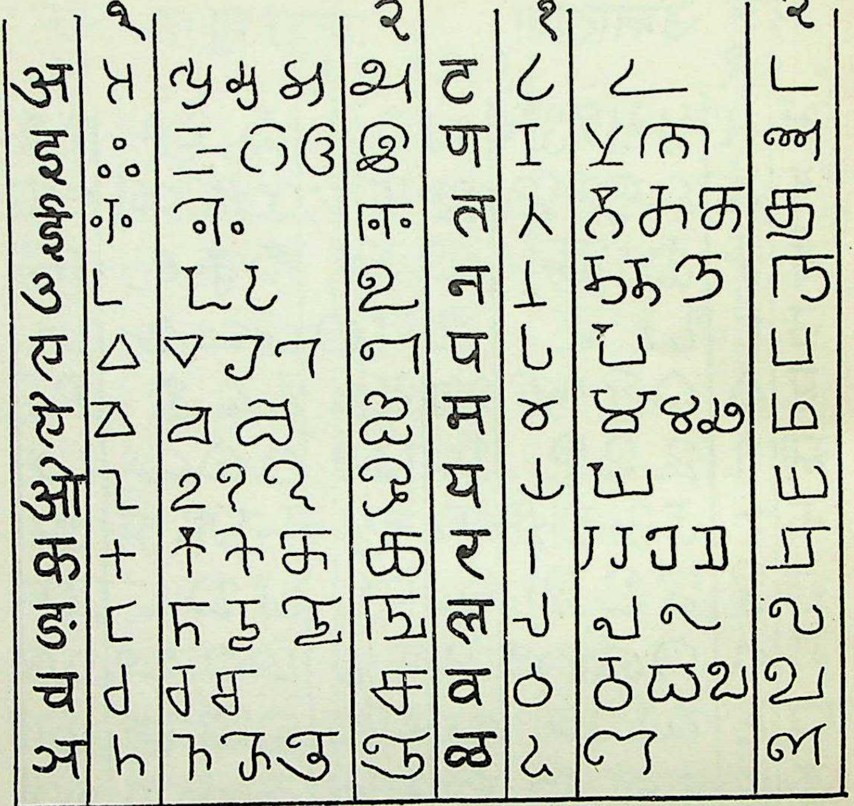

ब्राह्मी के अक्षरों का जोड़

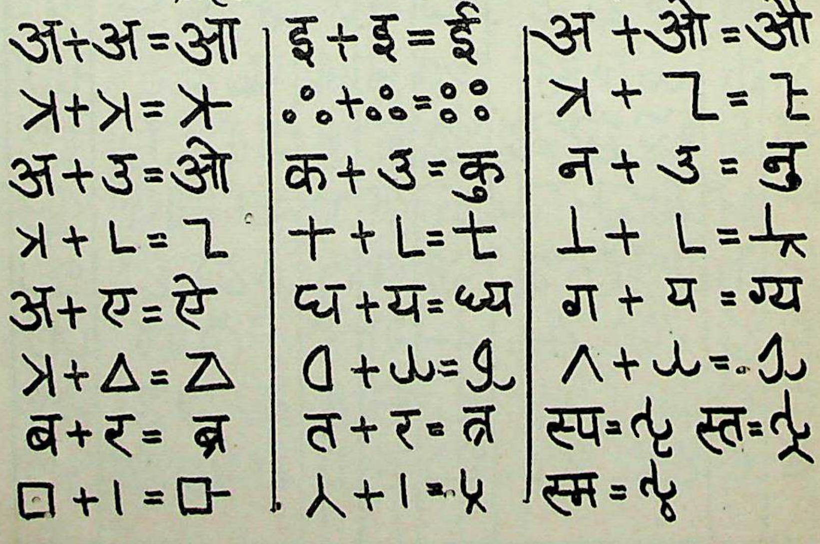

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पत्र इक्कीसवां

	१	२	३	४		१	२	३	४
अ	𑂃	[illegible]	અ	ਅ	ढ	𑂛	[illegible]	ઢ	ਢ
आ	𑂄	[illegible]	[illegible]	ਆ	ण	𑂝	[illegible]	ણ	ਣ
इ	𑂅	[illegible]	ઇ	ਇ	त	𑂞	[illegible]	ત	ਤ
ई	𑂆	[illegible]	ઈ	ਈ	थ	𑂟	[illegible]	થ	ਥ
उ	𑂇	[illegible]	ઉ	ਉ	द	𑂠	[illegible]	દ	ਦ
ऊ	𑂈	[illegible]	ઊ	ਊ	ध	𑂡	[illegible]	ધ	ਧ
ए	𑂉	[illegible]	એ	ਏ	न	𑂢	[illegible]	ન	ਨ
ऐ	𑂊	[illegible]	ઐ	ਐ	प	𑂣	[illegible]	પ	ਪ
ओ	𑂋	[illegible]	ઓ	ਓ	फ	𑂤	[illegible]	ફ	ਫ
क	𑂍	[illegible]	ક	ਕ	ब	𑂥	[illegible]	બ	ਬ
ख	𑂎	[illegible]	ખ	ਖ	भ	𑂦	[illegible]	ભ	ਭ
ग	𑂏	[illegible]	ગ	ਗ	म	𑂧	[illegible]	મ	ਮ
घ	𑂐	[illegible]	ઘ	ਘ	य	𑂨	[illegible]	ય	ਯ
च	𑂒	[illegible]	ચ	ਚ	र	𑂩	[illegible]	ર	ਰ
छ	𑂓	[illegible]	છ	ਛ	ल	𑂪	[illegible]	લ	ਲ
ज	𑂔	[illegible]	જ	ਜ	व	𑂫	[illegible]	વ	ਵ
झ	𑂕	[illegible]	ઝ	ਝ	श	𑂬	[illegible]	શ	ਸ਼
ट	𑂗	[illegible]	ટ	ਟ	ष	𑂭	[illegible]		
ठ	𑂘	[illegible]	ઠ	ਠ	स	𑂮	[illegible]	સ	ਸ
ड	𑂙	[illegible]	ડ	ਡ	ह	𑂯	[illegible]	હ	ਹ

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

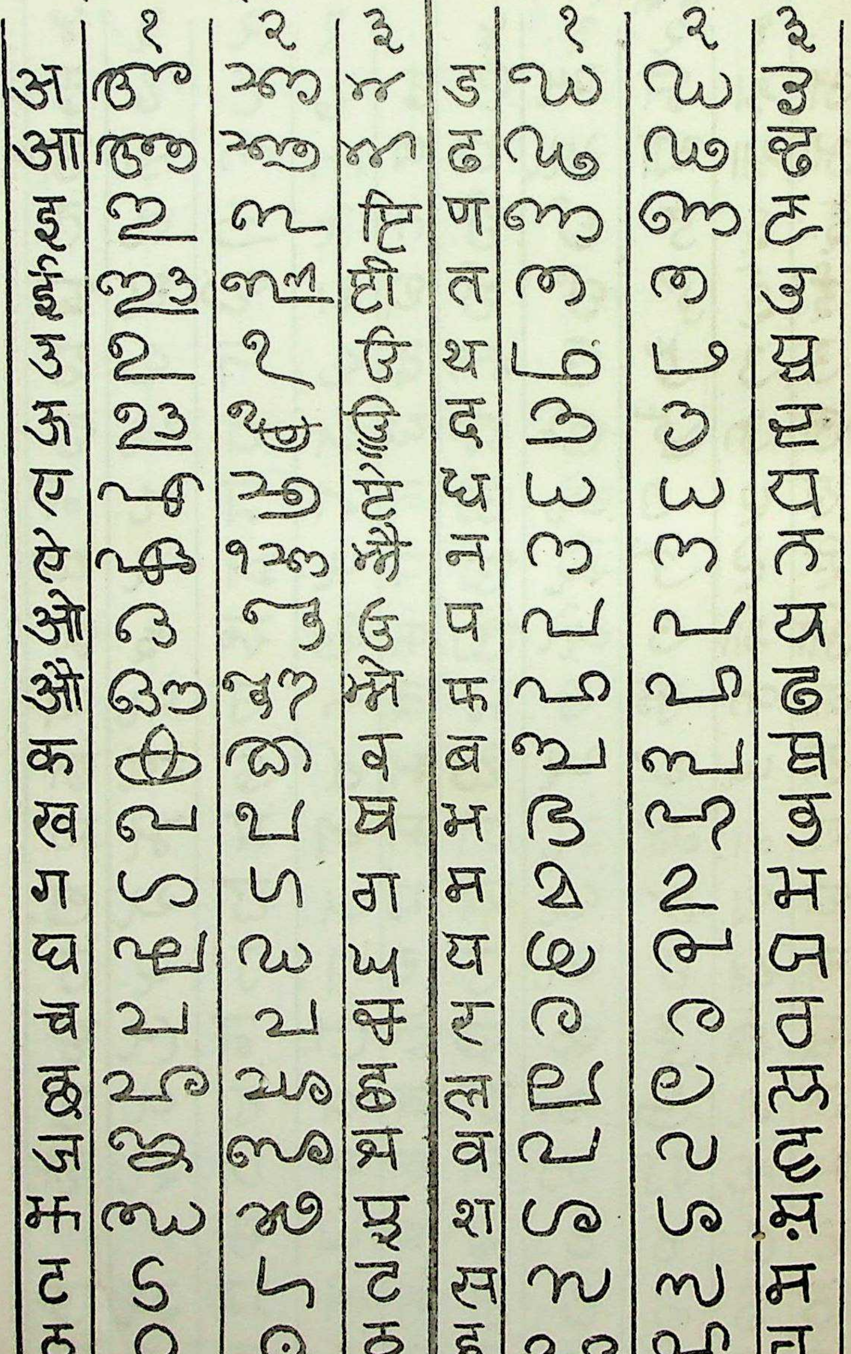

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पत्र तेइसवाँ

	१	२	३		१	२	३		१	२	३
अ	ا	m	ا								
ब	ٻ	ھ	ب	ध	ڌ	ڪ		ल	ل		ل
व़	ٻ	ω		ड	ڏ		ڈ	स	س		س
प	پ	ٹ	پ	ड	ڊ	၉		श	ش		ش
म	ڀ		ٻ	ढ	ڍ	၉		व	و	०	و
त	ت	٩	ت	ह	ح		ح	क़	ق		ق
ठ	ٺ			ज	ج	ω	ج	स	ص		ص
ट	ٽ	ب	ط	ज़	ڄ			ज़	ض		ض
स	ث			ङ	ڃ	2:		ण	ڻ		
थ	ٿ	ω		च	چ	v	چ	त	ط		ط
फ	ڦ	^		छ	ڇ	၉		ज़	ظ		ظ
फ़	ف		ف	ख़	خ		خ	ह	ه		ه
ग	گ	٩	گ	ए	ع		ع	भ	ھ		ھ
ग़	ڳ			ग़	غ		غ	क	ک	m	ک
अ	ڱ			र	ر	|||	ر	ये	ي		ي
ख	ک	V		ज़	ز		ز	ये			ی
य	ڏ			ड़	ڙ		ڑ	ये			ے
द	د	۲	د	म	م	ၯ	م	इ	की मात्रा		ِ
ज़	ذ		ذ	न	ن	ں	ن	उ	की मात्रा		ُ

पत्र: चौबीसवां

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(१)

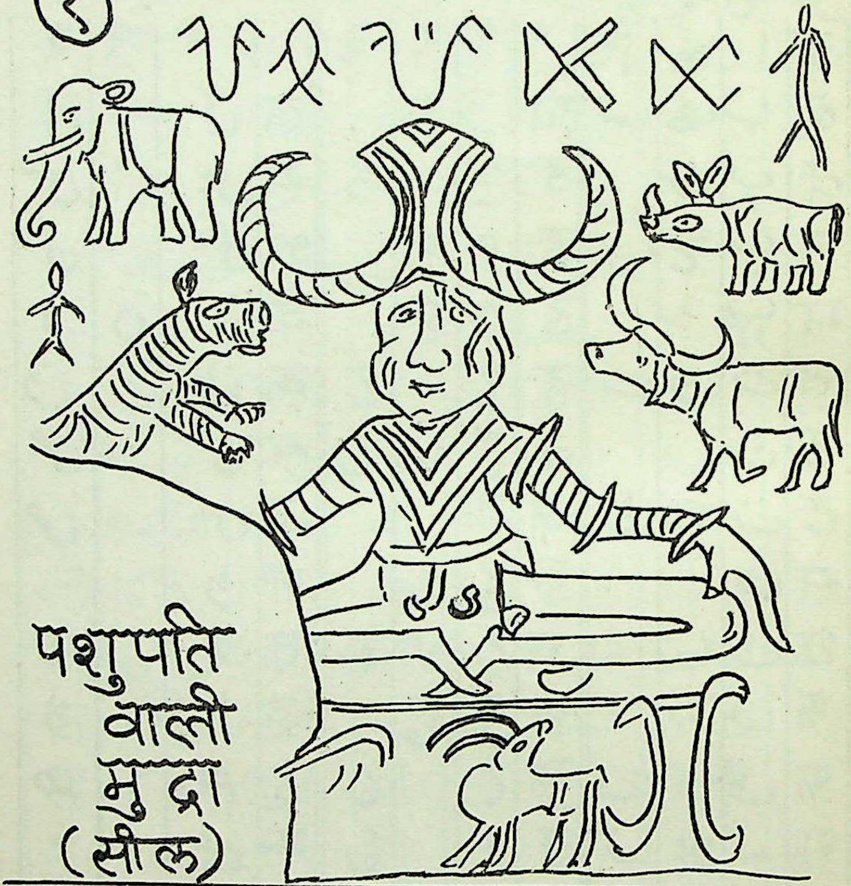

पशुपति वाली मुद्रा (सील)

(२)

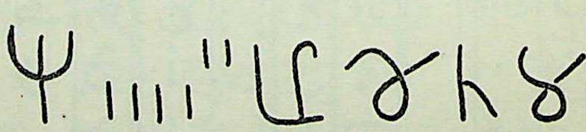

(३)

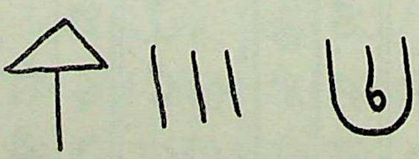

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पत्र पच्चीसवाँ

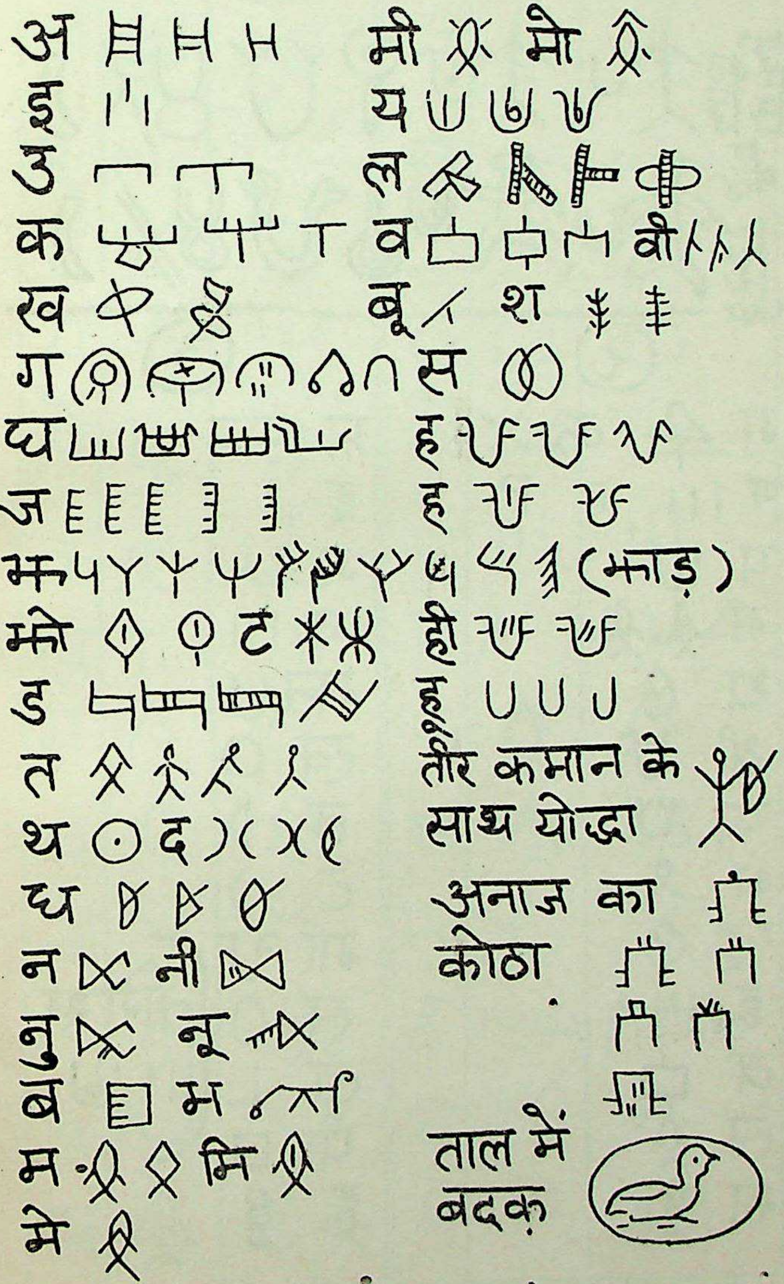

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पत्र छब्बीसवां

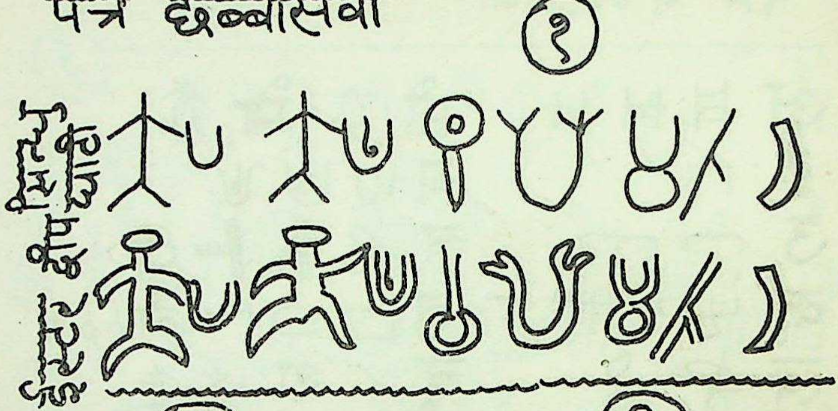

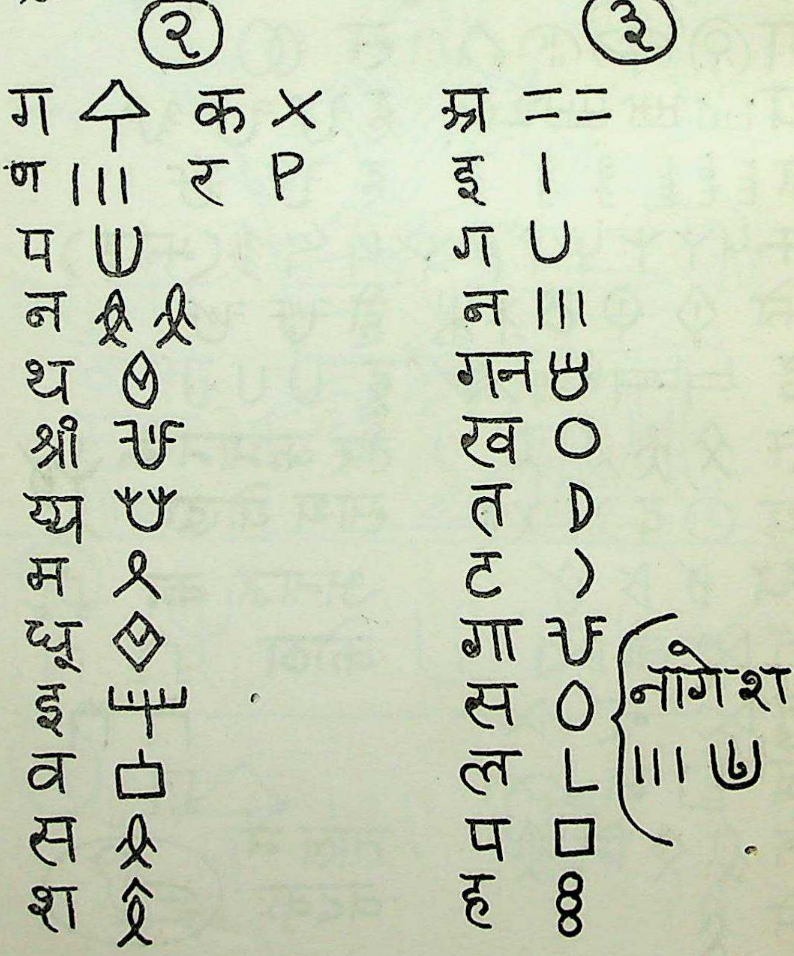

CC-0. Agamnigam Digital Preseyation Foundation, Chandigarh

पत्र सत्ताईसवां

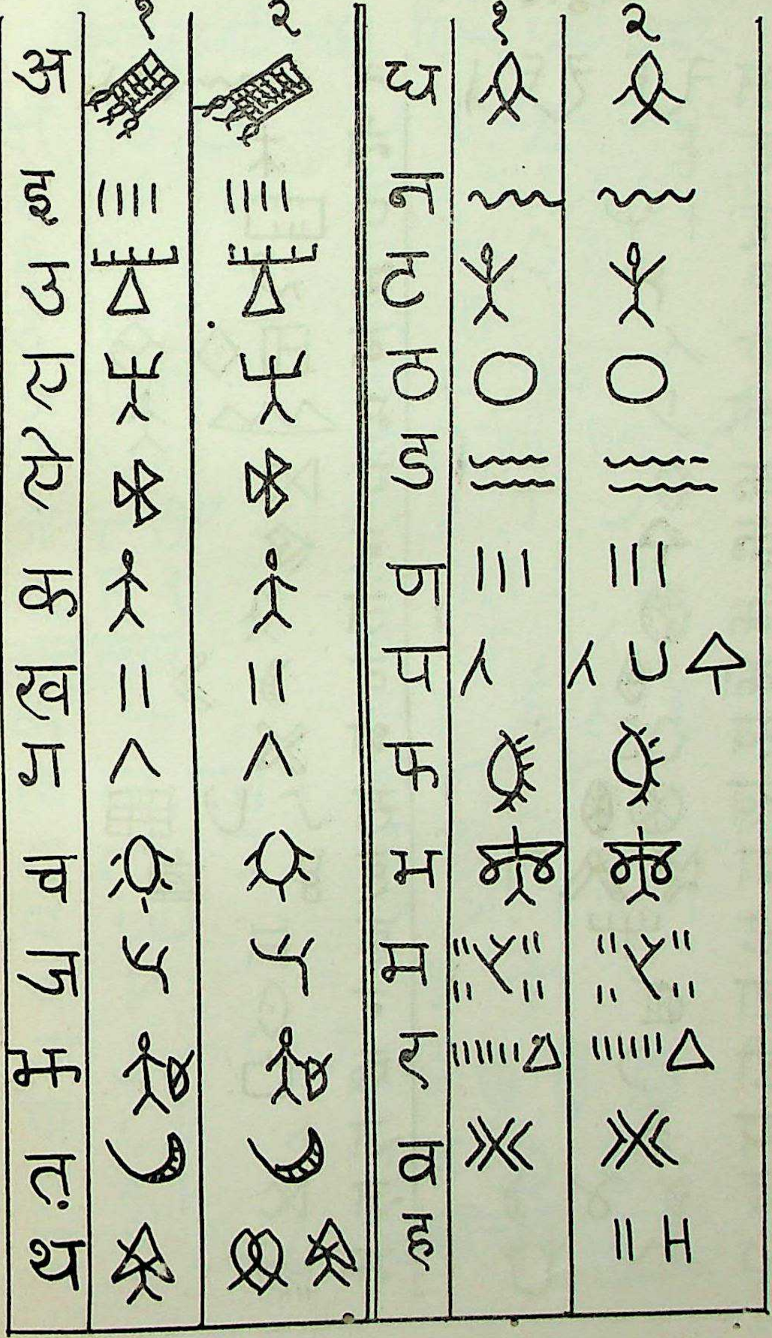

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पत्र अट्ठाइसवाँ

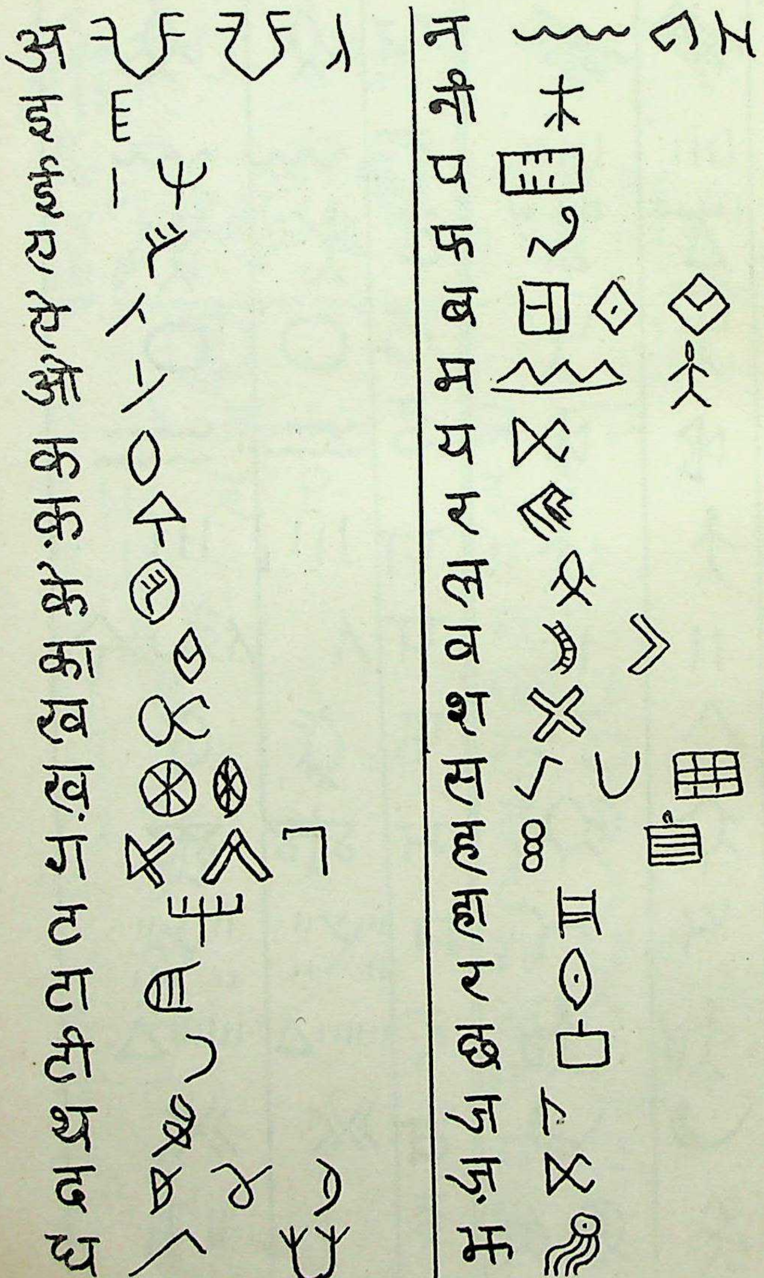

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सिन्धु घाटी अक्षर सिन्धु घाटी अक्षर

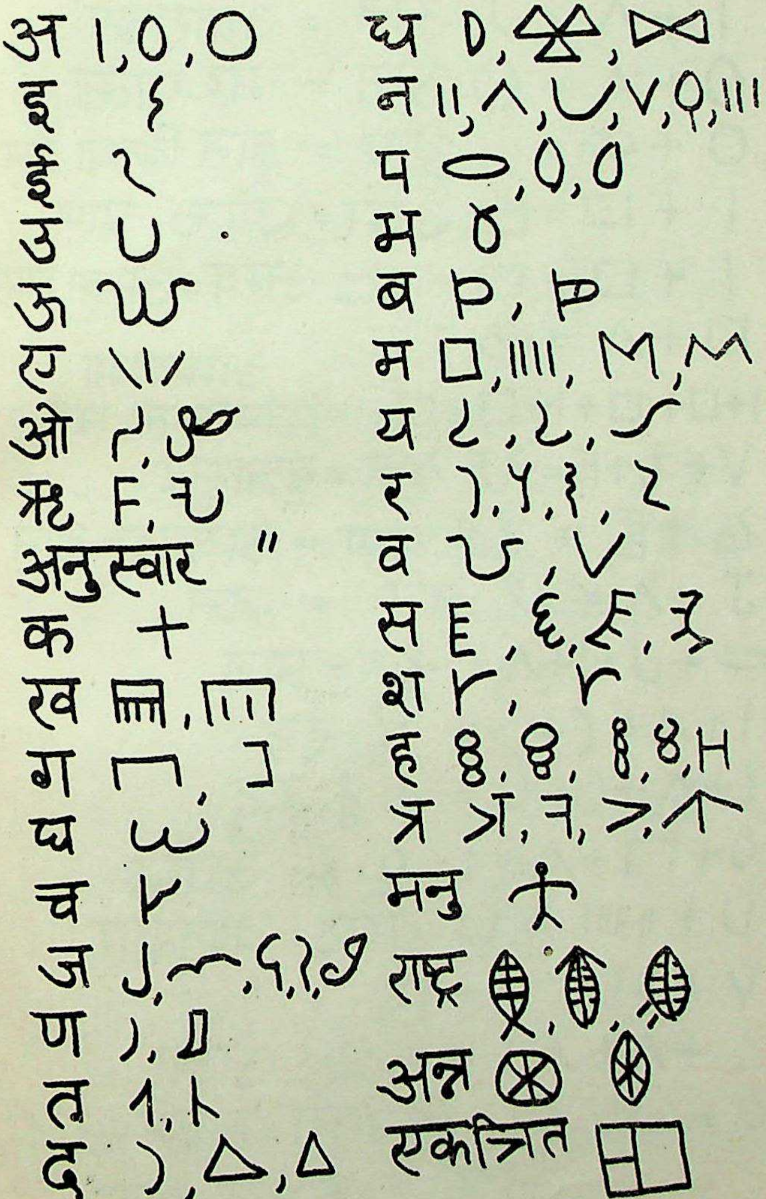

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पत्र तीसवां

| + Λ = अन = अंतरात्मा

O + Λ = अन = मध्यात्मा

O + ⬭ = अप = ज्ञान क्रिया जल

| + □ = 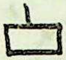 अम = ज्येष्ठ प्राण

| + □ + □ = 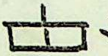 अम्म = अम्बा माता

□ + Λ = 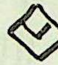 मन

|+□+□+|+□+□+| = अम्मा म्मा माता मही

V + २ + F = वृत्र = वृत्रासुर

ठ + E = यश = प्रकाश = ज्ञान

J + Λ = जन = जन

⬭ + J + | + Λ = = प्राण

| + Λ + (+ > = इंद्र

| + Λ + (+ U = इन्दु

O + ⊓ + Λ + | = अग्नि

U + || |||| = वषट् = वषट्कार

V + ||| = वं = उम्

| + Λ + Λ + || = अन्ना

O + Λ + Λ + | = अन्ना = सूक्ष्म अन्न

अन्नः = स्थूल अन्न

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पत्र इकत्तीसवां

E + U = सू

O + U + III = ⓤ + III = ओ३म

V + > + V + Λ = ≫≪ वरूण

E + E = सस = शश

(+ I +) + Λ = दारन = विदारन

I + E + V = 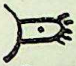 = अश्व

E + III = शं = शान्ति

I +) + I = I Ƴ = इरा = इड़ा

8 + I + Λ + D + U = हिंध्धु = सिन्धु

D + I + Λ + U = = धेनु

Ψ + Λ = ज्ञान

II + Ψ + II = ज्ञान

I + Λ + (+ > + D + I = = इंद्रधा

U + III + I = UIIII = उमा

U + ☐ + I = = उमा

लिपि - द्वय = = VII

लिपि - त्रय = 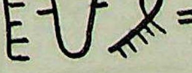 = VIII = ⊙⊙⊙

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चिन्ह 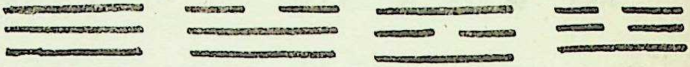

शब्द	कान	तिन	ली	चेन
अर्थ	स्वर्ग	तुलना	पानी	गड़गड़ाहट

चिन्ह 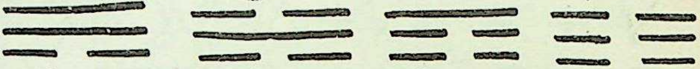

शब्द	शू	कान	केन	कुन
अर्थ	लकड़ी	त्याग	सीमा	पृथ्वी

पक्षी मीन पुत्र फाटक तारा फ़र्सी

शब्द	अर्थ
इंग	= इंगलैन्ड
कुओ	= किंगडम
जेन	= मनुष्य

इन तीन चित्रों के अर्थ हैं- इंगलिशमैन

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पत्र तैंतीसवाँ

(१)

बैल गाय मेढ़ा मेढ़ी रीछ रीछनी हिरन हिरनी

चीनी लिपि की उत्पत्ति (२)

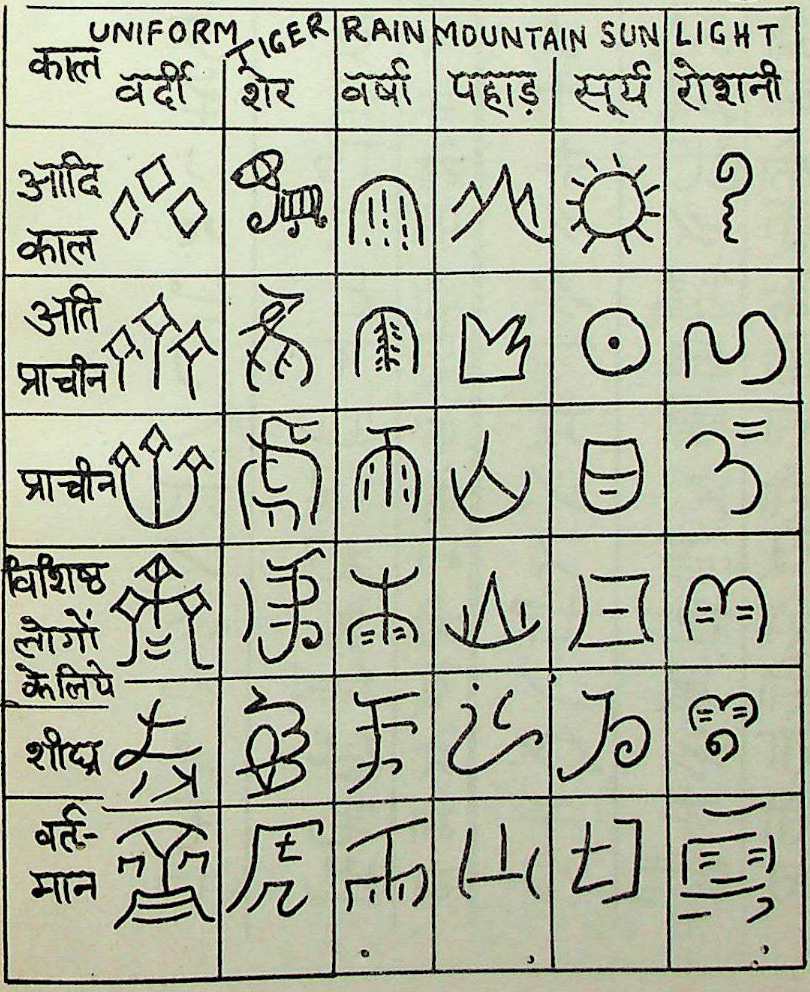

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

	१	२
अ	BOT	P
इ	伊	イ
उ	宇	ウ
ए	江	無
ओ	於	大
का	加	ケ
की	幾	キ
कु	久	〃
के	介	ケ
को	己	コ
सा	散	左
सी	之	シ
सू	寸	ス
से	世	セ
सो	曽	ソ
ता	多	タ
ती	千	チ
तू	川	フ

	१	२
ते	天	テ
तो	右	ト
ना	奈	ナ
नी	仁	ニ
नू	女	ヌ
ने	手	ネ
नो	乃	ノ
फा	八	ハ
फी	上	ヒ
फू	下	フ
फे	山	ヘ
फो	保	ホ
मा	太	ス
मी	美	ミ
मू	年	ム
मे	女	メ
मो	毛	モ
या	也	ヤ

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

१

木	वृक्ष	मू	की
米	चावल	बेई	कोमे
金	धातु	चिन	कोने

२

१	२	३	४	५	६	७
江	नदी					ए
字	दांत					उ
於	अन्दर					ओ
己	स्वयं					को
和	शान्ति					वा

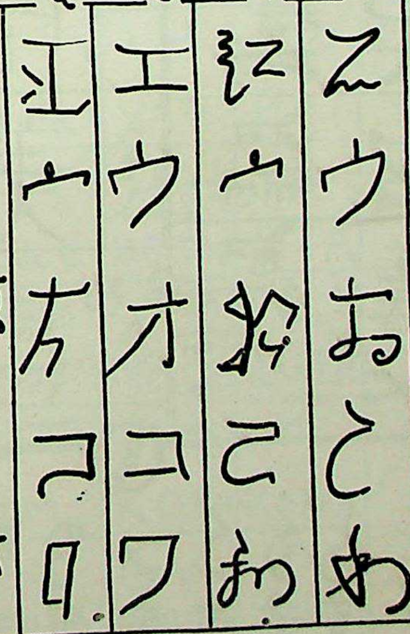

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(१)

OUT DATED				PRESENT	
कताकाना	हीरागाना	उच्चारण	अर्थ	क॰ का॰	ही॰ गा॰
		इमासू	वहां है		
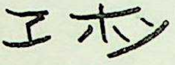	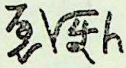	इहोन	चित्र पुस्तक	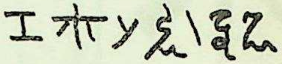	

(२)

२	人	हितो मनुष्य	६	舟	फुन नाव
३	下	शिता नीचे	७	車	कुरुमा पहिया
४	不 天	नू नहीं तेन स्वर्ग	८	門	मोन फाटक
५	玄	जेन काल	९	美	बी सुन्दरता
२३	變	हेन आश्चर्य-जनक	१०	馬	उमा घोड़ा

(३)

अ ए इ ओ ना का पा सा था ला मा

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पत्र सैंतीसवाँ

	१	२	३	४	५	६
अ	बैल	OX	ALEPH	ALPHA		A
ब	घर	HOUSE	BETH	BETA		B
ग	ऊँट	CAMEL	GIMEL	GAMA		G
द	द्वार	DOOR	DALETH	DELTA		D
ए	पकड़ना	WINDOW	YE	EPSILON		E
फ़	हुक	HOOK	VAV	PHI		F
ह	चौहद्दी	FENCE	HETH	ETA		H
इ	हाथ	FORE ARM	YODH	IOTA	I	I
क	हथेली	PALM	KOPH	KAPPA		K
ल	डन्डा	OX-GOAD	LAMED	LAMDA		L

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पत्र अड़तीसवां

	१	२	३	४	५	६
म	पानी	WATER	MEM	M MU		M
न	सांप	FISH	NOON	N NU		N
ओ	आंख	EYE	O AYEN	O OMICORN		O
प	मुंह.	MOUTH	PE	π PE	H	P
क़	गांठ	KNOT	φ QOPH		△	Q
र	सिर	HEAD	RESH	P RHO		R
स	दांत	TEETH	SAGHE	Σ SIGMA	Z	S
त	निशान	MARK	+ TABU	T TAU	Λ	T
उ				ϒ UPSILON		U
ज़	हंसिया	SICKLE	Z ZAIN	Z ZETA		Z

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पत्र उन्तालिसवां

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पत्र चालीसवां

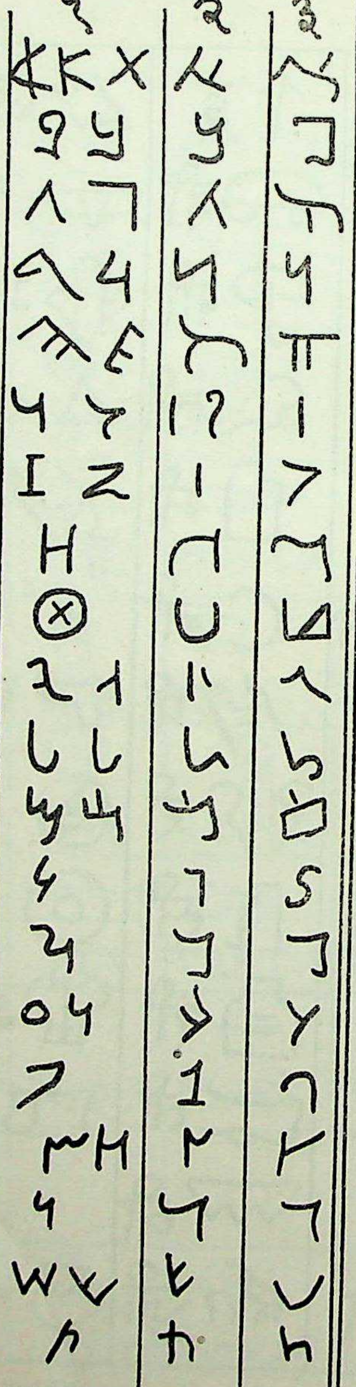

	१	२	३
अ			
ब			
ग			
द			
ह			
व			
ज़			
[illegible]			
ट			
[illegible]			
[illegible]			
म			
न			
स			
ए			
प			
श			
र			
ष			
त			

अंक

तिब्बत		मंगोलिया
चिक		नेरव
	१	
नी		हयुर
	२	
सुं		कोरे
	३	
शा:		तुर
	४	
ण		थाऊ
	५	
टुग		चुरग़ा
	६	
भिम		टोलो
	७	
जे		नैम
	८	
गो		युस
	९	
चुं०		अरऊ
	१०	

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पत्र इकतालीसवां

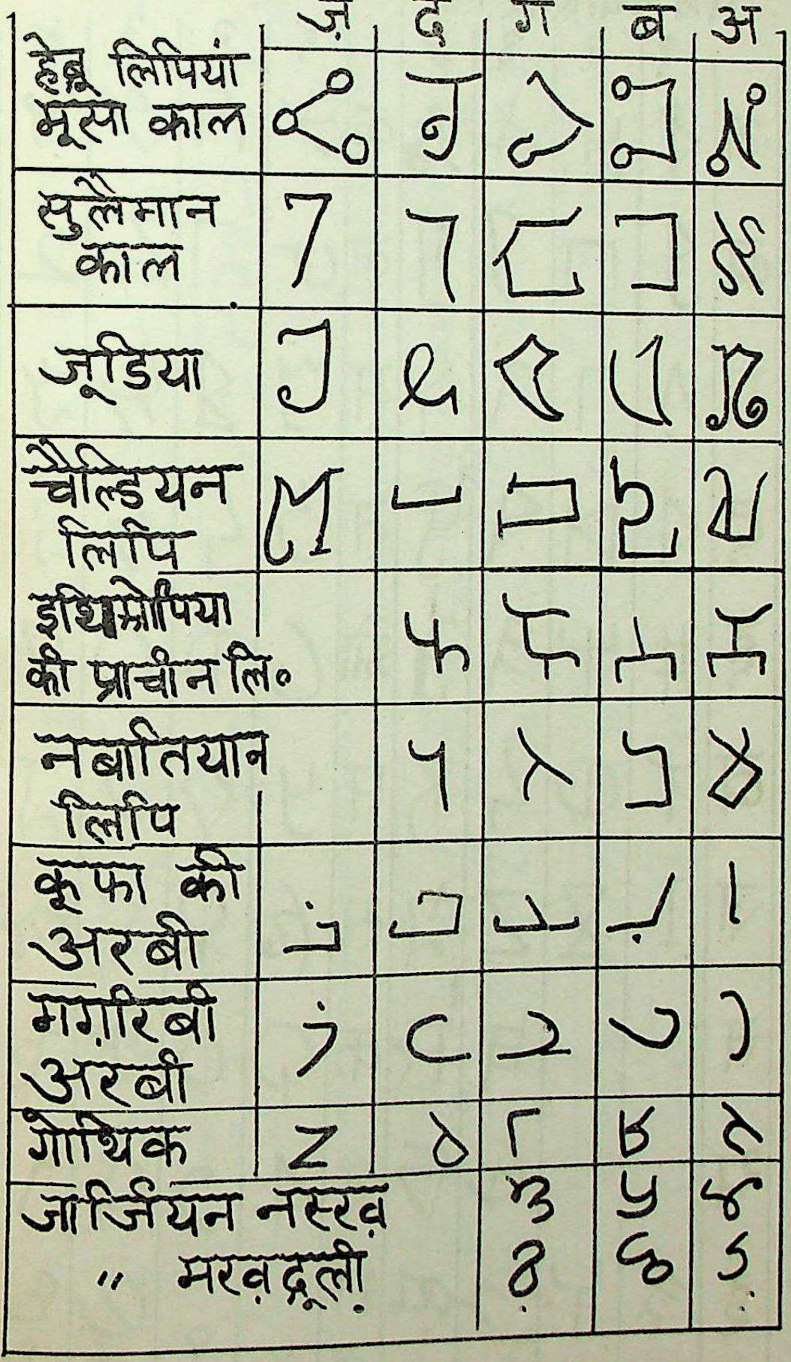

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पत्र ब्यालिसवां

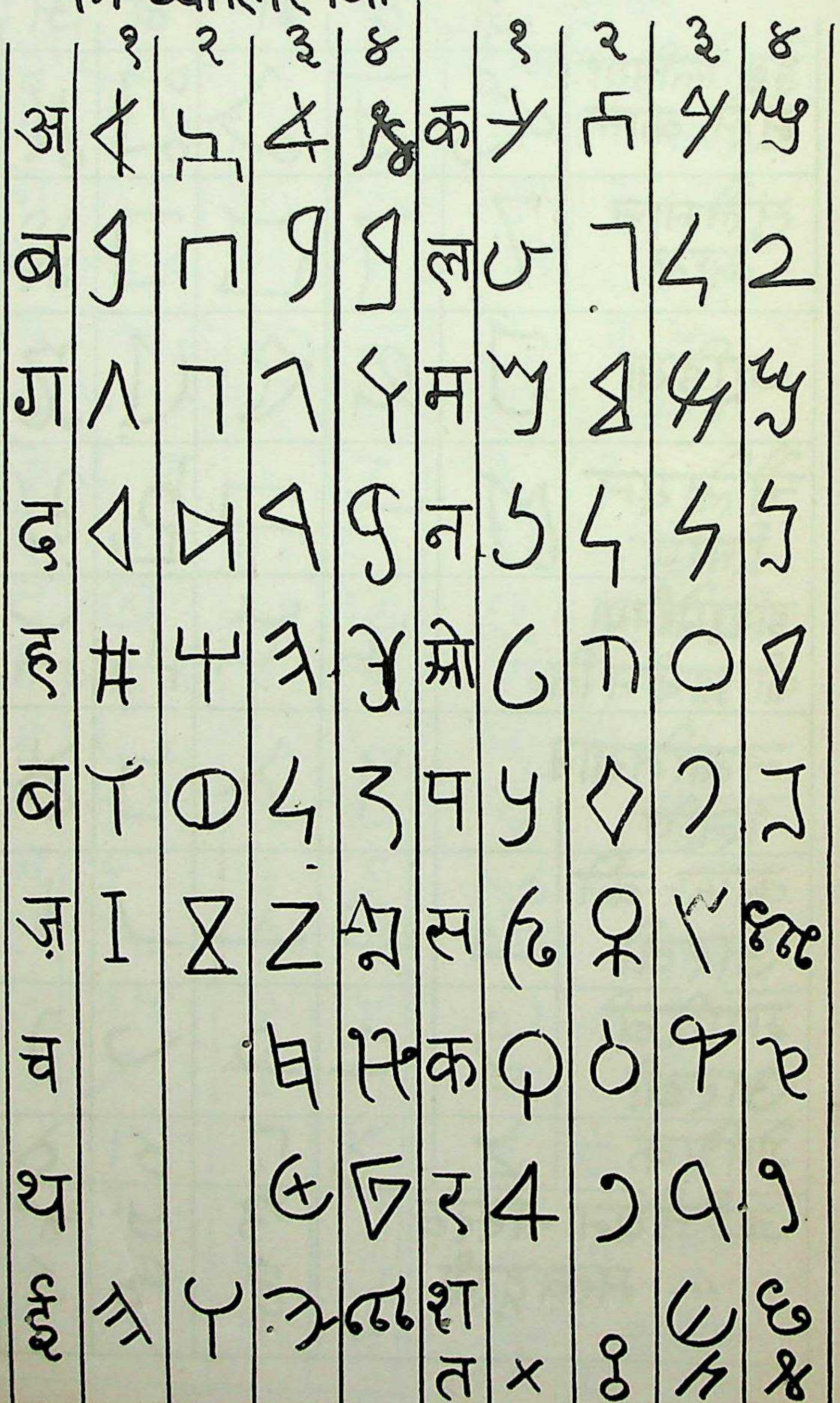

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पत्र तितालिसवां

	अ	ब	ग	द	ज़	स	ह	थ	इ	क	ल	म	न	प	र	ट	व	ज़	श
१	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
२	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

३

अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ए	ऐ	ओ	औ	क	घ	सा	ज	झ	ज़	ट	ड	थ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
द	ध	न	प	फ़	ब	म	य	र	ल	व	व	श	स	स	ह	इपे	ग	
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	

पत्र चवालीसवां   अरबी लिपि की उत्पत्ति

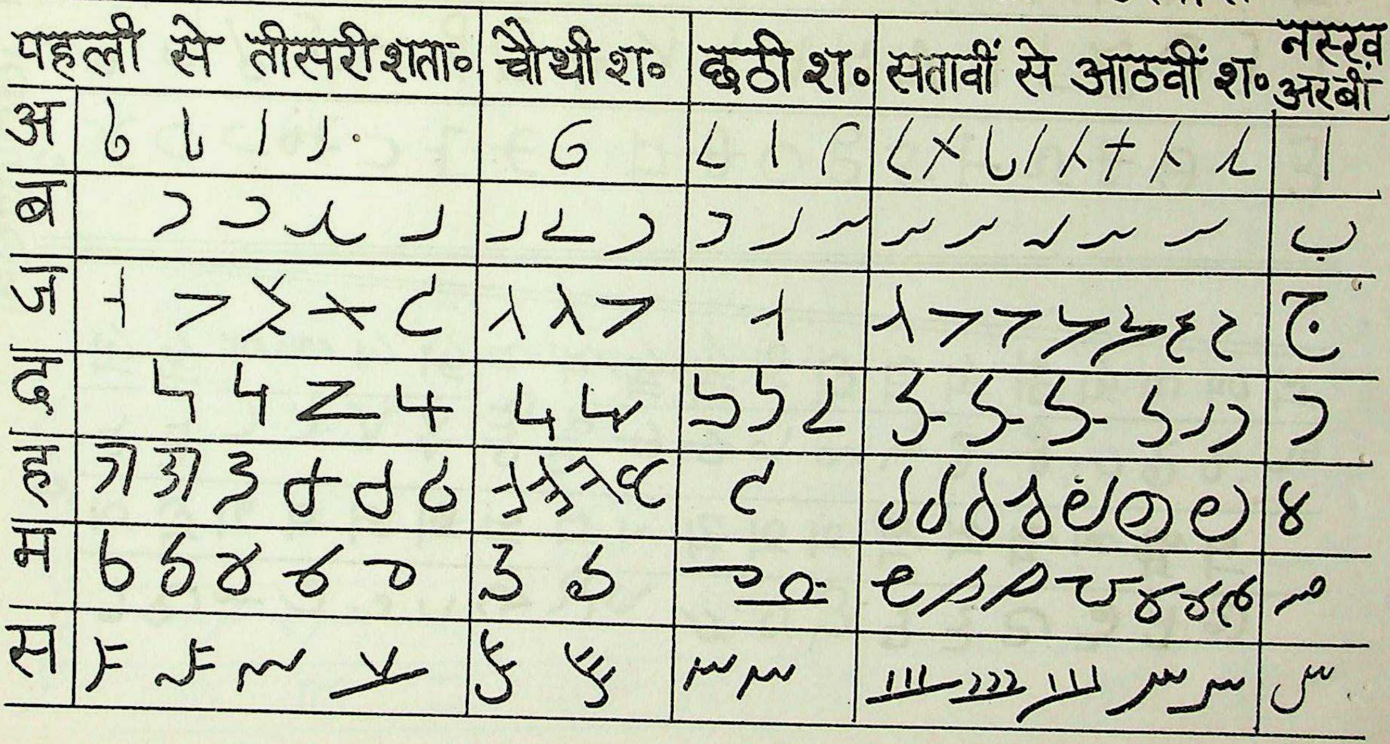

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पत्र पैंतालीसवाँ

(१)

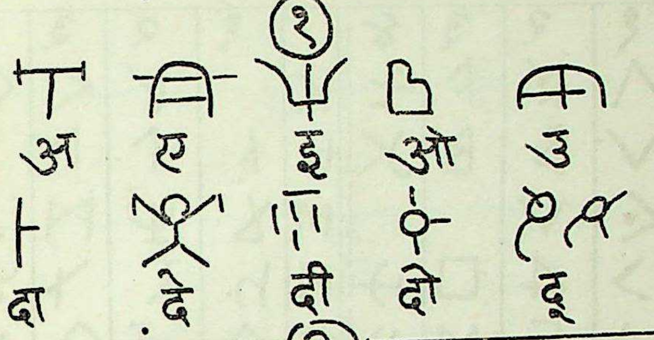

(२)

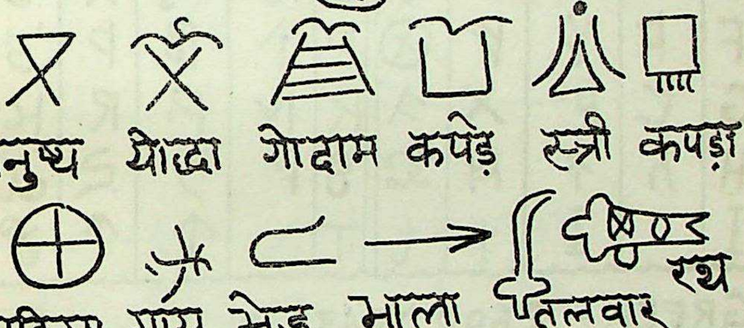

(३)

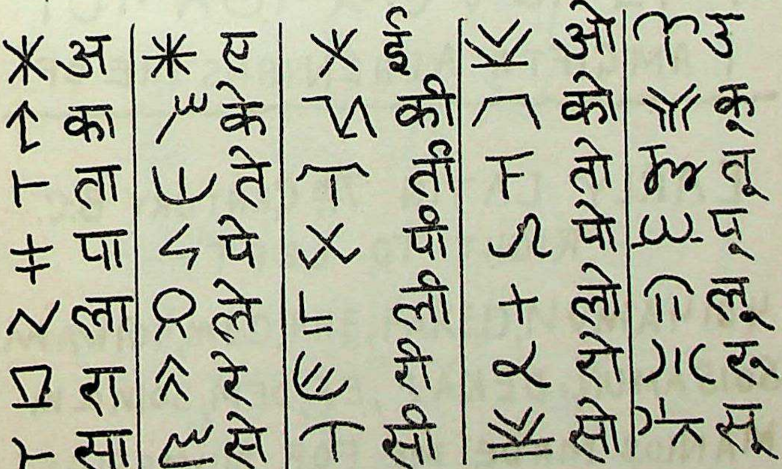

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

GREEK – 2600 YEARS OLD

READING RIGHT TO LEFT

I ΜƎ ΝΟ V ΘƎ ΝΟ Α ΝΟΤ

I AM GIFT A ATHENIANS THE OF

EARLY LATIN 7th CENTURY B.C.

– RIGHT TO LEFT –

4OI4AMVN, DƎKAᖷ, ƎHᖷ, DƎM, 4OINAM

SOISAMUN, DEKAF, EF, DEM, SOInam

MANIOS MADE ME FOR NUMASIOS

पत्र शैलियाँ

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(१)

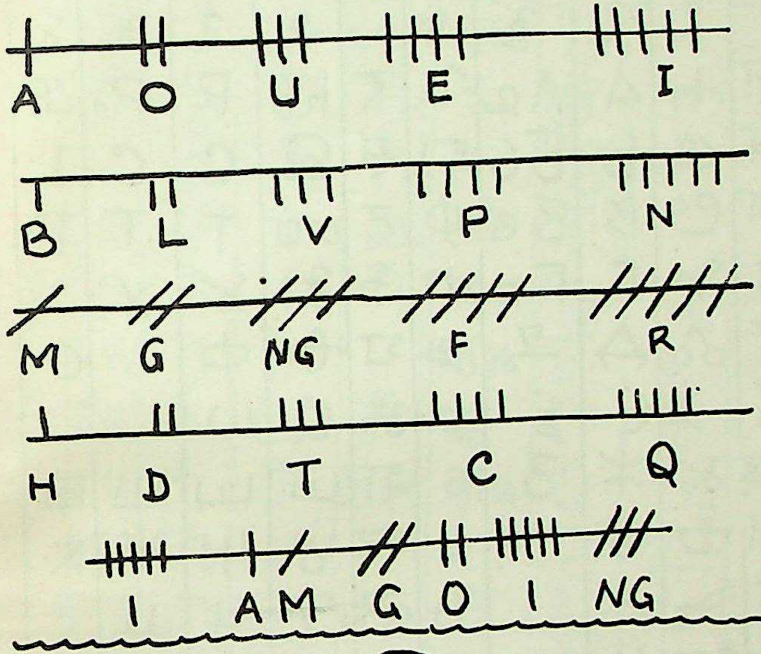

(२)

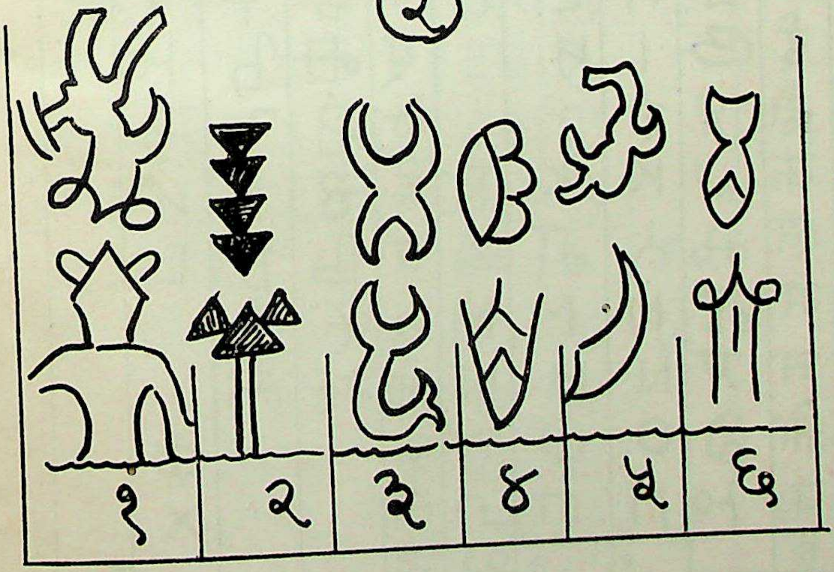

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पत्र अड़तालीसवाँ

	१	२	३	४		१	२	३	४
अ	[illegible]	Δ	Aa	[illegible]	र	hb	P	P	[illegible]
ब	[illegible]	b	Б6	[illegible]	स	[illegible]	C	C	I
व	[illegible]	B	BB	Φ	ट	[illegible]	T	T	[illegible]
ग	[illegible]	Γ	Гг	Л	ऊ	[illegible]	ɣ	Y	
द	[illegible]	Δ	[illegible]	A	थ	[illegible]	Φ		Φ
इ	[illegible]	Є	E		औ	Q	ω		
ज़ह	[illegible]	ж	3		श	Ш	Ш	Ш	Ф
द्ज़	[illegible]	S			श्त	[illegible]	Ч	Ж	Ж
ज़	[illegible]	Z		[illegible]	त्स	V	Ч	Щ	
ए	[illegible]	H	E	Є	च	[illegible]	Y	Ч	[illegible]
[illegible]	[illegible]	I	H		यू	[illegible]	Ъ	Ю	
[illegible]	[illegible]	[illegible]			ऐ	[illegible]	Ђ	Э	
क	[illegible]	K	K	K	ई	8	Ь	К	
ल	[illegible]	ʎ	Л	Λ	ए	[illegible]	Ѣ	E	
म	[illegible]	M	M	M	ये	[illegible]	↑		
न	[illegible]	N	H	N	ओ	[illegible]	[illegible]		
ओ	[illegible]	O	O	[illegible]	फ़			Ф	
प	[illegible]	Π	П	Л	ख			X	
ह				ω	ज़				K

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

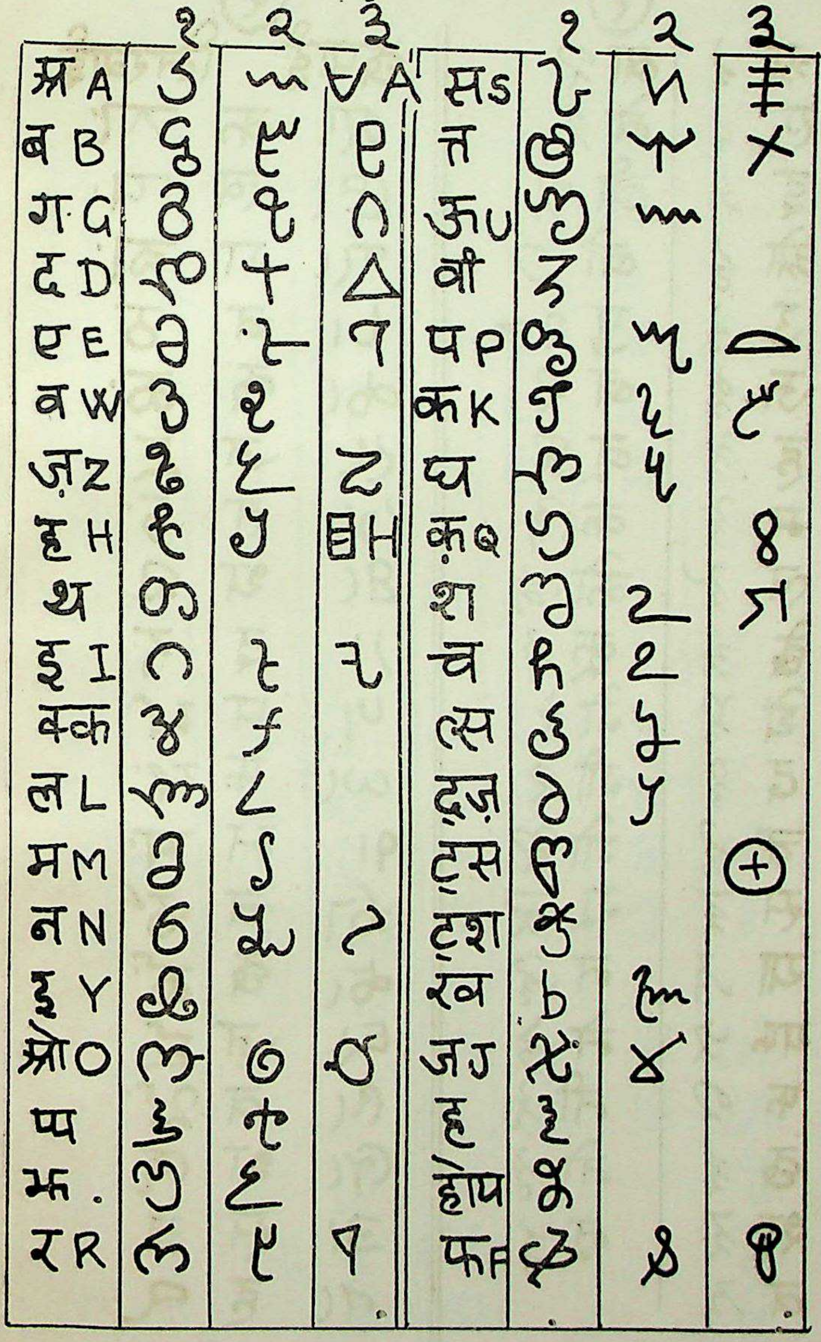

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पत्र पचासवां

(१)

अ ए इ ओ उ ऊ ह म ल छे थे द च स या यफ फ छ श व

बा बे बी बो पु ब बू के को कू गे गी गो गू न ने नी नो नू

(२)

छपाई	लिखाई
क	
ख	
ग	
च	
छ	
ज	
त	
थ	
द	
प	
फ	
म	
च	
छ	
ज़	
व	
श	
स	
ह	

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पत्र इक्यावनवां

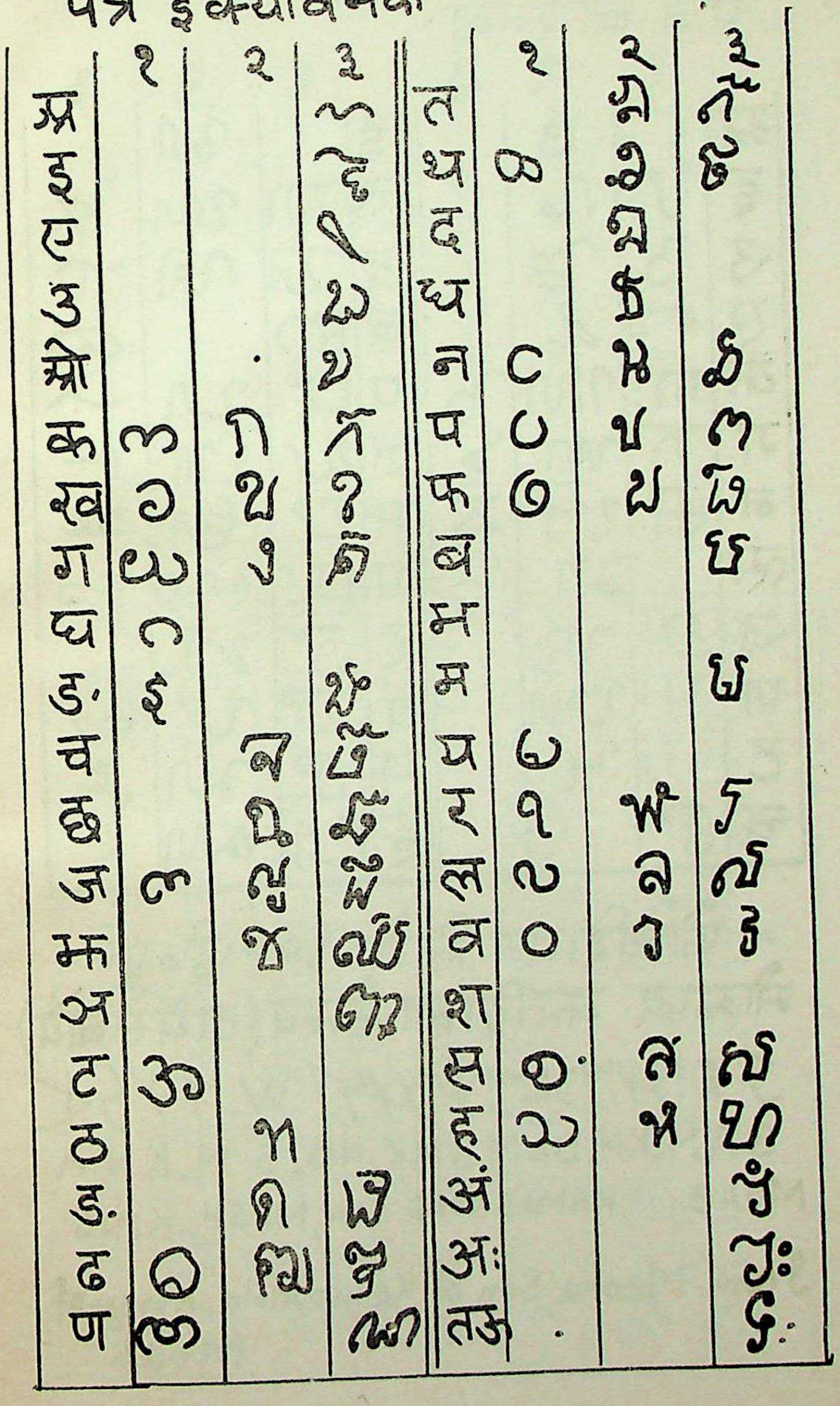

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पत्र बावनवां

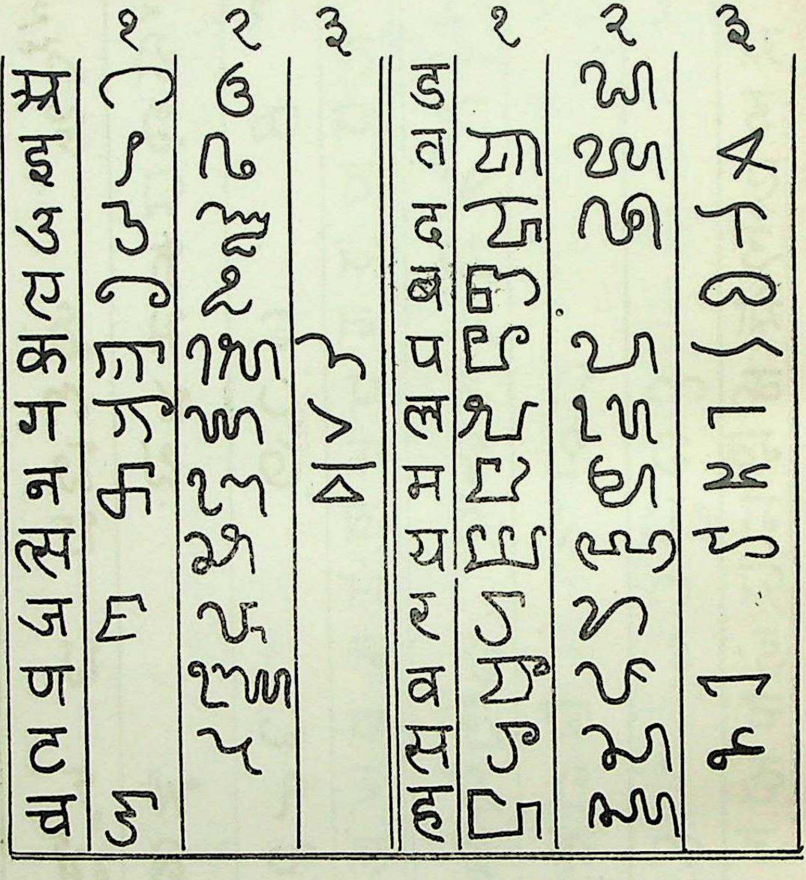

= फोनेशियन लिपि-९०० ई०पू० =

मोआब का शिला लेख (दांयें से बायें)

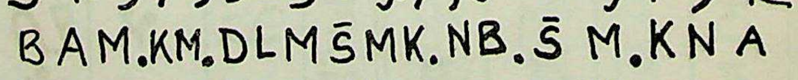

BAM.KM.DLMS̄MK.NB.S̄ M.KNA

MOAB, I, KAMOSHOLD, SON, MESH, KING

I am Mesha, Son of Kamoshold, King of Moab

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पत्र ग्रंथनवी

(१)

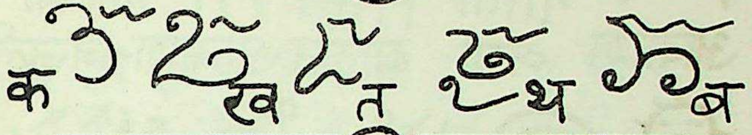

(२)

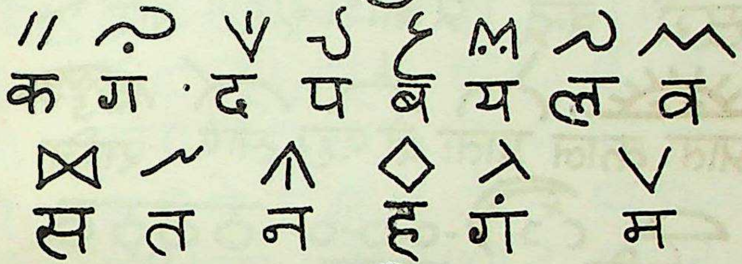

(३)

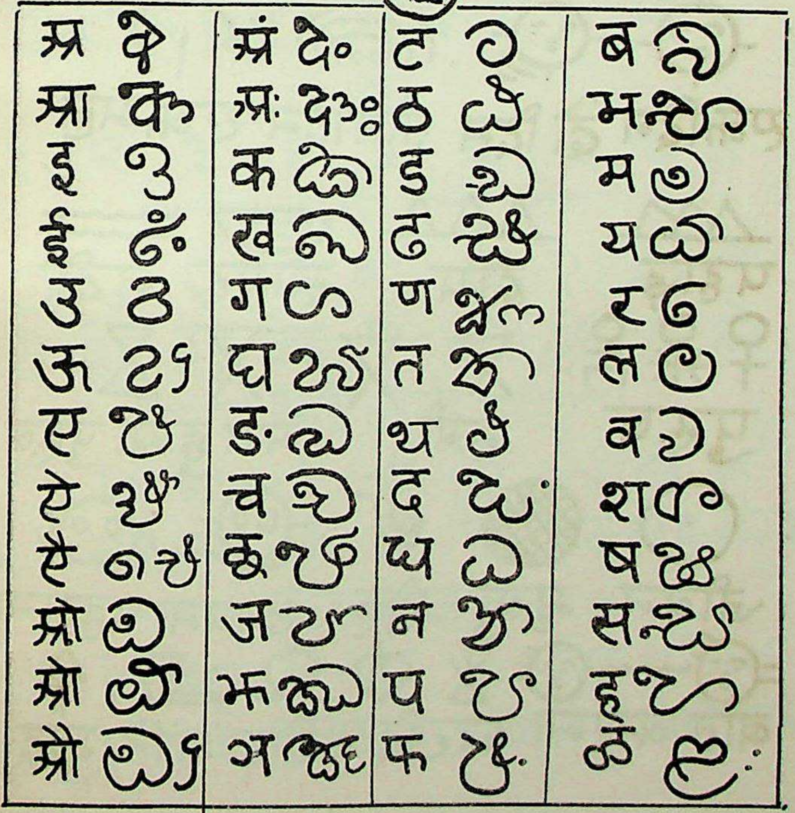

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पत्र चौपनवां

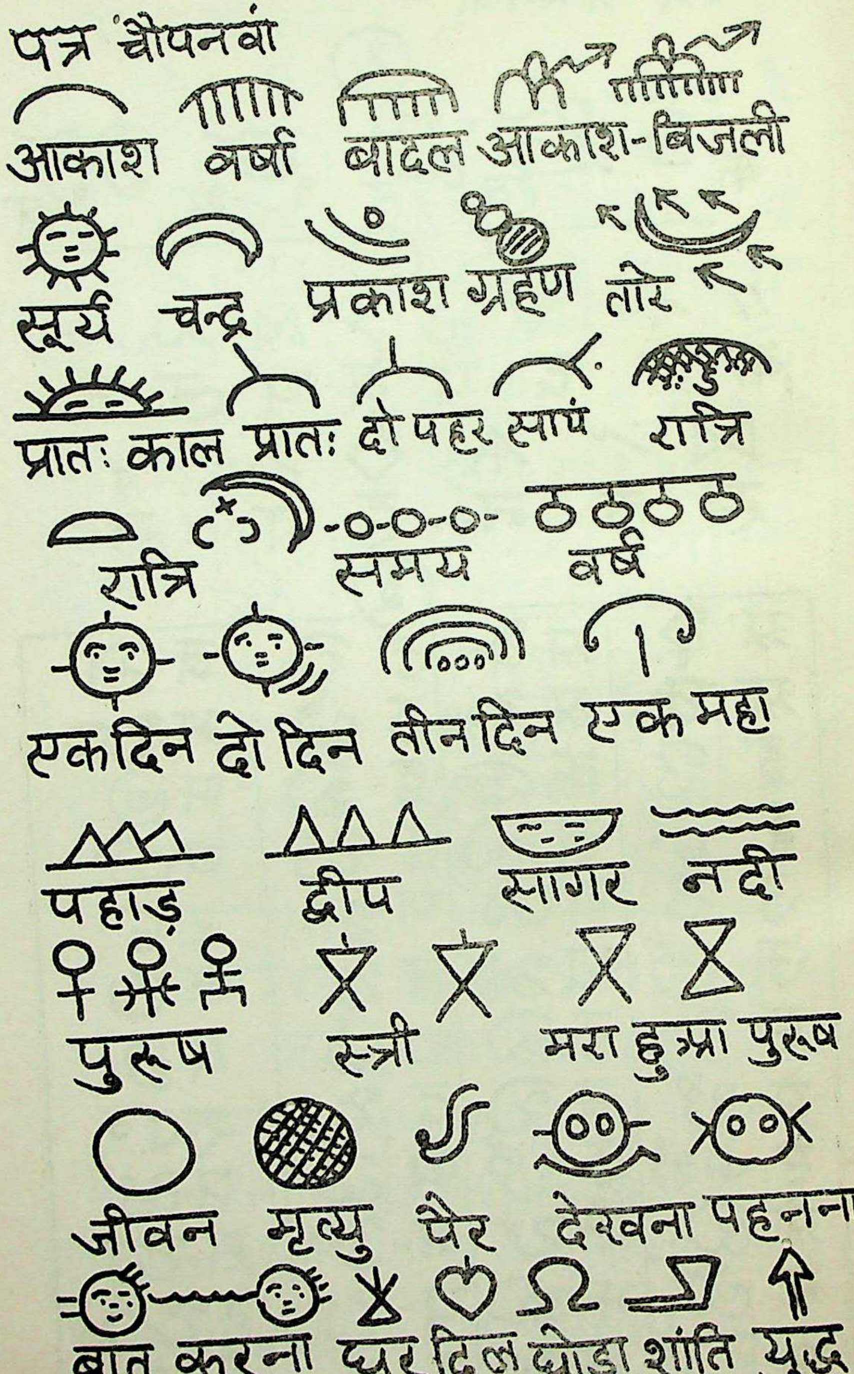

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पत्र पचपनवां

①

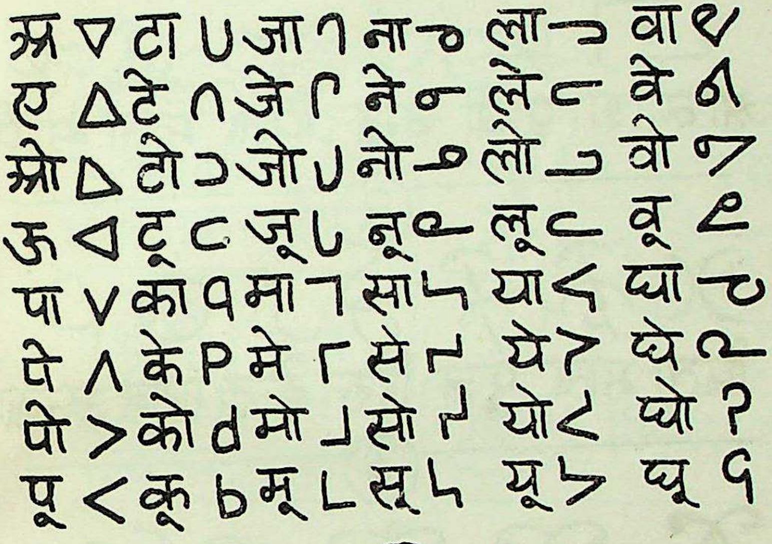

②

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९

बर्मी

၁ ၂ ၃ ၄ ၅ ၆ ၇ ၈ ၉

टै हिने तहू लेह ण छऊ खों शे को

थाई लैन्ड

๑ ๒ ๓ ๔ ๕ ๖ ๗ ๘ ๙

नंग सांग साम सी हां हो चेद पैद काउ

कम्बोज

១ ២ ៣ ៤ ៥ ៦ ៧ ៨ ៩

मुइ पी वई बुन प्राम प्रमेइ प्रांपी प्रांवी प्रम्बू

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पत्र छप्पनवां

(१)

आकाश पृथ्वी चन्द्र पिता माता सूर्य

(२)

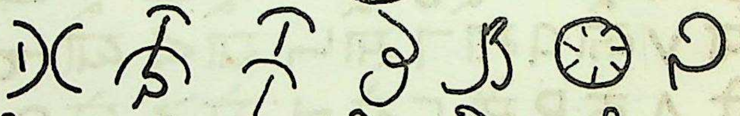

पिता माता पुत्र हिरन छोटा ग़रीब अच्छा

(३)

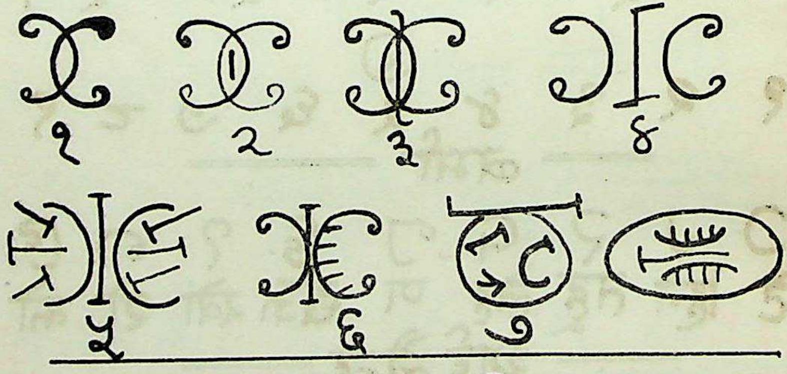

सिनाई की प्राचीन लिपि

म ह (देवता) ब पत ·

मोहब्बत = प्रेम, देवतासे

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पत्र सत्तावनवाँ

①

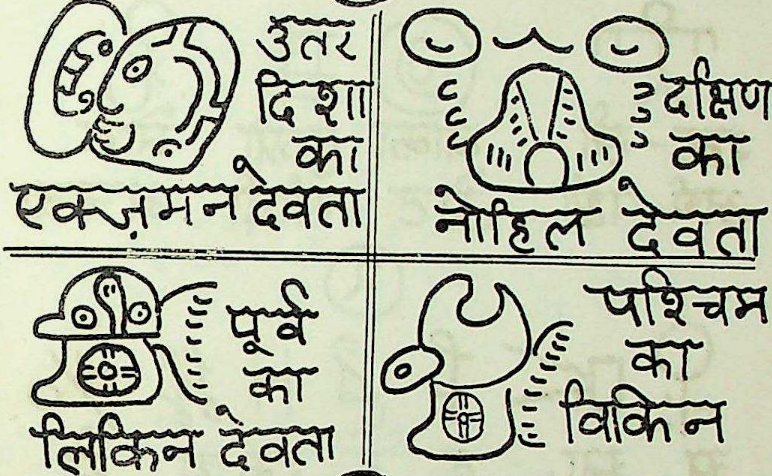

②

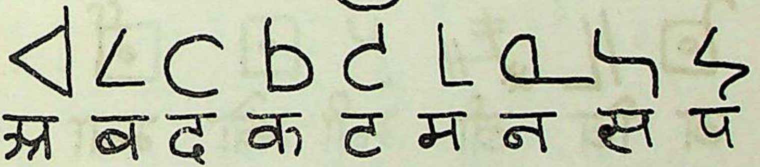

③

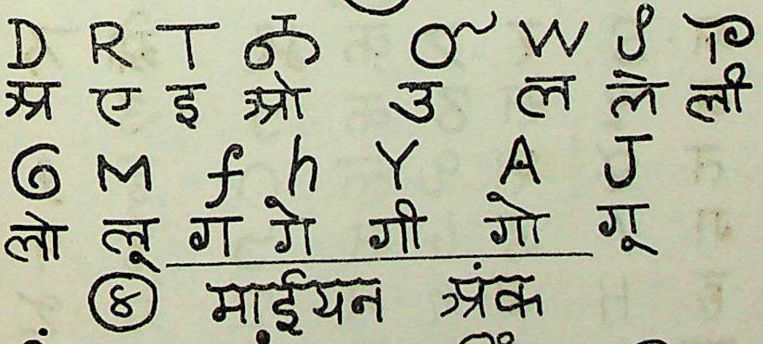

④ माईयन अंक

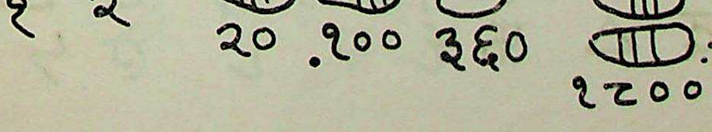

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पत्र अट्ठावनवां

(१)

शब्द - सी बाका कुम्भो मोन

अर्थ - पक्षी स्लेट सीढ़ी बच्चा

(२)

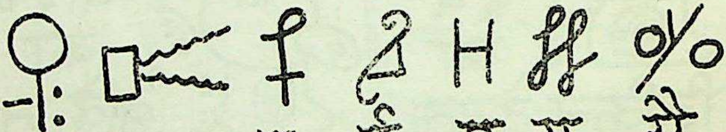

अ आ इ ई ऊ ए ऐ

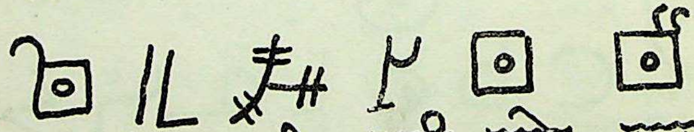

ब बि बी म्बी म्बो म्बा

(३)

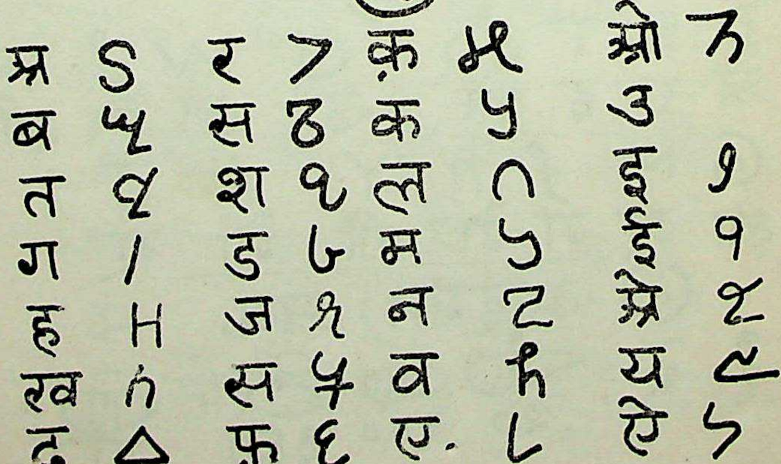

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पत्र उनसठवां

A B C D E F G H I J

K L M N O P Q R S T

U V W X Y Z ब्रेल की छै बिन्दी

अ आ इ ई उ ऊ ए ऐ ओ औ

क ख ग घ ङ च छ ज झ ञ

ट ठ ड ढ ण त थ द ध न

प फ ब भ म य र ल व

श ष स ह क्ष ज्ञ ड़ ढ़ ऋ अः

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १०

पत्र साठवाँ

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

P	پ	प	\	N	ن	न	⌣
B	ب	ब	\	M	م	म	⌒
CHAY	چ	च	/	L	ل	ल	(
JAY	ج	ज	/	F	ف	फ़	(
K	ک	क	—	GAY	گ	ग	—

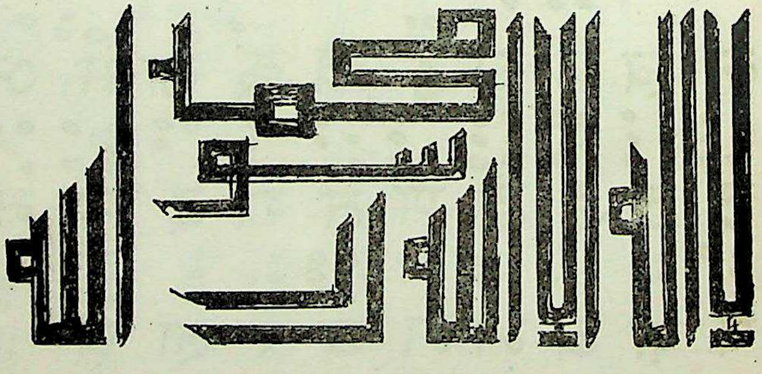

ला इलाहा इल्लल्ला हो

मुहम्मदुर रसूलुल्लाहे

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पत्र इकसठवां

(१)

I have a house in town

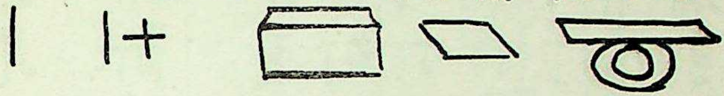

(२)

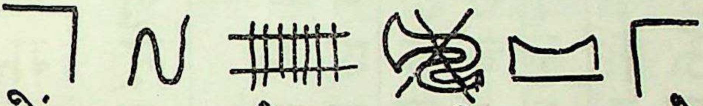

बायें मुड़	डबल घुमाव	रेल फाटक	हार्न वर्जित है	गढ़ा	दायें मुड़

(३)

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९

तेलुगू

౧ ౨ ౩ ౪ ౫ ౬ ౭ ౮ ౯

तामिळ

௧ ௨ ௩ ௪ ௫ ௬ ௭ ௮ ௯

मलयालम

൧ ൨ ൩ ൪ ൫ ൬ ൭ ൮ ൯

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पत्र बासठवां

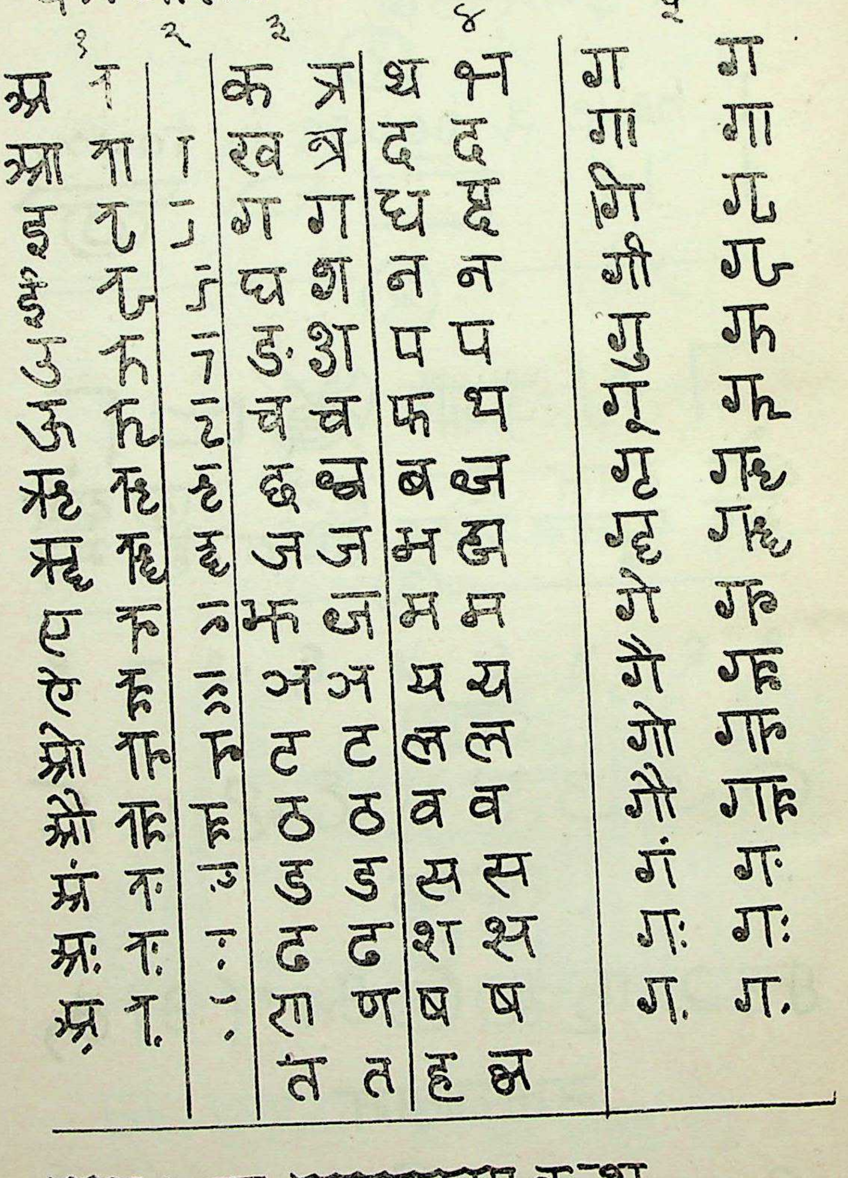

सत्य भक्त, सत्याश्रम , वर्धा

पत्र प्रेषकवां

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(१)

भ भा भीं भी भु भू
अ आ इ ई उ ऊ

भे भै भो भौ भं भः
ए ऐ ओ औ अं अः

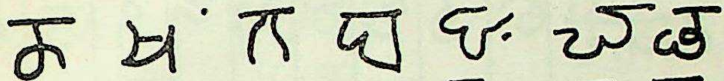

क ख ग घ ङ च छ

(२)

ए ऐ स्रो स्रौ स्रं स्रः
ए ए अप अY अ° अः

— मात्राऐं —

आ = T इ = ٩ ई = ᐁ उ = ७ ऊ = ९
ए = L ऐ = ᒪ ओ = ٩ औ = Y

— अन्य चिन्ह —

क्र = - कृ = ट र्क = C र्कं = C र्कँ = ७

— प्रयोग —

क का क٩ कᐁ क७ क९
कL कᒪ का٩ कY क° कः
कृ (क (क कट क७

[illegible]

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अंक	१	२	३	४	५	६	७	८	९
खरोष्ठी	I	II	III	X	IX	IIX	IIIX	XX	IXX
शारदा	𑇑	𑇒	𑇓	𑇔	𑇕	𑇖	𑇗	𑇘	𑇙
टाकरी	𑛁	𑛂	𑛃	𑛄	𑛅	𑛆	𑛇	𑛈	𑛉
गुरमुखी	੧	੨	੩	੪	੫	੬	੭	੮	੯
कैथी	१	२	३	४	५	६	७	८	९
बंगला	১	২	৩	৪	৫	৬	৭	৮	৯
मैथिल	𑓑	𑓒	𑓓	𑓔	𑓕	𑓖	𑓗	𑓘	𑓙
उड़िया	୧	୨	୩	୪	୫	୬	୭	୮	୯
गुजराती	૧	૨	૩	૪	૫	૬	૭	૮	૯
मोडी	𑙑	𑙒	𑙓	𑙔	𑙕	𑙖	𑙗	𑙘	𑙙

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

Bibliography

1. World's Chief Languages ... Mario A. P. E. I.
2. The Alphabet ... David Diringer.
3. The Alphabet-A Key to the History of Mankind ... " "
4. An Introduction to Comparative Philology ... Pandurang D. Gune.
5. Loom Of The Language ... Bodmer.
6. Beginnings of Writing ... Hoffman.
7. Lost Languages ... P. E. Cleator.
8. Voices in Stone ... Erust Doblhofer.
9. Oxford Junior Encyclopaedia
10. A History Of Writing ... William A. Mason
11. भारतीय प्राचीन लिपि माला ... गौरी शंकर हीराचन्द ओझा
12. The Rise of the North Arabic Script ... Nabia Abbott.
13. Story Of Alphabet ... Edward Clodd.
14. Pictures of Dumb Histories ... Bacon.
15. Writing & Alphabet ... A. C. Moorhouse.
16. Oriental Religions and Their Relation to Universal Religion ... Samuel J. hnson.
17. Pantographia ... Edmund Fry.
18. A study of Writing ... I. J. Gelb.
19. A B C of our Alphabet ... Tommy Thompson.
20. Encyclopaedia Britannica
21. Origin of the Indian Brahama Alphabet ... George Buhler.
22. Mohenjo-daro And Indus Civilization Edited By ... Sir John Marshall.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

Edited by

23. Further Exacavations at Mohenjo-daro ... E. J. H. Mackay.
24. Forgotten Scripts--The Story of their decipherment ... Cyrus S. Jordon.
25. Hittite Hieroglyphic Monuments ... I. J. Gelb.
26. The Script of Harappa and Mohenjo-daro and Its Connections with other Scripts ... G. R. Hunter.
27. Exacavations of Harappa ... M. S. Vats.
28. The Indus People Speak ... Swami Shankaranand.
29. The Vedic Age ... R. C. Majumdar.
30. Indus Script Memo : 1 & 2 ... Sudhansu Kumar Ray.
31. Japanese Dictionary
32. Ganesh Vidya ... L. S. Wakankar.
33. Indian Palaeography ... Raja Bali Pandey.
34. Brahmi Inscription Discovered Outside India ... V. S. Wakankar.
35. The Decipherment of the Inscriptions of Harappa and Mohenjo-daro. Part I ... Pran Nath.
36. सिन्धु घाटी की लिपि में ब्राह्मणों और उपनिषदों के प्रतीक ... डा० फतेह सिंह
37. Egypt ... H. C. Rawlinson
38. A Proposed Decipherment f the Indus Script ... S. Paranavitana.
39. Rigvedic Culture of the Prehistoric Indus Valley (I & II) ... Swami Shankaranand.
40. New Light on Indus Civilisation ... K. N. Shastri.
41. Indus Script Deciphered ... M. V. N. Krishna Rao.
42. Pre-Ashokan Brahmi ... A. B. Walawalkar.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

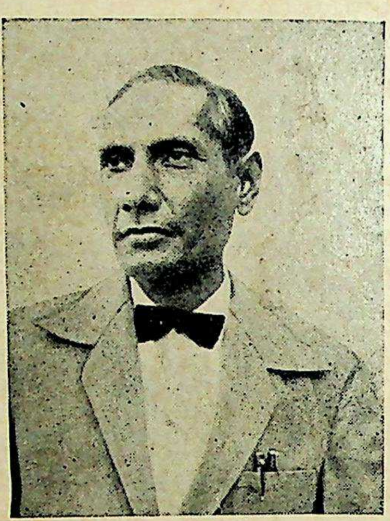

पं० ईश्वर चन्द्र 'राही' का परिचय

आपका जन्म एक मध्यमवर्गीय घर में १५ अगस्त १९१६ को बेहटी के गांव (ज़िला शाहजहांपुर-उ० प्र०) में हुआ। छोटी उम्र में माता-पिता का देहान्त हो गया। बड़ी कठिनता से साधारण शिक्षा पा सके और जीवनोपार्जन के लिये बड़ा संघर्ष किया। फिर भी आपने अभी तक :—

- सारे भारत की यात्रा सायकिल द्वारा की है।
- कई लेख तथा निम्नलिखित पुस्तकें लिखी हैं:—

  १ हमारा भोजन और रोग।
  २ Information World.
  ३ How The Writing Began.
  ४ Ancient Gods & World Creation Stories.
  ५ सेक्स व भ्रूण विज्ञान।
  ६ विश्व के धर्म और मानवता।
  ७ इस्लाम पर एक नज़र।
  ८ विश्व शांति और संहारक शस्त्र।
  ९ सामाजिक पंचशील।

इसके अतिरिक्त आपने १५ वर्ष में यात्रा करके निम्नलिखित संस्थाओं में :—

१ लगभग ५००० हायर सेकन्ड्री स्कूलों में
२ लगभग ६०० कालेजों में।
३ तथा कितने रोटेरी कलबों में, बार एसोसियेशन्स में तथा लायन्स कलब आदि में भाषण दिये हैं।

- अक्टूबर १९६९ में आप विदेश यात्रा पर जा रहे हैं।
- आपने चारों वेद्, रामायण, आठ पुराण, गीता, क़ुरआन मजीद, बाइबिल, बौद्ध-जैन तथा सत्य समाज के दर्शनों का अच्छा अवलोकन किया है।